RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

# सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा



श्री 1008 महामंडलेश्वर
श्री स्वामी रामानंद दासजी महाराज
श्री रामानंद दास अन्नक्षेत्र सेवा ट्रस्ट, तपोवन आश्रम

स्व. पं. पू.1008 श्री रामानन्द जी
तपोवन मंदिर, मोरा गांव, सूरत



वर्ष-13 अंक: 109 ता. 17 अक्टूबर 2024, गुरूवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत ( गुजरात ) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi


## पहला कॉलम

### केंद्रीय कर्मचारियों के बाद किसानों को दीवाली की सौगात.....एमएसपी में बढ़ोत्तरी

**नई दिल्ली ।** बुधवार को मोदी सरकार की कैबिनेट बैठक हुई। बैठक में किसानों के लिए कई फैसले लिये गए हैं। कैबिनेट ने रबी सीजन 2025-26 के लिए एमएसपी को लेकर भी फैसला लिया है। बता दें कि कैबिनेट ने 6 फसलों के लिए एमएसपी बढ़ाने की मंजूरी दी है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट बैठक में लिए गए फैसलों की जानकारी देकर कहा कि फसलों की एमएसपी पर 300 रुपये प्रति क्विंटल तक का इजाफा किया है। वहीं फसलों की मार्जिन लागत में भी 50 फीसदी का इजाफा किया गया।

**फसल — कितनी बढ़ी एमएसपी**

- गेहूं 2425 रुपये प्रति क्विंटल
- जौ 130 रुपये प्रति क्विंटल
- चना 210 रुपये प्रति क्विंटल
- मसूर 275 रुपये प्रति क्विंटल
- सरसों 300 रुपये प्रति क्विंटल
- कुसुंभ 140 रुपये प्रति क्विंटल

### झारखंड के 55 नाम फाइनल.....बीजेपी कभी भी कर सकती हैं ऐलान

**नई दिल्ली ।** भारतीय चुनाव आयोग के द्वारा झारखंड विधानसभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद सभी पार्टियां चुनावी मोड में है। उम्मीदवारों के नाम को लेकर चर्चा गर्म है। सभी पार्टियों में उम्मीदवारों के नाम फाइनल करने में जुटी हैं। इसी बीच उम्मीदवारों के नाम की घोषणा को लेकर बीजेपी शायद इसमें बाजी मारती हुई दिख रही है। बीजेपी केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में झारखंड के करीब 55 उम्मीदवारों के नाम पर मुहर लग गई है। पार्टी बहुत जल्द अपने उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी कर सकती है। बता दें विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद नई दिल्ली में प्रत्याशियों के नाम पर मंथन हुआ। इसके पहले दिन भर चली बैठकों के बाद प्रदेश के शीर्ष नेताओं की ओर से विधानसभावार प्रत्याशियों के नाम शॉर्टलिस्ट हुए है। देर शाम इस सूची में शामिल प्रत्याशियों के नाम पर केंद्रीय चुनाव समिति ने मंथन किया। जिसके बाद कहा जा रहा हैं कि जल्द इन नामों को ऐलान बीजेपी कर सकती है।

**झारखंड में दो चरणों में वोटिंग**

झारखंड में इस बार दो चरणों में चुनाव होगा। पहले चरण का चुनाव 13 और दूसरे चरण के लिए 20 नवंबर को वोटिंग होगी। नतीजे 23 नवंबर को आएंगे। वहीं चुनाव की तारीखों की घोषणा के साथ झारखंड में राजनीतिक दलों ने तैयारी तेज कर दी है।

### राम मंदिर का दर्शन करने पहुंचे इजराइली राजदूत

**अयोध्या ।** भारत में इजराइल के राजदूत रूवेन अजार बुधवार सुबह अपनी पत्नी के साथ अयोध्या में राम मंदिर पहुंचे। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि अजार मंगलवार देर शाम ही अयोध्या पहुंच गए थे और बुधवार सुबह राम मंदिर का दौरा करने के बाद पड़ोसी जिले बस्ती में एक कार्यक्रम के लिए रवाना हो गए। मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अजार के साथ मुलाकात की थी जिसमें उत्तर प्रदेश और इजराइल के बीच ''गहरे संबंधों'' पर चर्चा की गई। सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर मुख्यमंत्री ने कहा, ''भारत में इजराइल के राजदूत रूवेन अजार के साथ एक अत्यंत उपयोगी और सार्थक चर्चा हुई। यह बैठक आपसी हितों के क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश और इजराइल के बीच गहरे संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक और कदम है।'' वहीं, इजराइली राजदूत अजार ने मुख्यमंत्री आदित्यनाथ को धन्यवाद दिया और 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा, ''योगी आदित्यनाथ जी, इजराइल के प्रति आपके समर्थन और आज के अतिथि का सत्कार के लिए सादर धन्यवाद। उत्तर प्रदेश को अधिक सुरक्षित और समृद्ध बनाने के आपके कार्यों के लिए बधाई। चर्चा किए गए मुद्दों पर कार्य करने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।

### दिल्ली के तापमान में गिरावट शुरू.....हवा की गुणवत्ता में भी सुधार

**नई दिल्ली ।** दिल्ली में तापमान में गिरावट शुरू हुई है। वहीं हवा की गुणवत्ता में कुछ सुधार हुआ है। इस बीच,पराली जलाने की घटनाओं में कमी आई है। इस साल की शुरुआत से 15 अक्टूबर तक पराली जलाने की 2,399 घटनाएं दर्ज की गईं, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 2,791 घटनाएं दर्ज की गई थीं। दिल्ली में खराब होती वायु गुणवत्ता के मद्देनजर राष्ट्रीय राजधानी में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (जीआरएपी) के पहले चरण के तहत प्रतिबंध लागू हो गए हैं। एक अधिकारी ने बताया कि सर्दियों में विशेष प्रदूषण रोधी उपायों के अंतर्गत ग्रैप के पहले चरण के तहत प्रतिबंध का उद्देश्य निर्माण स्थलों पर धूल को कम करना, उचित अपशिष्ट प्रबंधन और सड़कों की नियमित सफाई के माध्यम से प्रदूषण को नियंत्रित करना है।ग्रेप के पहले चरण में प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों की सख्त जांच, बेहतर यातायात प्रबंधन और उद्योगों, बिजली संयंत्रों और ईंट भट्ठों में उत्सर्जन नियंत्रण को अनिवार्य बनाया गया है। इसके तहत 500 वर्ग मीटर या उससे ज़्यादा के आकार के प्राइवेट कंस्ट्रक्शन और डेमोलिशन प्रोजेक्ट्स पर रोक। दिल्ली के 300 किलोमीटर के दायरे में पॉल्यूशन फैलाने वाली इंडस्ट्रियल यूनिट और थर्मल पावर प्लांटों पर कार्रवाई

# सुप्रीम कोर्ट ने वायु प्रदूषण को लेकर हरियाणा और पंजाब को फटकार लगाई

**आदेश का पालन नहीं हुआ तो मुख्य सचिव पर होगी अवमानना की कार्रवाई**

**-दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण से लोग हो रहे परेशान**

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने वायु प्रदूषण के बढ़ते स्तर को लेकर हरियाणा और पंजाब को फटकार लगाई है। बुधवार को सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यदि आदेश का पालन नहीं हुआ तो हरियाणा के मुख्य सचिव के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई की जाएगी। सुप्रीम कोर्ट ने अपने पहले आदेश का पालन नहीं किए जाने को लेकर बुधवार 16 अक्टूबर को हरियाणा और पंजाब सरकार को जबरदस्त फटकार लगाई है। कोर्ट ने चेतावनी दी और कहा कि यदि उसके आदेश का पालन नहीं किया गया तो हरियाणा के मुख्य सचिव के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई की जाएगी। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने सवाल किया कि आखिर पराली जलाने वालों के खिलाफ मुकदमा चलाने और नाममात्र को जुर्माना लगाकर लोगों को छोड़ने से राज्य क्यों कतरा रहा है? इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार को एक सप्ताह का समय देने की बात कहते हुए कहा कि यदि आदेश का पालन नहीं किया गया तो मुख्य सचिव के खिलाफ अवमानना का मामला दर्ज करेंगे। कोर्ट के इस सवाल पर कि आप लोगों पर मुकदमा चलाने से क्यों कतराते हैं? हरियाणा के वकील ने बताया कि हमने इस साल करीब 17 के खिलाफ मामले दर्ज किए हैं।

**कानून का उल्लंघन करने वालों पर एक भी मुकदमा नहीं**

सुप्रीम कोर्ट ने जहां यह कहा कि आयोग का कोई भी सदस्य वायु प्रदूषण से निपटने के लिए योग्य नहीं हैं वहीं इस बात को लेकर हैरानी भी जताई कि कोर्ट के आदेश का पालन नहीं किया गया यहां तक कि कानून का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ अभी तक एक भी मुकदमा नहीं चलाया गया है। कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि सब कुछ महज कागज़ों पर चल रहा है। पराली जलाने वालों को रोकने में असफल रहने के चलते सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा के मुख्य सचिव को अगली सुनवाई के दौरान कोर्ट में पेश होने का आदेश भी दे दिया।

**नाममात्र का जुर्माना और कुछ नहीं**

सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि आप तो नाममात्र का जुर्माना ले रहे हैं।

हद यह है कि इसरो आपको बता रहा कि आग कहां लगी थी और आप कहते हैं कि आपको कुछ नहीं मिला। कोर्ट ने कहा कि कानून उल्लंघन के 191 मामले आए और आपने सिर्फ़ नाममात्र का जुर्माना लिया।

एनसीटी क्षेत्र अधिनियम के तहत आयोग द्वारा दिए गए निर्देशों की अवहेलना की गई है। इस पर

हरियाणा सरकार की ओर से पेश हुए वकील ने गलती स्वीकार करते हुए कहा कि मैं अपनी ओर से हुई चूक या गलती को स्वीकार करता हूं। इस पर कोर्ट का कहना था कि यह कोई राजनीतिक मामला नहीं है यदि मुख्य सचिव किसी के इशारे पर काम कर रहे हैं तो उनके खिलाफ भी हम समन जारी करेंगे। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब सरकार को फटकार लगाई और कहा कि पंजाब सरकार ने भी पराली जलाने पर रोक के आदेश पर कुछ नहीं किया। विगत 03 सालों में पंजाब ने एक भी व्यक्ति पर मुकदमा नहीं चलाया। नाममात्र का जुर्माना लगा रहे हैं और कुछ नहीं किया गया।

# मोदी सरकार की केंद्रीय कर्मचारियों को दीवाली की सौगात.....3 प्रतिशत बढ़ा डीए

**नई दिल्ली ।**

धनतेरस और दिवाली के आने से पहले ही मोदी सरकार ने देश के करोड़ों कर्मचारियों को तोहफा दे दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली केंद्रीय कैबिनेट ने बुधवार को डीए जारी करने का फैसला लिया है। वैसे केंद्रीय कैबिनेट ने यह फैसला केंद्रीय कर्मचारियों के लिए किया है, लेकिन केंद्र से हरी झंडी मिलते ही देश के कई राज्यों में भी डीए बढ़ाने का ऐलान किया जाएगा। केंद्रीय कैबिनेट ने 3 फीसदी डीए बढ़ाने के साथ ही कर्मचारियों को तीन महीने का एरियर देने की घोषणा की है।

बता दें कि केंद्र हर साल जनवरी और जुलाई में कर्मचारियों का महंगाई भत्ता (डीए) बढ़ाती है। साल 2024 में भी जनवरी में डीए 4 फीसदी बढ़ाया था, जबकि जुलाई का डीए बढ़ाने का फैसला बुधवार को हुई बैठक में लिया गया। इसकारण महंगाई भत्ते ते में हुई 3 फीसदी की बढ़ोतरी को जुलाई से ही लागू माना जाएगा।

बता दें कि कर्मचारियों का महंगाई भत्ता उनके मूल वेतन यानी बेसिक सैलरी के आधार पर तय होता है। मान लें कि किसी कर्मचारी का मूल वेतन अगर 40 हजार रुपये है और उसका डीए 3 फीसदी बढ़ाया जाता है, तब उसकी सैलरी में 1,200 रुपये का इजाफा होगा। इस तरह, अगर मूल वेतन, महंगाई भत्ता और आवास भत्ता यानी एचआरए जोड़कर उसकी सैलरी 60 हजार पहले आती थी, तब

अब 60,1200 रुपये आएगी। चूंकि, यह बढ़ोतरी जुलाई से ही प्रभावी होगी, लिहाजा कर्मचारी को जुलाई, अगस्त और सितंबर महीने का एरियर भी मिलेगा। इस तरह एरियर के रूप में भी उन्हें 3,600 रुपये मिलने है।

बता दें कि डीए में बढ़ोतरी को जुलाई से ही लागू मानी जाएगी, इस हिसाब से अक्टूबर मिलाकर कुल 4 महीने हो जाएंगे। इस तरह अबे टूबर में कर्मचारियों को अभी तक मिल रहे कुल सैलरी से करीब 4800 रुपये बढ़कर मिलेगा।

## अब अकासा की फ्लाइट में बम की धमकी, उड़ान के बाद वापस लैंडिंग

**नई दिल्ली ।**

दिल्ली से बेंगलुरु जा रही अकासा एयर की फ्लाइट में बुधवार को बम मिलने की धमकी मिली। इसके फौरान बाद मानक सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, उड़ान को तुरंत वापस आईजीआई एयरपोर्ट भेजा गया, जहां वह सुरक्षित रूप से उतर गई। इसके बाद यात्रियों और चालक दल की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक प्रक्रियाओं का पालन किया जा रहा है। बताया जा रहा है कि फ्लाइट में बम होने की सूचना दोपहर 1.15 मिनट पर मिली। फ्लाइट में कुल 184 लोग सवार थे। वहीं पुलिस का कहना है कि अकासा एयर के विमान में बम की धमकी से संबंधित सुरक्षा अलर्ट प्राप्त हुआ। मानक सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, विमान को तुरंत वापस दिल्ली हवाई अड्डे पर उतारा गया। विमान को एक आइसोलेशन बे में रखा गया है। घटना पर अकासा एयर के प्रवक्ता ने कहा, 16 अक्टूबर 2024 को दिल्ली से बेंगलुरु के लिए उड़ान भरने वाले और 174 यात्रियों, 3 शिशुओं और 7 चालक दल के सदस्यों को लेकर जाने वाले अकासा एयर के विमान को सुरक्षा अलर्ट मिला। अकासा एयर की टीम ने पायलट को सलाह दी है कि वह विमान को पूरी सावधानी के साथ दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर ले जाएं। कैप्टन दिल्ली में सुरक्षित लैंडिंग के लिए सभी आवश्यक आपातकालीन प्रक्रियाओं का पालन कर रहे हैं और आगमन का अनुमानित समय लगभग 14:00 बजे है।

## छत्तीसगढ़ के ग्राउंड वॉटर में मिला यूरेनियम, खतरनाक बीमारियों का बड़ा खतरा

**रायपुर।**

एक रिसर्च में छत्तीसगढ़ के कई जिलों में ग्राउंड वाटर में जहरीले यूरेनियम की खतरनाक मात्रा का खुलासा हुआ है। दुर्ग, राजनांदगांव, कांकेर, बेमेतरा, बालोद और कवर्धा के कई गांवों के पानी में यूरेनियम की मात्रा तय मानक से तीन गुना ज्यादा पाई गई है। भिलाई इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (बीआईटी) के रसायनशास्त्र विभाग की इस रिसर्च में पाया कि पानी में यूरेनियम की मात्रा 30 पीपीबी से ज्यादा नहीं होनी चाहिए, लेकिन इन इलाकों के पानी में यह मात्रा 86 से 105 पीपीबी पाई है। इससे अगले कुछ सालों में कैंसर, किड़नी और त्वचा संबंधी गंभीर बीमारियों का खतरा पैदा हो सकता

है। बीआईटी की टीम ने 6 जिलों के गांवों में पानी के सैंपल की जांच की। बालोद जिले के देवतराई गांव का पानी सबसे ज्यादा दूषित पाया, जिसमें यूरेनियम की मात्रा 89 पीपीबी थी। बीआईटी ने पानी से यूरेनियम को हटाने के लिए सस्ते और पर्यावरण तरीके से नेचुरल यूरेनियम रिमूवल विकसित किया है, जो आंवला के पेड़ की छाल से तैयार किया है।

इस प्रक्रिया से पानी से यूरेनियम को सुरक्षित रूप से हटाया जा सकता है। बीआईटी द्वारा तैयार किए गए इस यूरेनियम रिमूवल को भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा यूटिलिटी पेटेंट जारी किया गया है। यह तकनीक ग्रामीण क्षेत्रों के लिए राहत साबित हो सकती है, जहां पानी की गुणवत्ता में सुधार की जरुरत है। यह रिपोर्ट राज्य सरकार और डिपार्टमेंट ऑफ एटॉमिक एनर्जी को भेज दी गई है, ताकि गंभीर समस्या का समाधान जल्द किया जा सके।

## जर्मन राजदूत का देशी अंदाज, कार में 'नींबू-मिर्ची' बांधी.....फिर नारियल फोड़ा

**नई दिल्ली।**

भारत में जर्मन राजदूत फिलिप एकरमैन फिर चर्चा में हैं। दरअसल एकरमैन भारतीय परंपराओं और संस्कृति की भी तारीफ करते रहे हैं। इसी कड़ी में फिर उन्होंने कुछ ऐसा किया है जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जर्मनी के राजदूत ने अपने ऑफिस के लिए नई इलेक्ट्रिक कार खरीदी है। इस नई बीएमडब्ल्यू कार में बैठने से पहले एकरमैन ने इसमें 'नींबू-मिर्ची' बांधी और फिर नारियल भी फोड़ा। अब एकरमैन का यहां वीडियो सोशल मीडिया की सुर्खियां बढ़ोर रहा है। जर्मन राजदूत का वीडियो उनके ऑफिस के बाहर शूट हुआ है। वीडियो में जर्मन राजदूत एकरमैन अपनी नई इलेक्ट्रिक कार का उद्घाटन करते दिख रहे हैं। सबसे पहले वे कार के ऊपर लगा कवर हटाते हैं फिर उसमें जर्मनी का राष्ट्रीय ध्वज लगाते हैं। इसके बाद एकरमैन नींबू-मिर्ची' को कार के रियर व्यू मिरर के चारों तरफ लपेट देते हैं। इसके बाद जर्मन राजदूत एक नारियल भी फोड़ते हैं। एकरमैन ने कहा, 'जर्मनी और भारत आपसी साझेदारी के लिए प्रतिबद्ध हैं। सर्दियों के समय में पर्यावरण प्रदूषण काफी ज्यादा होता है। इसलिए मुझे लगा कि हमें पॉल्यूशन को कम करने में योगदान देना चाहिए। मैं एक इलेक्ट्रिक कार लेना चाहता था। मैंने इसके लिए अपने हेडक्वार्टर में बात की थी। थोड़े ही दिन बाद मेरी मांग को स्वीकार कर लिया गया। यह एक इलेक्ट्रिक कार है, जो प्रदूषण कम करती है।' जर्मनी के राजदूत का भारतीय अंदाज लोगों को भी खूब पसंद आ रहा है। सोशल मीडिया पर यह वीडियो सैकड़ों लोगों ने शेयर किया है। कुछ लोगों ने सोशल मीडिया पर लिखा कि भारतीय परंपराओं का पालन करने पर अब कुछ लोगों के पेट दर्द शुरू हो जाएगा। कुछ लोगों ने लिखा कि कार इलेक्ट्रिक लेकर आ रहे हैं और 'नींबू-मिर्ची' बांधकर स्वागत कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, स्वस्तिक भी बनाना चाहिए था। एक ने लिखा, देसी कल्चर, विदेशी मेहमान। वहीं एक अन्य ने लिखा नींबू-मिर्च इंटरनेशनल हो गया।

# गुजरात के लोथल में बनेगा भारत का पहला नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स

**- 200 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से बनेगा विश्व का सबसे ऊँचा 'लाइटहाउस म्यूजियम'**

**- प्रथम चरण अंतर्गत भारतीय नौसेना तथा तट रक्षकों को समर्पित संग्रहालय का निर्माण किया जाएगा**

**अहमदाबाद ।** गुजरात की प्राचीन विरासत का एक महत्वपूर्ण स्थल लोथल एक बड़े परिवर्तन का साक्षी बनने जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने गुजरात के लोथल में नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स (एनएमएचसी) के विकास को स्वीकृति दी है। बंदरगाह, जहाजरानी तथा जल मार्ग मंत्रालय द्वारा संचालित इस पहल का उद्देश्य भारत की 4,500 वर्ष पुरानी समुद्री विरासत का सम्मान करना तथा उसे लोगों के समक्ष प्रदर्शित करना है। उल्लेखनीय है कि नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स यानी राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (एनएमएचसी) का शिलान्यास मार्च-2019 में किया गया था, जो विश्व का सबसे बड़ा मैरीटाइम कॉम्प्लेक्स बनने जा रहा है। यह समग्र परियोजना दो चरणों में पूर्ण की जाएगी। प्रत्येक चरण को आगंतुकों (विजिटर्स) के अनुभव एवं शैक्षणिक प्रभाव को बढ़ाने के उद्देश्य से डिजाइन किया गया है।

एनएमएचसी का चरण 1ए हाल में प्रगत्याधीन है, जिसमें 60 प्रतिशत कार्य पूर्ण हुआ है। इस चरण के अंतर्गत एनएमएचसी म्यूजियम का निर्माण किया जाएगा, जिसमें 6 दीर्घाएँ (गैलरियाँ) शामिल की जाएंगी। यह संग्रहालय भारतीय नौसेना (नेवी) तथा तट रक्षकों (कोस्ट गार्ड्स) को समर्पित किया जाएगा और अपेक्षा है कि यह देश में सबसे बड़ा म्यूजियम होगा। इन दीर्घाओं में नौसेना के आईएनएस निशांक, सी हेरियर एयरक्राफ्ट तथा यूएच3 हेलीकॉप्टर जैसे युद्धपोत प्रदर्शित किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त; चरण 1ए में प्राचीन लोथन टाउनशिप का मॉडल, एक ओपन एक्वेटिक (जलचर) गैलरी तथा जेटी वॉकवे का समावेश किया जाएगा। 1,238 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत के साथ इस चरण के तहत आने वाले कार्य वर्ष 2025 में पूर्ण करने का आयोजन है। इसके लिए मुख्य बंदरगाहों, रक्षा मंत्रालय तथा संस्कृति मंत्रालय के योगदान से कोष (फंड) प्रदान किया गया है। चरण 1बी में एनएमएचसी म्यूजियम में और 8 दीर्घाएँ तथा एक प्रकाशस्तंभ संग्रहालय (लाइटहाउस म्यूजियम) भी बनाया जाएगा। लाइटहाउस म्यूजियम को विश्व का सबसे ऊँचा म्यूजियम बनाने की योजना है। इसमें एक उद्यान परिसर शामिल होगा, जिसमें लगभग 1,500 वाहनों के लिए पार्किंग, एक फूड हॉल तथा मेडिकल सेंटर होंगे। इस लाइटहाउस म्यूजियम का अनुमानित खर्च 266.11 करोड़ रुपए है, जिसके लिए प्रकाशस्तंभ एवं प्रकाशपोत महानिदेशालय (डाइरेक्टरेट जनरल ऑफ लाइटहाउस एंड लाइटशिप्स यानी डीजीएलएल) द्वारा कोष प्रदान किया जाएगा। एनएमएचसी के द्वितीय चरण में तटवर्ती राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों द्वारा विशेष पैवेलियन बनाया जाएगा। इनमें समुद्री थीम पर बनाए गए इको-फ्रेंडली रिजोर्ट तथा 'म्यूज्योटेल' बनाए जाएंगे, जो म्यूजियम एवं होटल को जोड़ेंगे।

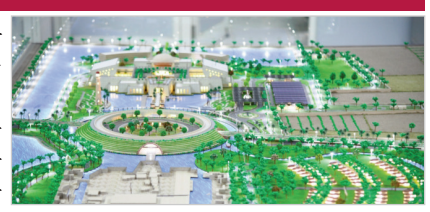

## दिल्ली के तापमान में गिरावट शुरू... हवा की गुणवत्ता में भी सुधार

नई दिल्ली । दिल्ली में तापमान में गिरावट शुरू हुई है। वहीं हवा की गुणवत्ता में कुछ सुधार हुआ है। इस बीच,पराली जलाने की घटनाओं में कमी आई है। इस साल की शुरुआत से 15 अक्टूबर तक पराली जलाने की 2,399 घटनाएं दर्ज की गईं, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 2,791 घटनाएं दर्ज की गई थीं। दिल्ली में खराब होती वायु गुणवत्ता के मद्देनजर राष्ट्रीय राजधानी में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (जीआरएपी) के पहले चरण के तहत प्रतिबंध लागू हो गए हैं। एक अधिकारी ने बताया कि सर्दियों में विशेष प्रदूषण रोधी उपायों के अंतर्गत ग्रैप के पहले चरण के तहत प्रतिबंध का उद्देश्य निर्माण स्थलों पर धूल को कम करना, उचित अपशिष्ट प्रबंधन और सड़कों की नियमित सफाई के माध्यम से प्रदूषण को नियंत्रित करना है।ग्रेप के पहले चरण में प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों की सख्त जांच, बेहतर यातायात प्रबंधन और उद्योगों, बिजली संयंत्रों और ईंट भट्ठों में उत्सर्जन नियंत्रण को अनिवार्य बनाया गया है। इसके तहत 500 वर्ग मीटर या उससे ज्यादा के आकार के प्राइवेट कंस्ट्रक्शन और डेमोलिशन प्रोजेक्ट्स पर रोक। दिल्ली के 300 किलोमीटर के दायरे में पॉल्यूशन फैलाने वाली इंडस्ट्रियल यूनिट और थर्मल पावर प्लांटों पर कार्रवाई पटाखों के प्रोडक्शन, स्टोरेज, और बिक्री पर रोक। 10-15 वर्ष पुराने डीजल/पेट्रोल वाहन पर रोक। खुले में कचरा जलाने पर रोक। खुले स्थानों पर कूड़ा-कचरा फैलाने पर रोक।

## मुंबई में 10 मंजिला इमारत में आग.... तीन की मौत, तीन घायल

मुंबई । मुंबई के अंधेरी वेस्ट में 10 मंजिला इमारत में बुधवार सुबह भीषण आग लग गई। आग में झुलसने से तीन लोगों की मौत हुई है। वहीं, तीन अन्य लोग घायल हो गए। घायलों की पहचान चंद्रप्रकाश सोनी (74), कांता सोनी (74) और 42 वर्षीय पेलुबेटा के रुप में हुई है। घायलों को कूपर अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। जानकारी के अनुसार, आग लगने की सूचना पर दमकल विभाग की गाड़ियां मौके पर पहुंची। फिलहाल अभी तक आग पर काबू नहीं पाया जा सका है। मौके पर फायर ब्रिगेड की गाड़ियों, हाइड्रेंट, टर्नटेबल सीढ़ी और एक एम्बुलेंस मौजूद हैं। आग एक आवासीय फ्लैट तक ही सीमित है और अधिकारी स्थिति पर करीब से नजर रख रहे हैं। फिलहाल आग पर काबू पाया जा रहा है।

## मां ने रात में कंघी करने से रोका... बेटी फांसी पर झूली

शहडोल । माता-पिता का समझाना आज कल बच्चों को इतना बुरा लगाता हैं कि अपनी जान तक की परवाह नहीं करते। ऐसा ही कुछ मध्य प्रदेश के शहडोल जिले से बेहद ही हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है, जहां एक युवती ने बालों में कंघी करने से मां के द्वारा मना करने पर सुसाइड किया। मामला छत्तीसगढ़ बार्डर पर स्थित झिकबिजुरी चौकी क्षेत्र के पथरिया टोला के जंगल का है। ग्राम कुटेला के रहने वाली एक 20 वर्षीय युवती आरती उर्फ गुड्डी को मां ने देर शाम बालों में कंघी करने से मना किया। मां की यह बात युवती को इतनी नागवारा गुजरी कि वह नाराज होकर घर से बाहर निकल गई। इसके बाद पथरिया टोला के जंगल में एक पेड़ में फांसी का फंदा बनाकर झूल गई। हालांकि पुलिस को घटनास्थल के पास कुछ आपत्तिजनक चीजें भी मिली है, जिससे ऐसा लग रहा है कि युवती के सुसाइड की वजह कुछ और भी हो सकती है। फिलहाल युवती के सुसाइड का कारण स्पष्ट नहीं हुआ है। वहीं, मामले में शहडोल एडिशनल एसपी अभिषेक दिवान का कहना है कि युवती के सुसाइड की जानकारी लगने पर पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरु कर दी है। प्रथम दृष्टया मृतका की माता द्वारा बताया गया है कि रात में कंघी करने से मना किया था जिसके बाद वह कही चली गई। इसके बाद उसका फांसी के फंदे झूलता शव मिला है। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है।

## छत्तीसगढ़ के ग्राउंड वॉटर में मिला यूरेनियम, खतरनाक बीमारियों का बड़ा खतरा

रायपुर। एक रिसर्च में छत्तीसगढ़ के कई जिलों में ग्राउंड वाटर में जहरीले यूरेनियम की खतरनाक मात्रा का खुलासा हुआ है। दुर्ग, राजनांदगांव, कांकेर, बेमेतरा, बालोद और कवर्धा के कई गांवों के पानी में यूरेनियम की मात्रा तय मानक से तीन गुना ज्यादा पाई गई है। भिलाई इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (बीआईटी) के रसायनशास्त्र विभाग की इस रिसर्च में पाया कि पानी में यूरेनियम की मात्रा 30 पीपीबी से ज्यादा नहीं होनी चाहिए, लेकिन इन इलाकों के पानी में यह मात्रा 86 से 105 पीपीबी पाई है। इससे अगले कुछ सालों में कैंसर, किडनी और त्वचा संबंधी गंभीर बीमारियों का खतरा पैदा हो सकता है। बीआईटी की टीम ने 6 जिलों के गांवों में पानी के सैंपल की जांच की। बालोद जिले के देवतराई गांव का पानी सबसे ज्यादा दूषित पाया, जिसमें यूरेनियम की मात्रा 89 पीपीबी थी।

## मुर्शिदाबाद में टीएमसी नेता की गोली मारकर हत्या, क्षेत्र में तनाव, पुलिस बल तैनात

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के बहरामपुर में एक टीएमसी नेता की गोली मारकर हत्या कर दी गई इसके बाद क्षेत्र में तनाव फैल गया है। मृतक की पहचान प्रदीप दत्ता के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि दत्ता जब सुबह की मॉर्निंग वॉक पर निकले थे, तभी अज्ञात हमलावरों ने उन पर गोलियां बरसाईं। हमलावरों ने दत्ता पर बहुत पास से सात गोलियां चलाई। बताया जा रहा है कि गोली चलने की आवाज सुनकर लोग अपने घर से बाहर आ गए और देखा कि दत्ता खून से लथपथ थे। उन्हें नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, लेकिन वहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बहरामपुर में पुलिस बल मौके पर पहुंचा। वहीं पुलिस इस मामले की जांच में जुट गई है और हत्या के पीछे का कारण जानने की कोशिश कर रही है। वहीं हमलावरों की पहचान के लिए सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। जिला पुलिस अधिकारी ने बताया घटना की जानकारी हासिल करने स्थानीय लोगों से पूछताछ की जा रही है।

# नीतीश के साथ फिर गठबंधन के सवाल पर बोले तेजस्वी यादव, अब सवाल ही नहीं, उनका समय खत्म हो गया है

**पटना (एजेंसी)।** राजद नेता तेजस्वी यादव ने बुधवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ गठबंधन की अटकलों को खारिज कर दिया और दावा किया कि थके हुए जदयू अध्यक्ष के लिए समय आ गया है। जनवरी में जब कुमार अचानक भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए में लौट आए तो यादव को उपमुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा था। तेजस्वी ने कहा कि बिहार में दिन-ब-दिन कानून-व्यवस्था की स्थिति पर नजर डालें तो...ऐसा कोई विधानसभा क्षेत्र नहीं है, जहां हत्या, लूटपाट, अपहरण और बलात्कार जैसे अपराध नहीं होते हों।

राजद नेता ने दावा किया कि बड़ी मुश्किल से एफआईआर दर्ज होती है, जांच शून्य होती है, पीड़ित परिवार को कभी न्याय नहीं मिलता और आरोपी छूट जाता है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि बिहार में कानून व्यवस्था की स्थिति भयावह हो गई है। उन्होंने कहा कि सीएम नीतीश कुमार अब बिहार नहीं चला पा रहे हैं, थक चुके हैं, उनकी स्थिति हम देख सकते हैं। बांका जिले में पत्रकारों से बात करते हुए, राजद नेता ने उन्हें चुनौती दी कि वे केंद्र में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके जाति जनगणना करवाएं, साथ ही राज्य के लिए विशेष दर्जा और हाल की बाढ़ से तबाह हुए क्षेत्रों के लिए राहत पैकेज भी हासिल करें।

एक सवाल के जवाब में, अब विपक्ष के नेता, यादव ने कहा अब नीतीश कुमार के साथ हाथ मिलाने का सवाल ही नहीं उठता। उनका समय समाप्त हो गया है। वह थक गए हैं और अब बिहार पर शासन करने में सक्षम नहीं हैं। विशेष रूप से, यादव की पार्टी, जिसका नेतृत्व उनके पिता लालू प्रसाद कर रहे हैं, की जद (यू) के साथ दो साझेदारियाँ रही हैं, दोनों ही अल्पकालिक रहीं। दोनों पार्टियों ने पहली बार 2015 में गठबंधन किया था, जब गठबंधन ने विधानसभा चुनावों में शानदार जीत दर्ज की थी, हालांकि कुमार दो साल बाद एनडीए में वापस चले गए।

## योगी सरकार के मंत्री के नाम पर पोती कालिख, गेट पर लिख चोर-बेईमान !

लखनऊ । उत्तर प्रदेश की राजधानी में योगी सरकार के एक राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के आवास पर चोर-बेईमान लिखा गया है। इतना ही नहीं उनके आवास पर राज्यमंत्री के नेम प्लेट पर कालिख तक पोत दी गई है। यह सबकुछ कांग्रेस के नेताओं ने किया। दरअसल, कांग्रेस के नेता आक्रोशित हैं। बताया जा रहा है कि राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) की तरफ से कांग्रेस नेता एवं राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी को लेकर टिप्पणी की गई थी। जिसके विरोध में राज्यमंत्री के घर पर चोर-बेईमान लिखा गया है। उत्तर प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह के आवास पर बुधवार को कांग्रेस नेता अनिल यादव पहुंचे। अनिल यादव ने सबसे पहले राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह के आवास पर चोर बेईमान लिखा, उसके बाद आवास पर लगे नेम प्लेट (नाम पट्टिका) पर कालिख पोत दी। खास बात यह रही कि यह सब करते हुये कांग्रेस नेता का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। गौरतलब है कि प्रियंका गांधी वायनाड से चुनाव लड़ने जा रही हैं, कांग्रेस ने उन्हें वायनाड लोकसभा सीट से प्रत्याशी बनाया है। इसी पर राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने टिप्पणी कर दी। उन्होंने यह टिप्पणी अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर की है। उन्होंने लिखा है कि अन्ततः लड़की लड़ नहीं पाई और भाग ही गई वहां जहां लड़ना न पड़े। बूढ़ी जो हो गई। वहीं कालिख पोते जाने की जानकारी जब मंत्री के आवास पर मौजूद लोगों को हुई तो उन्होंने आनन-फानन में चोर-बेईमान लिखा हुआ को मिटा दिया है।

## उ. प्र. परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने अमर शहीद कैप्टन अंशुमान सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की

**संवाददाता लक्ष्मीकांत पाण्डेय, प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के परिवहन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं जनपद देवरिया के प्रभारी मंत्री दयाशंकर सिंह ने भारतीय सेना के जांबाज नायक कैप्टन-अंशुमान-सिंह के प्रथम पुण्य तिथि पर आज लखनऊ स्थित बुद्धेश्वर चौराहे पर आयोजित कार्यक्रम में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की उन्होंने कहा कि मेरे प्रभार के जनपद देवरिया के ऐसे लाल अमर शहीद कैप्टन अंशुमान सिंह की जयंती पर मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होना मेरे लिए गौरव की बात है उन्होंने कहा कि शहीद अंशुमान विगत वर्ष 19 जुलाई 2023 को सियाचिन में अपने सहयोगियों को बचाते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे जब तक ऐसे बीर सपूत हमारे देश में पैदा होते रहेंगे तब तक हमारे देश की तरफ आँख उठाने की साहस कोई भी दुश्मन देश नहीं कर सकता। मैं ऐसे बीर सपूत के माता-पिता को दिल से नमन करता हूँ।**

# सलमान खान को माफ कर देगा बिश्नोई समाज... शर्तें मान लें

**जोधपुर (एजेंसी)।** बीते 26 साल से अभिनेता सलमान खान और बिश्नाई समाज के बीच तनातनी चल रही है। वजह ये है कि 1998 में सलमान खान ने काले हिरन का शिकार किया था। इससे विश्नाई समाज नाराज है। समाज का कहना है कि सलमान खान झूठ न बोलें, पानी छानकर पिए,भगवान बिष्णु का आराधना और प्रार्थना सहित 29 नियमों का पालन करें तो पूरा विवाद खत्म हो जाएगा।

फिल्म हम साथ-साथ हैं की शूटिंग के दौरान जोधपुर के कांकाणी गांव में काले हिरण के शिकार के मामले में सलमान खान सहित कई फिल्मी हस्तियों पर आरोप लगाए गए थे। यह मामला अभी भी न्यायालय में विचाराधीन है, लेकिन अब सवाल उठता है कि क्या बिश्नोई समाज सलमान खान को माफ कर सकता है? अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र बूड़िया ने इस विषय पर अहम बयान दिया है।

देवेंद्र बूड़िया का कहना है कि अगर सलमान खान अपने कृत्य के लिए समाज से माफी मांगते हैं और मुकाम में आकर अपनी गलती को स्वीकार करते हैं, तो बिश्नोई समाज के 29 नियमों के तहत उन्हें माफ किया जा सकता है। बिश्नोई समाज के दसवें नियम में यह प्रावधान है कि गलती करने वाले को क्षमा किया जा सकता है। यह नियम समाज के धर्मगुरु भगवान जंभेश्वर जी द्वारा स्थापित किया गया था, जिसके अनुसार दया और क्षमा के भाव से अपराधी को माफ करने की व्यवस्था है।

बिश्नोई समाज प्रकृति प्रेम और शांति का प्रतीक माना जाता है, और अपने 29 नियमों के माध्यम से यह समाज न केवल धार्मिक अनुशासन बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी को भी बढ़ावा देता है। महिपाल बिश्नोई, जो इस घटना से जुड़े रहे, ने बताया कि 1998 की उस रात गांव वालों ने गोली की आवाज सुनी थी और बाद में दो काले हिरणों का शव पाया गया। समाज के लोगों ने एक जिप्सी को घटनास्थल से भागते देखा, जिसमें सलमान खान और उनके साथी मौजूद थे। बिश्नोई समाज का मानना है कि प्रकृति और जीवों की रक्षा करना उनका धर्म है। हालांकि, देवेंद्र बूड़िया के बयान के बाद यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या सलमान खान माफी मांगेंगे और क्या समाज उन्हें क्षमा करेगा।

### इन नियमों का करना होगा पालन

सुबह स्नान करना और शुद्धता बनाए रखना, शील, संतोष, और शुद्धता का पालन करना,

सुबह-शाम संध्या और प्रार्थना करना, शाम को आरती करना और भगवान विष्णु के गुण गाना, सुबह हवन करना, पानी छानकर पीना और शुद्ध वाणी बोलना, ईंधन और दूध छानकर लेना,

क्षमा और सहनशीलता का पालन करना, दया और नम्रता से जीवन जीना,

चोरी न करना, निंदा न करना, झूठ न बोलना, वाद-विवाद से बचना, अमावस्या का व्रत रखना, विष्णु भजन करना, सभी प्राणियों पर दया रखना, पेड़ों को नहीं काटना, अपने हाथ से खाना पकाना, बैल को बधिया (नपुंसक) न करना, नशे (अमल), तंबाकू, भांग और शराब का सेवन न करना, मांस का सेवन न करना, नीले रंग के कपड़े न पहनना।

## अब मणिपुर में होगी शांति, मैतेई, कुकी और नगा के बीच बनी सहमति, केंद्रीय गृहमंत्रालय ने बुलाई थी विधायकों की बैठक

नई दिल्ली। मणिपुर में जारी हिंसा के बीच शांति की पहली हुई। केंद्रीय गृह मंत्रालय की पहल पर मणिपुर के मैतेई, कुकी और नगा समुदायों के 20 विधायक दिल्ली पहुंचे। बैठक पहले गृह मंत्रालय में तय थी, लेकिन बाद में उन्हें खान मार्केट स्थित आईबी दफ्तर ले जाया गया। मंगलवार को बैठक में आईबी के पूर्वोत्तर के संयुक्त निदेशक राजेश कांबले, बीजेपी के समन्वयक संबित पात्रा, केंद्र के सुरक्षा सलाहकार एके मिश्रा और अन्य अधिकारी मौजूद थे। बैठक में पहले कुकी, फिर मैतेई और बाद में नगा नेताओं से बातचीत की गई, जिसमें उन्होंने अपनी-अपनी मांगें केंद्र के सामने रखी। इसके बाद सभी नेताओं को एकत्रित कर संकल्प दिलाया कि मणिपुर में न तो कोई गोली चलेगी और न ही किसी की जान जाएगी। तीनों समुदायों के प्रतिनिधियों ने इस पर सहमति जताई और एक-दूसरे से हाथ मिलाया। सूत्रों के मुताबिक मणिपुर में हालात को सुधारने के लिए नगा लोगों का अहम रोल था। राज्य में 2016 में सात नए जिले बनाए गए थे, जिन्हें कुकी बहुल कहा जाता है, हालांकि यहां नगा भी रहते हैं। नगा संगठन, यूनाइटेड नगा काउंसिल, इन जिलों को वापस लेने और 1972 की स्थिति को बहाल करने की मांग कर रहा है। 11 सितंबर को गृह मंत्रालय से 15 दिन में इस मुद्दे को हल करने की चेतावनी दी थी। कुकी जनजाति ने तीन मुख्य मांगें उठाई जिसमें सीएम एन. बीरेन सिंह को हटाना, कुकी इलाकों में अलग प्रशासन की मांग और हथियारबंद समूहों को गैर-कानूनी घोषित करना। इन मांगों पर अंतिम निर्णय कुकी काउंसिल की बैठक में लिया जाएगा, जिसमें आगे की रणनीति तय की जाएगी।

# बंगाल खाड़ी में उठा तूफान आज पुडुचेरी और नेल्लोर तट से टकराने की आशंका

**कोलकाता(एजेंसी )।** बंगाल की दक्षिण-पश्चिम खाड़ी में दबाव का क्षेत्र चक्रवाती तूफान में बदल गया है और गुरुवार सुबह पुडुचेरी और नेल्लोर के बीच तूफान के तट से टकराने की आशंका है और इससे दक्षिण तट और रायलसीमा के कई स्थानों पर भारी बारिश होने की संभावना है। आंध्र प्रदेश आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के मौसम विभाग ने कहा कि तूफान के गुरुवार सुबह पुदुचेरी और नेल्लोर के बीच तट के पास टकराने की उम्मीद है। तट के किनारे हवाएं चल रही हैं जिनके 40-60 किमी/घंटा की गति होने की उम्मीद है।

चेन्नई और तमिलनाडु के कई इलाकों में विगत दिवस हुई भारी बारिश से शहर में आवागमन पूरी तरह से ठप हो गया। रिहायशी इलाकों और सड़कों पर घुटनों तक पानी भर गया। बारिश के कारण यातायात थम सा गया है। सार्वजनिक परिवहन सेवाएं बाधित हो गईं और कई घरेलू उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं। दक्षिणी रेलवे ने जलभराव के चलते चेन्नई सेंट्रल-मैसूर कावेरी एक्सप्रेस सहित चार एक्सप्रेस ट्रेनों को रद्द कर दिया है। कई ट्रेनों का मार्ग परिवर्तित किया गया है कुछ को चेन्नई सेंट्रल रेलवे स्टेशन से पहले ही रोक दिया था। कई घरेलू उड़ानें रद्द की गई हैं क्योंकि पर्याप्त संख्या में यात्री नहीं आए। आईएमडी के मुताबिक चिह्नित निम्न दबाव क्षेत्र एक अवसाद में बदल गया है और गुरुवार सुबह चेन्नई तट को पार करने की उम्मीद है।

आईएमडी ने कहा कि तिरुवल्लूर, कांचीपुरम, चेंगलपट्टू और चेन्नई जिलों में भारी से बहुत भारी बारिश और एक या दो स्थानों पर मूसलाधार भारी बारिश होने की संभावना है। कर्नाटक के राजस्व मंत्री कृष्णा बायरे गौड़ा ने कहा कि भारी बारिश के पूर्वानुमान के बाद बेंगलुरु में आपदा प्रतिक्रिया बल के जवानों को तैनात किया गया है। उन्होंने कहा कि किसी भी जरुरत के लिए 40 कर्मियों को तैनात किया जा रहा है। हमने तत्काल प्रतिक्रिया के लिए अग्निशमन और आपातकालीन सेवाओं को स्टैंडबाय पर रखा है। शहर के नागरिक निकाय बृहत बेंगलुरु महानगर पालिका (बीबीएमपी) ने आठ क्षेत्रों में 24 घंटे चालू रहने वाले विशेष नियंत्रण कक्ष स्थापित किए हैं और बारिश से संबंधित समस्याओं की रिपोर्ट करने एक हेल्पलाइन नंबर 1533 भी चालू किया है। जिस पर सूचना दी जा सकती है।

**संवाददाता लक्ष्मीकांत पाण्डेय। उत्तर प्रदेश प्रयागराज हंण्डिया के बजरंग रामलीला समिति बटऊपुर गोविन्दपुर मे आज मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र के लीलाओं का चौथा दिन का मंचन किया गया। जिसमें अंगद संवाद, कुंभकर्ण वध, लक्षण शक्ति, नांगफास,अहिरावण वध समेत कई लीलाओं का मंचन किया गया मंचन पर श्रीरामचन्द्रं का अभिनय नीरज पांडे, लक्षण का मलयज पाण्डेय, दशकंधर का राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, विभीषण का कृपा शंकर पाण्डेय एव लक्ष्मी कात मिश्र, टिकू, प्रमोद पाण्डेय, के साथ मंच व्याश रवींद्र नाथ पाण्डेय, समेत कई बजरंग रामलीला समिति के सदस्यों का सहयोग देखने को मिला कल भव्य और दिव्य बजरंग रामलीला समिति का ग्रामीण मेले का अयोजन भी होगा ।**

# सुप्रीम कोर्ट ने वायु प्रदूषण को लेकर हरियाणा और पंजाब को फटकार लगाई

**-आदेश का पालन नहीं हुआ तो मुख्य सचिव पर होगी अवमानना की कार्रवाई**

**-दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण से लोग हो रहे परेशान**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** सुप्रीम कोर्ट ने वायु प्रदूषण के बढ़ते स्तर को लेकर हरियाणा और पंजाब को फटकार लगाई है। बुधवार को सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यदि आदेश का पालन नहीं हुआ तो हरियाणा के मुख्य सचिव के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई की जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने पहले आदेश का पालन नहीं किए जाने को लेकर बुधवार 16 अक्टूबर को हरियाणा और पंजाब सरकार को जबरदस्त फटकार लगाई है। कोर्ट ने चेतावनी दी और कहा कि यदि उसके आदेश का पालन नहीं किया गया तो हरियाणा के मुख्य सचिव के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई की जाएगी। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने सवाल किया कि आखिर पराली जलाने वालों के खिलाफ मुकदमा चलाने और नाममात्र को जुर्माना लगाकर लोगों को छोड़ने से राज्य क्यों कतरा रहा है? इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार को एक सप्ताह का समय देने की बात कहते हुए कहा कि यदि आदेश का पालन नहीं किया गया तो मुख्य सचिव के खिलाफ अवमानना का मामला दर्ज करेंगे। कोर्ट के इस सवाल पर कि आप लोगों पर मुकदमा चलाने से क्यों कतराते हैं? हरियाणा के वकील ने बताया कि हमने इस साल करीब 17 के खिलाफ मामले दर्ज किए हैं।

### कानून का उल्लंघन करने वालों पर एक भी मुकदमा नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने जहां यह कहा कि आयोग का कोई भी सदस्य वायु प्रदूषण से निपटने के लिए योग्य नहीं हैं वहीं इस बात को लेकर हैरानी भी जताई कि कोर्ट के आदेश का पालन नहीं किया गया यहां तक कि कानून का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ अभी तक एक भी मुकदमा नहीं चलाया गया है। कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि सब कुछ महज कागजों पर चल रहा है। पराली जलाने वालों को रोकने में असफल रहने के चलते सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा के मुख्य सचिव को अगली सुनवाई के दौरान कोर्ट में पेश होने का आदेश भी दे दिया।

### नाममात्र का जुर्माना और कुछ नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि आप तो नाममात्र का जुर्माना ले रहे हैं। हद यह है कि इसरो आपको बता रहा कि आग कहां लगी थी और आप कहते हैं कि आपको कुछ नहीं मिला। कोर्ट ने कहा कि कानून उल्लंघन के 191 मामले आए और आपने सिर्फ नाममात्र का जुर्माना लिया। एनसीटी क्षेत्र अधिनियम के तहत आयोग द्वारा दिए गए निर्देशों की अवहेलना की गई है। इस पर हरियाणा सरकार की ओर से पेश हुए वकील ने गलती स्वीकार करते हुए कहा कि मैं अपनी ओर से हुई चूक या गलती को स्वीकार करता हूं। इस पर कोर्ट का कहना था कि यह कोई राजनीतिक मामला नहीं है यदि मुख्य सचिव किसी के इशारे पर काम कर रहे हैं तो उनके खिलाफ भी हम समन जारी करेंगे।

इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब सरकार को फटकार लगाई और कहा कि पंजाब सरकार ने भी पराली जलाने पर रोक के आदेश पर कुछ नहीं किया। विगत 03 सालों में पंजाब ने एक भी व्यक्ति पर मुकदमा नहीं चलाया। नाममात्र का जुर्माना लगा रहे हैं और कुछ नहीं किया गया। धान की पराली जलाई जा रही है और आप वायु प्रदूषण निवारण अधिनियम 1981 के तहत कुछ करना ही नहीं चाहते। वायु लगातार प्रदूषित हो रही है। सुप्रीम कोर्ट ने पराली जलाने पर रोक लगाने में असफल रहने पर पंजाब सरकार के मुख्य सचिव को भी अगले बुधवार 23 अक्टूबर को सुनवाई में अदालत में व्यक्तिगत तौर पर पेश होने के आदेश दिए हैं।

पंजाब और हरियाणा को फटकार लगाने के साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को भी आदेश दिया कि हरियाणा और पंजाब के जिन अधिकारियों ने कोर्ट के आदेश का पालन नहीं किया उनके खिलाफ वो कारवाई करे। दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते वायु प्रदूषण से लोगों का जीना मुहाल हो जाता है, ऐसे में सुप्रीम कोर्ट ने इस बार सख्ती दिखाई है, ताकि समस्या का समाधान निकाला जा सके।

## संक्षिप्त समाचार

### हवाई हमले में मारा गया हमास एरियल यूनिट का प्रमुख : इजरायली सेना

**यरूशलम, एजेंसी।** इजरायली सैन्य और सुरक्षा एजेंसी ने कहा है कि गाजा पट्टी में इजरायली हवाई हमले में हमास की हवाई इकाई के प्रमुख की मौत हो गई। इजरायल की सेना और घरेलू सुरक्षा एजेंसी शिन बेट ने एक संयुक्त बयान में इसकी जानकारी दी। शिन्हुआ समाचार एजेंसी के मुताबिक सितंबर में युद्धक विमानों द्वारा किए गए हमले में हमास के हवाई अभियान के प्रमुख समर अबू दक्का की मौत हो गई। बयान के अनुसार, अबू दक्का कई ड्रोन हमलों में शामिल था और हमास के हवाई अभियान में केंद्रीय भूमिका निभाता था। पिछले साल एरियल यूनिट प्रमुख असिम अबू रकाबा के मारे जाने के बाद दक्का को जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इजरायली सुरक्षा अधिकारियों ने कहा कि अबू दक्का 7 अक्टूबर, 2023 को इजरायल के खिलाफ हुए हमले में भी शामिल था। कथित तौर पर उसने दक्षिणी इजरायल में हमास के पैराग्लाइडर और ड्रोन अटैक यूनिट टीम को लीड किया था। उस अचानक हुए अटैक में 1,200 मौतें हुई थीं। जिसके बाद गाजा में जंग के हालात बने। गाजा स्थित स्वास्थ्य अधिकारियों ने सोमवार को एक बयान में जानकारी दी है कि गाजा पर इजरायली हमलों में अब तक 42,289 फिलिस्तीनी मारे गए हैं।

### आर्थिक विकास में चीन और अमेरिका से आगे निकल जाएगा भारत-यूएसआईएसपीएफ अध्यक्ष

**वाशिंगटन/ नई दिल्ली, एजेंसी।** अमेरिका-भारत रणनीतिक साझेदारी मंच (यूएसआईएसपीएफ) के अध्यक्ष जॉन चैंबर्स ने सोमवार को दावा किया कि भारत प्रमुख आर्थिक मापदंडों में चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका से आगे निकल जाएगा। नई दिल्ली में यूएसआईएसपीएफ द्वारा आयोजित वार्षिक भारत नेतृत्व शिखर सम्मेलन 2024 में बोलते हुए, चैंबर्स ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की आर्थिक प्रगति की तेज गति की तारीफ की। चैंबर्स ने कहा, महत्वपूर्ण क्षण वह था जब राष्ट्रपति बाइडेन और प्रधानमंत्री मोदी ने वाशिंगटन में मुलाकात की और घोषणा की कि यह अब तक की सबसे रणनीतिक साझेदारी है। यूएसआईएसपीएफ अध्यक्ष ने कहा, जीडीपी प्रति व्यक्ति आय वृद्धि के मामले में भारत चीन से लगभग 100 प्रतिशत और अमेरिका से 33 प्रतिशत बड़ा होगा। यहां जीवन स्तर और समग्र विकास दुनिया के किसी भी अन्य देश से आगे निकल जाएगा। चैंबर्स ने जोर देते हुए कहा, यह भारत की सदी है। उन्होंने आगे कहा कि अमेरिका के साथ मिलकर व्यापार, सरकार, शिक्षा जगत के लीडर्स के साथ काम करके भारत वैश्विक विकास के लिए एक मॉडल बन सकता है। यूएसआईएसपीएफ अध्यक्ष ने आगे भविष्यवाणी की कि मजबूत अमेरिकी-भारत साझेदारी के माध्यम से, हम संभावित रूप से भारत की जीडीपी वृद्धि को दो प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ा सकते हैं और अमेरिकी जीडीपी वृद्धि को एक प्रतिशत तक बढ़ा सकते हैं। यूएसआईएसपीएफ शिखर सम्मेलन प्रधानमंत्री मोदी की संयुक्त राज्य अमेरिका की सफल यात्रा के बाद हो रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य द्विपक्षीय व्यापार को मजबूत करना, सप्लाई चेन को बढ़ावा देना, सेमीकंडक्टर निवेश, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नेक्स्ट जेनरेशन टेक्नोलॉजी सहयोग को बढ़ावा देना है।

### श्रीलंका में बारिश का कहर, तीन लोगों की मौत

**कोलंबो, एजेंसी।** श्रीलंका में भारी बारिश के कारण लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। श्रीलंका के आपदा प्रबंधन केंद्र (डीएमसी) ने बताया कि मौसम की खराब स्थिति के कारण श्रीलंका में सोमवार सुबह तक तीन लोगों की मौत हो गई। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, डीएमसी ने कहा कि श्रीलंका में सात अक्टूबर से भारी बारिश शुरू हुई और सोमवार सुबह तक देश भर के 12 जिलों में बारिश से उत्पन्न आपदाओं के कारण 34,492 परिवारों के 134,484 लोग विस्थापित हुए हैं। श्रीलंका के सिंचाई विभाग ने पांच मुख्य नदियों के सात स्थानों पर बाढ़ की चेतावनी जारी की है। श्रीलंका के मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, साबरागमुवा, उत्तर-पश्चिमी और उत्तरी प्रांतों तथा गाले और मतारा जिलों में कुछ स्थानों पर 100 मिमी से अधिक भारी बारिश होने की संभावना है। बता दें कि इससे पहले खबर आई थी कि श्रीलंका में बारिश से जुड़ी घटनाओं जैसे बाढ़, तेज हवाएं, पेड़ गिरने और बिजली गिरने के कारण 22 हजार से ज्यादा लोग विस्थापित हुए हैं। श्रीलंका के आपदा प्रबंधन केंद्र (डीएमसी) ने बताया था कि सात अक्टूबर से शनिवार सुबह तक दक्षिण एशियाई देश के 11 जिलों में 5 हजार 348 परिवारों के 22 हजार 64 लोग विस्थापित हो चुके हैं। श्रीलंका के आपदा प्रबंधन केंद्र के अनुसार, पानी से भरे धान के खेत में एक व्यक्ति डूब गए। बता दें कि इसी साल जून में श्रीलंका में बाढ़ और बारिश से संबंधी घटनाओं में कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई थी और छह अन्य लापता बताए हो गए थे।

# कनाडा एक ऐसा देश है जो कानून के शासन में निहित है, और हमारे नागरिकों की सुरक्षा सर्वोपरि है- जस्टिन ट्रूडो

**ओटावा , एजेंसी।** कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कहा है कि कनाडा कभी भी कनाडा की धरती पर कनाडाई नागरिकों को धमकाने और उनकी हत्या करने में विदेशी सरकारों की संलिप्तता को बर्दाश्त नहीं करेगा, उन्होंने इसे कनाडा की संप्रभुता का अस्वीकार्य उल्लंघन करार दिया. एक बयान में, ट्रूडो ने भारत सरकार से कनाडा सरकार के साथ सहयोग करने और अब तक साझा किए गए सबूतों की विश्वसनीयता और गंभीरता को पहचानने का आग्रह किया. विदेश मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि ट्रूडो ने सितंबर 2023 में कुछ आरोप लगाए हैं. हालांकि, कनाडा सरकार ने उनके कई अनुरोधों के बावजूद भारत सरकार के साथ एक भी सबूत साझा नहीं किया है. 14 अक्टूबर को जारी एक बयान में, ट्रूडो ने कहा कि कनाडा एक ऐसा देश है जो कानून के शासन में निहित है, और हमारे नागरिकों की सुरक्षा सर्वोपरि है. इसीलिए, जब हमारी कानून प्रवर्तन और खुफिया सेवाओं ने विश्वसनीय आरोपों की जांच शुरू की कि भारत सरकार के एजेंट कनाडा की धरती पर एक कनाडाई नागरिक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में सीधे तौर पर शामिल थे - तो हमने जवाब दिया. हमने भारत सरकार के साथ अपनी चिंताओं को साझा

किया और उनसे इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर प्रकाश डालने के लिए हमारे साथ काम करने को कहा. साथ ही, पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों ने कनाडाई लोगों को सुरक्षित रखने के लिए अपने पास मौजूद सभी साधनों का इस्तेमाल किया है. उन्होंने आगे कहा कि आज, रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस (आरसीएमपी) की ओर से प्रस्तुत साक्ष्यों को देखते हुए, हम कनाडाई लोगों की सुरक्षा के लिए अतिरिक्त कदम उठा रहे हैं. उन्होंने आरसीएमपी आयुक्त माइक डुहामे के पिछले बयान के बारे में बात की, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि कनाडा के पास सबूत हैं कि भारतीय सरकार के एजेंट ऐसी गतिविधियों में शामिल हैं और लगे हुए हैं जो सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करती हैं, जिसमें गुप्त सूचना एकत्र करने की तकनीक, दक्षिण एशियाई कनाडाई लोगों को लक्षित करने वाला बलपूर्वक व्यवहार और हत्या सहित एक दर्जन से अधिक धमकी भरे और हिंसक कृत्यों में शामिल होना शामिल है और उन्होंने इन कार्रवाइयों को अस्वीकार्य करार दिया. ट्रूडो ने कहा कि जबकि आरसीएमपी और राष्ट्रीय सुरक्षा अधिकारियों ने इस मामले पर भारत सरकार और भारतीय कानून प्रवर्तन समकक्षों के साथ काम करने का प्रयास किया है, उन्हें बार-बार मना कर दिया गया है. यही कारण है कि, इस सप्ताहांत, कनाडाई अधिकारियों ने एक असाधारण कदम उठाया. उन्होंने आरसीएमपी साक्ष्य साझा करने के लिए भारतीय अधिकारियों से मुलाकात की, जिसमें निष्कर्ष निकाला गया कि भारत सरकार के छह एजेंट आपराधिक गतिविधियों में रुचि रखने वाले व्यक्ति हैं. भारत सरकार से बार-बार अनुरोध करने के बावजूद, उन्होंने सहयोग नहीं करने का फैसला किया है. यह देखते हुए कि भारत सरकार अभी भी सहयोग करने से इनकार कर रही है, मेरे सहयोगी, विदेश मंत्री, मेलानी जोली के पास केवल एक ही विकल्प था. आज, उन्होंने इन छह व्यक्तियों के लिए निर्वासन नोटिस जारी किया. उन्हें कनाडा छोड़ना होगा, उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने कहा कि ये छह व्यक्ति अब कनाडा में राजनयिक के रूप में कार्य नहीं कर पाएंगे या कनाडा में फिर से प्रवेश नहीं कर पाएंगे. उन्होंने कहा कि आरसीएमपी द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और कनाडा में सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा बनी रहने वाली आपराधिक गतिविधियों को रोकने के लिए यह आवश्यक है. उन्होंने जोर देकर कहा कि कनाडा सरकार सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से कनाडाई लोगों के अपने देश में सुरक्षित महसूस करने के अधिकार के लिए खड़ी होगी. उन्होंने कहा कि हम कनाडा की धरती पर कनाडाई नागरिकों को धमकाने और मारने में किसी विदेशी सरकार की संलिप्तता को कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे - यह कनाडा की संप्रभुता और अंतर्राष्ट्रीय कानून का गहरा अस्वीकार्य उल्लंघन है. कनाडा ने 13 अक्टूबर को एक राजनयिक विज्ञप्ति में सिख अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की 2023 में हत्या में भारतीय उच्चायुक्त की संलिप्तता का आरोप लगाया. भारत के विदेश मंत्रालय ने 14 अक्टूबर को कनाडा के आरोपों को बेतुका आरोप बताया और तर्क दिया कि यह मामला ट्रूडो सरकार के घरेलू मोर्चे पर सामने आ रही राजनीतिक चुनौतियों से जुड़ा है।

## ईरान का इजराइल पर हमला करना पड़ा भारी, ब्रिटेन ने लगाया कड़ा प्रतिबंध

**लंदन, एजेंसी।** ईरान का इजराइल के खिलाफ हमला करना भारी पड़ा. ब्रिटेन ने इरान पर कई सख्त प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है. इसके तहत ब्रिटेन ने ईरान के सैन्य अफसरों और स्पेस एजेंसी पर बैन लगाया है. विदेश मंत्री डेविड लैमी ने कहा कि बार-बार चेतावनी के बावजूद ईरान और उसके सहयोगियों की खतरनाक कृत्यों से मिडल ईस्ट में तनाव और बढ़े हैं. ब्रिटेन के विदेश कार्यालय ने सोमवार को कहा कि एक अक्टूबर को इजराइल पर ईरान के हमले के बाद उसके सैनिकों, रक्षा संगठनों और अंतरिक्ष अभियानों से जुड़े संगठनों पर बैन लगाए गए हैं. नये प्रतिबंधों का लक्ष्य ईरान की सेना, वायु सेना तथा बैलिस्टिक एवं क्रूज मिसाइल विकास से जुड़े संगठनों के वरिष्ठ अधिकारी हैं.

**मिसाइल बनाने से जुड़े संगठन पर बैन :** ब्रिटेन ने क्रूज मिसाइल में इस्तेमाल किए जाने वाले हिस्सों और डिजाइन बनाने का काम करने वाले संगठन फरजानेगन प्रोपल्शन सिस्टम डिजाइन ब्यूरो पर भी प्रतिबंध लगाने का फैसला लिया है. इसके अलावा ईरानी अंतरिक्ष एजेंसी पर भी प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया है. ये बैलेस्टिक मिसाइल तैयार करने में तकनीकी सहायता करती है. विदेश मंत्री डेविड लैमी ने कहा कि ईरान और उसके समर्थक मिडल ईस्ट में तनाव को बढ़ावा रहे हैं. उन्होंने बयान में कहा कि इजराइल पर उसके बैलिस्टिक मिसाइलों के हमले के बाद हम ईरान को जवाबदेह ठहरा रहे हैं. इन कृत्यों में मदद करने वालों को बेनकाब कर रहे हैं. ईरान अपने सहयोगियों और भागीदारों के साथ अस्वीकार्य धमकियां दे रहा है. इसके खिलाफ पूरे क्षेत्र में तनाव कम करने के लिए दबाव बनाने के लिए आवश्यक उपाय करना जारी रखेंगे।

## अमेरिकी अस्पतालों में मेडिकल प्रोडक्ट्स की कमी, तूफान मिल्टन की वजह से सप्लाई चेन बाधित

**सैक्रामेंटो, एजेंसी।** संयुक्त राज्य अमेरिका में हेल्थ केयर प्रोवाइडर को मेडिकल प्रोडक्ट्स की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा है। तूफान हेलेन और मिल्टन ने इंट्रावेनस (आईवी) फ्लुइड्स की सप्लाई चेन को गंभीर रूप से बाधित कर दिया है। अमेरिका में सबसे बड़े अस्पताल-बेस्ड रिसर्च एंटरप्राइज, मास जनरल ब्रिघम ने शुक्रवार को घोषणा की कि वह रविवार से कम से कम बुधवार तक गैर-आपातकालीन, वैकल्पिक प्रक्रियाओं को स्थगित कर देगा। इसने कहा कि यह साफ नहीं है कि आईवी फ्लुइड्स की आपूर्ति कब सुधरेगी। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, हेल्थकेयर लॉजिस्टिक्स कंपनी प्रीमियर इंक की तरफ से गुरुवार को जारी एक सर्वे के अनुसार, देश भर में 86 फीसदी से अधिक हेल्थ केयर प्रोवाइडर आईवी फ्लुइड्स की कमी का सामना कर रहे हैं। यह स्थिति तब शुरू हुई जब पिछले महीने के अंत में तूफान हेलेन ने उत्तरी कैरोलिना में बैक्सटर आईवी प्लांट को नुकसान पहुंचाया। इससे देश की 60 फीसदी आईवी सॉल्यूशन सप्लाई निकट भविष्य के लिए ऑफलाइन हो गई। अमेरिकी स्वास्थ्य एवं मानव सेवा मंत्री जेवियर बेसेरा ने 9 अक्टूबर को स्वास्थ्य सेवा नेताओं को लिखे पत्र में कहा कि आने वाले हफ्तों में सप्लाई बाधित रह सकती है और तूफान मिल्टन पहले से ही कमजोर बाजार को और अधिक बाधित कर सकता है।

## ताइवान की सीमा में घुसे 14 युद्धपोत और 153 विमान, मध्य रेखा के साथ ही चीन ने पार की हद

**ताइपे, एजेंसी।** चीन और ताइवान के बीच लगातार तनाव बढ़ता जा रहा है। बीजिंग अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। एक बार फिर चीनी सेना ने ताइवान की सीमा में घुसपैठ की कोशिश की। हालांकि, ताइवान की सेना ने भी इसका जवाब दिया। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि चीन के विमान, नौसैनिक पोत और जहाज ताइवान की सीमा के करीब देखे गए।

**इतने विमान दिखाई दिए :** ताइवान के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय (एमएनडी) ने बताया कि मंगलवार सुबह छह बजे ताइवान के आसपास चीनी 14 नौसैनिक पोत और 12 आधिकारिक जहाज देखे गए। जबकि 153 सैन्य विमानों को उड़ान भरते देखा गया। सेना ने बताया कि 153 विमानों में से 111 ने ताइवान स्ट्रेट की मध्य रेखा को पार किया और ताइवान के पूर्वी वायु रक्षा पहचान क्षेत्र (एडीआईजेड) में प्रवेश किया। बता दें चीन और ताइवान के बीच यह जल संधि एक अनौपचारिक सीमा है। इसके जवाब में ताइवान ने चीन की गतिविधि की निगरानी के लिए विमान, नौसैनिक जहाजों और वायु रक्षा मिसाइल प्रणालियों को तैनात किया। एमएनडी ने यह जानकारी सोशल मीडिया मंच एक्स पर दी।

**हम स्थिति पर नजर रखे हुए- एमएनडी :** ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, आज सुबह 153 विमान , 14 पोत और 12 जहाज ताइवान के आसपास नजर आए। 111 विमानों ने ताइवान स्ट्रेट की

मध्य रेखा को पार किया और ताइवान के उत्तरी, मध्य, दक्षिण-पश्चिमी और दक्षिणपूर्वी एडीआईजेड में प्रवेश किया। हम स्थिति पर नजर बनाए रखे हुए हैं।

**क्या है ग्रे जोन रणनीति :** गौरतलब है चीन, ताइवान को अपना हिस्सा मानता है, जबकि ताइवान खुद को संप्रभु राष्ट्र मानता है। अब तक चीन ने सीधे ताइवान पर आक्रमण नहीं किया है, लेकिन वो ये सब कुछ ग्रे जोन में करता है। ये चीन की सेना का एक पैंतरा है, जिससे वो सीधे युद्ध तो नहीं करती लेकिन ये शक्ति प्रदर्शन करती है। ग्रे जोन का मतलब है कि कोई देश सीधा हमला नहीं करता है लेकिन इस तरह का डर हमेशा बनाए रखता है। सीधे सैन्य कार्रवाई की जगह, ऐसी कई चीजें होती रहती हैं, जिनसे हमले का डर बना रहता है। ताइवान के साथ चीन यही कर रहा है। चीन सितंबर 2020 से ग्रे जोन रणनीति का अधिक बार उपयोग कर रहा है। जानकारों का कहना है कि ग्रे जोन युद्ध रणनीति दरअसल, एक तरीका है, जिससे लंबी अवधि में धीरे-धीरे प्रतिद्वंद्वी को कमजोर कर दिया जाता है और चीन ताइवान के साथ ठीक यही करने की कोशिश कर रहा है।

## सनकी किंग किम जोंग उन ने द. कोरिया पर निकाला गुस्सा, अंतर-कोरियाई सारी सड़कें उड़ा दीं

**प्योंगप्यांग, एजेंसी।** दक्षिण कोरिया के सनकी किंग किम जोंग उन ने कहा कि उत्तर कोरिया ने मंगलवार को अंतर-कोरिया सड़कों के उन उत्तरी हिस्सों को उड़ा दिया है जो अब उपयोग में नहीं हैं। दक्षिण कोरिया द्वारा उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंगयांग के ऊपर ड्रोन उड़ाए जाने के उसके दावे के बाद दोनों प्रतिद्वंद्वी देशों के बीच तनाव बढ़ गया है। दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ ने एक संक्षिप्त बयान में कहा कि उत्तर कोरिया ने मंगलवार को सड़कों के कुछ हिस्सों को उड़ा दिया। इसमें कहा गया है कि दक्षिण कोरियाई सेना अपनी तैयारी और निगरानी बढ़ा रही है लेकिन उसने और कोई जानकारी नहीं दी। इस कार्रवाई से एक दिन पहले उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन ने अपने शीर्ष सैन्य और सुरक्षा अधिकारियों के साथ एक बैठक बुलायी थी। बैठक में किम ने दक्षिण कोरिया द्वारा कथित तौर पर ड्रोन भेजे जाने को ''दुश्मन का गंभीर उकसावे वाला कदम बताया। उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया द्वारा फिर से ड्रोन भेजे जाने पर उस पर हमले शुरू करने के लिए अपनी सैन्य इकाइयों को तैयार रहने के

लिए कहा था। दक्षिण कोरिया ने ड्रोन भेजे जाने की पुष्टि करने से इनकार कर दिया लेकिन चेतावनी दी थी कि अगर उसके नागरिकों की सुरक्षा को खतरे में डाला गया तो उत्तर कोरिया को इसका अंजाम भुगतना पड़ेगा। अंतर कोरियाई सड़कों को नष्ट करने की कार्रवाई, उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन की दक्षिण कोरिया के साथ संबंध समाप्त करने तथा उसे औपचारिक रूप से अपने देश का प्रमुख शत्रु घोषित करने की उनकी कोशिश के अनुरूप होगी। साल 2000 में अंतर-कोरियाई संबंधों में नरमी के दौरान दोनों देशों ने भारी किलेबंदी वाली अपनी सीमा को दो सड़क मार्गों और दो रेल पटरियों से फिर से जोड़ा था। लेकिन उत्तर कोरिया के परमाणु कार्यक्रम और अन्य मुद्दों को लेकर बाद में उनका संचालन निलंबित कर दिया गया था। पिछले सप्ताह उत्तर कोरिया ने कहा था कि वह दक्षिण कोरिया के साथ अपनी सीमा को स्थायी रूप से अवरुद्ध कर देगा और दक्षिण कोरियाई व अमेरिकी सेनाओं की ''उकसावे वाली कार्रवाई से निपटने के लिए अग्रिम पंक्ति पर रक्षा क्षमताओं का विकास करेगा।

## कनाडाई पत्रकार बोर्डमैन ने कहा कि कनाडा में विश्वसनीय नहीं रहे जस्टिन ट्रूडो

**ओटावा, एजेंसी।** भारत और कनाडा के बीच बढ़ते तनाव के बीच कनाडाई पत्रकार डैनियल बोर्डमैन ने प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की विश्वसनीयता और नेतृत्व में बढ़ते भरोसे की कमी की ओर इशारा किया है. बोर्डमैन ने भारत सरकार की ओर से अपने उच्चायुक्त और अन्य राजनयिकों को वापस बुलाने के फैसले को दोनों देशों के बीच बढ़ती दरार का स्पष्ट संकेत बताया. उन्होंने कहा कि कनाडा में कुछ खालिस्तानी सरकारी सिस्टम के भीतर कुछ तत्व हैं, वे इस पर पूरी तरह से हावी हैं. खालिस्तानी तत्व पूरी तरह से हमलावर हैं. वे इसे पूरी जीत के रूप में ले रहे हैं और भारत पर हमला कर रहे हैं. उन्होंने कनाडाई लोगों के बीच आम भावना पर भी टिप्पणी की, इस बात पर जोर देते हुए कि अधिकांश कनाडाई लोग ट्रूडो के तरीके से निराश हो रहे हैं. उन्होंने कहा कि कनाडा के अधिकांश लोग इस सरकार से बेहद तंग आ चुके हैं. वे संस्थाओं पर भरोसा नहीं करते, मीडिया को विश्वसनीय नहीं मानते, जस्टिन ट्रूडो को विश्वसनीय नहीं मानते. बहुत से कनाडाई इसे देखकर कंधे उचका देंगे और शायद भारत का पक्ष भी लेंगे. उन्होंने कहा कि भारत-कनाडा संबंधों की वर्तमान स्थिति क्रायोस्टेसिस जैसी होगी. मुझे लगता है कि भारतीयों ने कनाडा को तब तक क्रायो पॉड में डाल दिया है जब तक कि हमें नई सरकार नहीं मिल जाती. उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार ट्रूडो

को एक उचित नेता के रूप में नहीं देखती है. उन्होंने कहा कि मुझे नहीं लगता कि वे जस्टिन ट्रूडो को एक उचित अभिनेता के रूप में देखते हैं. मुझे नहीं लगता कि जब भारत की बात आती है तो वे उचित अभिनेता हैं, खासकर जब उनका समर्थन जगमीत सिंह द्वारा किया जाता है, जो खुले तौर पर शत्रुतापूर्ण हैं. बोर्डमैन ने भविष्यवाणी की कि यदि सरकार में बदलाव जल्दी नहीं होता है तो राजनयिक ठहराव कम से कम एक और वर्ष तक जारी रह सकता है. उन्होंने सुझाव दिया कि यदि चुनाव होते हैं, तो नई सरकार भारत के साथ संबंधों के लिए एक अलग दृष्टिकोण अपना सकती है. उन्होंने कहा कि फिलहाल अगले एक साल तक संबंधों में सुधार की कोई गुंजाइश नजर नहीं आती है. उन्होंने कहा कि एक साल बाद यहां सरकार बदलने की संभावना है. नई सरकार आतंकवाद विरोधी और भारत समर्थक हो सकती है।

## हांगकांग में बदहाली के दुकानों और 1000 रेस्तरां पर लटका ताला

**विक्टोरिया, एजेंसी।** हवाई कंपनियां हांगकांग के लिए पर्यटकों को छूट दे रही हैं। वहां पर्यटकों के लिए ड्रोन और दूसरे एअर शो हो रहे हैं। हांगकांग ने सैकड़ों सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर्स को अपने यहां आमंत्रित किया है कि वे आकर देश की खूबसूरती देखें और इसकी कहानी बताएं। इसके बावजूद हांगकांग को पर्यटक नहीं मिल रहे, तो यह आश्चर्य की ही बात है।

दरअसल, एक समय पर्यटन व्यवसाय ही हांगकांग की आर्थिक ताकत था। लेकिन कोविड और राजनीतिक उथल-पुथल के कारण वहां पर्यटकों की संख्या जो घटी, उसमें अब भी वृद्धि नहीं हो पा रही। हांगकांग के लिए परेशानी की बात यह भी है कि थाईलैंड, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे दूसरे एशियाई देशों में पर्यटकों का आंकड़ा कोविड से पहले के स्तर पर आ गया है। लंबे समय से पर्यटकों की कमी के कारण हांगकांग की छोटी-छोटी असंख्य दुकानें और रेस्तरां बंद हो गए हैं। जबकि बड़े होटलों में किसी भी समय दर्जनों कमरे खाली पाए जाते हैं।

ग्राहकों की कमी से छोटी दुकानों और रेस्तरां को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। मार्च से अगस्त के बीच देश में लगभग 1,000 रेस्तरां बंद हो गए हैं। वर्ष 2019 में चीन के वर्चस्ववाद के खिलाफ हांगकांग में हुए जनांदोलन के कारण पर्यटन उद्योग पर प्रतिकूल असर पड़ा। क्रिस्टिन चुंग हांगकांग की इस बदहाली के कई कारण बताए जा रहे हैं। वर्ष 2019 में चीन के वर्चस्ववाद के खिलाफ हांगकांग में हुए जनांदोलन के कारण पर्यटन उद्योग पर प्रतिकूल असर पड़ा। उस साल के उत्तरार्ध में वहां पर्यटकों के आंकड़े में 2018 की तुलना में 40 फीसदी

की कमी आ गई। वर्ष 2020 में कोविड से निपटने के लिए हांगकांग ने अपनी सीमाएं सील कर दी थीं। और अब भारी संख्या में विदेशी नागरिकों और कंपनियों के बाहर निकल जाने से लंबे समय से वैश्विक वित्तीय केंद्र के रूप में हांगकांग की जो छवि बनी थी, उसे धक्का लगा है। और सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि चीन में खाना और शॉपिंग करना महंगा होने के कारण हांगकांग के स्थानीय लोग शॉपिंग करने और यहां तक कि भोजन करने तक के लिए सीमा पार कर चीन पहुंच रहे हैं। ग्राहकों की कमी से छोटी दुकानों और रेस्तरा को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। हांगकांग फेडरेशन ऑफ रेस्टोरेंट्स ऐंड रिलेटेड ट्रेड्स के प्रमुख सिमॉन वांग का-वो के अनुसार, ग्राहकों के अभाव में मार्च से अगस्त के बीच देश में लगभग 1,000 रेस्तरां बंद हो गए हैं।

# डाकू से ऋषि बने वाल्मीकि ने रामायण रची

**कहा जाता है कि ऋषि वाल्मीकि को तीनों कालों सतयुग, त्रेता और द्वापर का ज्ञान था। महाभारत काल में भी वाल्मीकिजी का उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि जयंती हर साल आश्विन महीने की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि के दिन मनायी जाती है। उनकी जन्मतिथि आज भी विवादों में ही है, क्योंकि उनके जन्म के बारें मे कोई पुख्ता सबूत नहीं मिला है जिससे उनकी सही जन्म तिथि के बारे मे कुछ भी कहा जा सके। लेकिन रामायण के समयकाल को शामिल करते हुए यह कहा जाता है, कि वह पहली शताब्दी से लेकर पांचवीं शताब्दी के बीच के रहे होगें। वे एक संत थे और वो एक साधारण जीवन और उच्च विचार रखने वाले व्यक्ति थे। वे बहुत ज्ञानी होने के साथ-साथ एक महान व्यक्तित्व थे।**

(लेखक - ललित गर्ग/ईएमएस)

महर्षि वाल्मीकि जयंती- 17 अक्टूबर, 2024)

महापुरुषों की कीर्ति किसी एक युग तक सीमित नहीं रहती। उनका लोकहितकारी चिन्तन, कर्म एवं उपलब्धि कालजयी होती है और युगों-युगों तक समाज का मार्गदर्शन करती है। महर्षि वाल्मीकि हमारे ऐसे ही एक प्रकाश-स्तंभ हैं, जिनकी जयंती का सनातन धर्म में बहुत ही खास महत्व है। डाकू से ऋषि बने वाल्मीकि ने हिन्दू धर्म के महान् रामायण जैसे महाकाव्य की रचना की थी। ऋषि वाल्मीकि सबसे महान संस्कृत कवियों में से एक थे। उन्हें आदिकवि के नाम से भी जाना जाता है। ऋषि वाल्मीकि ने जिस रामायण की रचना की वो वाल्मीकि रामायण के नाम से जानी जाती है। ऐसा माना जाता है कि अपने वनवास के समय भगवान श्रीराम वाल्मीकि के आश्रम भी गए थे। वाल्मीकिजी को भगवान श्रीराम के जीवन में घटित घटनाओं की जानकारी थी। कहा जाता है कि ऋषि वाल्मीकि को तीनों कालों सतयुग, त्रेता और द्वापर का ज्ञान था। महाभारत काल में भी वाल्मीकिजी का उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि जयंती हर साल आश्विन महीने की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि के दिन मनायी जाती है। उनकी जन्मतिथि आज भी विवादों में ही है, क्योंकि उनके जन्म के बारें मे कोई पुख्ता सबूत नहीं मिला है जिससे उनकी सही जन्म तिथि के बारे मे कुछ भी कहा जा सके। लेकिन रामायण के समयकाल को शामिल करते हुए यह कहा जाता है, कि वह पहली शताब्दी से लेकर पांचवीं शताब्दी के बीच के रहे होगें। वे एक संत थे और वो एक साधारण जीवन और उच्च विचार रखने वाले व्यक्ति थे। वे बहुत ज्ञानी होने के साथ-साथ एक महान व्यक्तित्व थे। हिंन्दू पौराणिक कथाओं अनुसार, वाल्मिकी ऋषि ही वह अलौकिक एवं दिव्य व्यक्ति थे, जिन्होंने देवी सीता को तब आश्रय दिया था, जब वो अयोध्या राज्य छोड़कर वन में चली गई थीं। यही नहीं मां ने उन्हीं के आश्रम में लव कुश को जन्म दिया था। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में ही लव कुश ने भगवान श्रीराम का अश्वमेध यज्ञ बांध लिया था। जिसकी वजह से श्रीराम को वाल्मीकि आश्रम में आना पड़ा था। यहीं पर पहली बार लव कुश अपने पिता श्रीराम से मिले थे। बाद में महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम को लव कुश से परिचय करवाया। देवी सीता के पृथ्वी माता की गोद में समा जाने पर वाल्मीकि ने लव कुश को भगवान श्रीराम को सौंप दिया। मान्यता है कि महर्षि वाल्मीकि का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। किंतु डाकुओं के संसर्ग में रहने के कारण ये लूटपाट और हत्याएं करने लगे और यही इनकी आजीविका का साधन हो गया। इन्हें जो भी मार्ग में मिलता वह उनकी संपत्ति लूट लिया करते थे। एक दिन इनकी मुलाकात देवर्षि नारद से हुई। इन्होंने नारदजी को लुटते हुए कहा कि तुम्हारे पास जो कुछ है उसे निकाल कर रख दो, नहीं तो तुम्हें जीवन से हाथ धोना पड़ेगा। देवर्षि नारद ने कहा, मेरे पास इस वीणा और वस्त्र के अलावा कुछ और नहीं है? तुम लेना चाहो तो इसे ले सकते हो, लेकिन तुम यह क्रूर कर्म करके भयंकर पाप क्यों करते हो?' देवर्षि की कोमल वाणि सुनकर वाल्मीकि का कठोर हृदय कुछ द्रवित हुआ। इन्होंने कहा, 'मेरी आजीविका का यही साधन है और इससे ही मैं अपने परिवार का भरण पोषण करता हूं।' देवर्षि बोले, तुम अपने परिवार वालों से जाकर पूछो कि वे तुम्हारे इन पाप कर्मों में भी हिस्सा बंटाएंगे या नहीं? वाल्मीकि ने परिजनों से उक्त प्रश्न पूछा तो सभी ने कहा कि यह तुम्हारा कर्तव्य है कि हमारा भरण पोषण करो परन्तु हम तुम्हारे पाप कर्मों में क्यों भागीदार बनें? परिजनों की बात सुनकर वाल्मीकि को आघात लगा। उनके ज्ञान नेत्र खुल गये। उनके जीवन की दिशा बदल गयी। इस घटना से रत्नाकर बहुत दुखी हुआ और गलत मार्ग का त्याग करते हुए श्रीराम की भक्ति में डूब गया। महर्षि बाल्मीकि परिजनों की बात सुनने के बाद जंगल में पहुंचे और वहां जाकर देवर्षि नारद को बंधनों से मुक्त किया तथा विलाप करते हुए उनके चरणों में गिर पड़े और अपने पापों का प्रायश्चित करने का उपाय पूछा। नारदजी ने उन्हें धैर्य बंधाते हुए श्रीराम नाम के जप की सलाह दी। लेकिन चूंकि वाल्मीकि ने भयंकर अपराध किये थे इसलिए वह राम राम का उच्चारण करने में असमर्थ रहे तब नारदजी ने उन्हें मरा मरा उच्चारण करने को कहा। बार बार मरा मरा कहने से राम राम का उच्चारण स्वतः ही होने लगा। इस राम नाम के जप ने रत्नाकर डाकू का जीवन ही नहीं बदला बल्कि उनके भीतर अनेक अलौकिक, दिव्य एवं विलक्षण शक्तियों का प्रस्फुटन भी कर दिया था। उनके इस जप एवं तप से ब्रह्मदेव प्रसन्न हुए और उन्होंने वाल्मीकिजी को श्रीराम का चरित्र लिखने का आदेश दिया। उसके बाद वाल्मीकिजी ने रामायण की रचना की।

महर्षि वाल्मीकि का पालन जंगल में रहने वाली भील जाति में हुआ था, जिस कारण उन्होंने भीलों की परंपरा को अपनाया। स्कंद पुराण के नागर खंड में महर्षि वाल्मीकि को ब्राह्मण बताया गया है। पुराण के मुताबिक ब्राह्मण परिवार में जन्में वाल्मीकि के बचपन का नाम 'लोहजंघा' था और वह अपने माता-पिता के प्रति बहुत समर्पित थे। गोस्वामी तुलसीदास को रामायण के रचयिता वाल्मीकि का अवतार माना जाता है। वाल्मीकि को भगवान श्रीराम के जीवन की हर घटना का ज्ञान था, ऐसा प्रतीत होता है अपनी दिव्य साधना एवं सिद्धि से श्रीराम के सम्पूर्ण जीवन का साक्षात्कार किया हो। वे रामायण के रचयिता ही नहीं, बल्कि प्रभु श्रीराम के भाष्यकार भी है। तभी उन्होंने श्रीराम के जीवन एवं चरित्र को बहुत बारीकी से प्रस्तुति दी है। ऋषि वाल्मीकिजी कहते है कि भगवान श्रीराम का चेहरा चंद्रमा की तरह चमकदार और सुंदर है। उनकी आंखों की तुलना कमल से की गई। आंखों के कोणों के ताम्र रंग को ताम्राक्ष और लोहिताश के रूप में व्यक्त किया है। ऋषि वाल्मीकि के अनुसार भगवान श्रीराम के बाल लंबे और घने थे। उनके अनुसार, भगवान श्रीराम की नाक उनके चेहरे की तरह लंबी और सुडौल थी। उन्होंने श्रीराम को महानासिका वाला बताया है। महानासिका से तात्पर्य उन्नत और दीर्घ नासिका से है। वहीं प्रभु श्रीराम के कानों के लिए उन्होंने टीकारों ने चतुर्दशसमद्वन्द और दशवृहत् जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। जिसका अर्थ है कानों का सम और बड़ा होना। वाल्मीकि ने उनके कानों के लिए शुभ कुंडलों का प्रयोग भी किया है। महर्षि वाल्मीकि के अनुसार, प्रभु के हाथ के अंगूठे में चारों वेदों की प्राप्ति सूचक रेखा थी, जिसके चलते उन्हें चतुष्फलक कहा गया है। श्रीराम के चरण सम और कमल के समान बताए गए हैं।

मान्यता के अनुसार एक बार वाल्मीकिजी गहन तपस्या

में बैठे थे। लंबे समय तक चले इस तप में वे इतने मग्न थे कि उनके पूरे शरीर पर दीमक लग गई। लेकिन उन्होंने बिना तपस्या भंग किए निरंतर अपनी साधना पूरी की। इसके बाद ही आंखें खोली। फिर दीमकों को हटाया। कहा जाता है कि दीमक जिस जगह अपना घर बना लेते हैं, उसे वाल्मीकि कहते हैं, इसलिए इन्हें वाल्मीकि के नाम से जाना जाने लगा। एक और घटना एवं मान्यता के अनुसार एक बार महर्षि वाल्मीकि ने एक बार पत्थर पर लिखी रामायण को देखा तो हैरान रह गए और सोचने लगे कि इतनी अच्छी रामायण किसने लिखी। इतने में हनुमानजी वहां प्रकट हो गए और बताया कि यह उनकी लिखी रामायण है। वाल्मीकि इससे दुखी हुए और बताया कि आपकी लिखी रामायण को पढ़ने के बाद मेरी रामायण कौन पढ़ेगा? हनुमानजी ने वाल्मीकि के मनोभाव को जान कर पत्थरों पर लिखी अपनी रामायण को उठाकर समुद्र में फेंक दिया। हनुमानजी ने वाल्मीकि से कहा कि आपकी रामायण ही अबसे दुनिया पढ़ेगी और प्रसिद्ध होगी। निश्चित ही रामायण की कालजयी लोकप्रियता एवं जन-आस्था ने उसे सनातन साहित्य और सर्वप्रिय धर्मग्रंथ का गौरव प्रदान किया है। भारत के घर-घर एवं सभी देशों में रामायण हिन्दू-धर्म-दर्शन का वैश्विक दूत बन गया है। उसकी लोकप्रियता सर्वोपरि है एवं हिन्दू धर्म के अनुयायी बाल्मीकि के सदैव ऋणि रहेंगे।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

संपादकीय

## कनाडा का दोमुंहापन

कनाडा में पदस्थापित भारतीय उच्चायुक्त संजय वर्मा व कई अन्य राजनयिकों को वापस बुलाने और भारत में नियुक्त छह कनाडाई राजनयिकों के निष्कासन की कार्रवाई के बाद ट्रूडो सरकार को अब यह साफ हो जाना चाहिए कि नई दिल्ली उसके अनर्गल आरोपों व दुस्साहसिक कदमों का माकूल जवाब देने से पीछे नहीं हटेगी। भारत पिछले कई वर्षों से कनाडा में खालिस्तानी अलगाववादियों की बढ़ती गतिविधियों को लेकर ट्रूडो सरकार को आगाह करता रहा है, मगर ओटावा में बैठी ट्रूडो हुकूमत ने न सिर्फ इन चेतावनियों को नजरअंदाज किया, बल्कि पिछले साल जून में खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के लिए उसने भारत को कठघरे में खड़ा कर दिया। स्वयं प्रधानमंत्री ट्रूडो ने अपनी पार्लियामेंट में भारत पर आरोप लगाकर राजनयिक मर्यादाओं का उल्लंघन किया। यह सीधे-सीधे भारत राष्ट्र की छवि पर हमला था। इस घटना पर नई दिल्ली की त्वरित प्रतिक्रिया के बाद भी कनाडा सरकार ने संबंधों को सुधारने की कोई खास पहल नहीं की और दोनों देशों के आपसी रिश्ते हर बीतते दिन के साथ नीचे उतरते चले गए। सोमवार की कार्रवाई इसी की परिणति थी। भारत ने किन कुर्बानियों और मुश्किलों से पंजाब के आतंकवाद पर काबू पाया, कनाडा समेत पश्चिम के तमाम देश इससे वाकिफ हैं। भारत उस दौर की किसी आहट को स्वप्न में भी अब सहन नहीं कर सकता और यह उचित ही है। मगर कनाडा ने न सिर्फ भारतीय हितों की लगातार अनदेखी की, बल्कि उस निज्जर के लिए उसने दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था के साथ अपने रिश्तों को दांव पर लगा दिया, जिसके सिर पर भारत सरकार ने दस लाख रुपये का इनाम घोषित कर रखा था? बताने की जरूरत नहीं कि ट्रूडो सरकार की उदासीनता के प्रति भारत इसलिए सब्र बांधे रहा, क्योंकि कनाडा में बड़ी संख्या में सिख समुदाय के लोग बसते हैं, जो हिन्दुस्तान से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। जाहिर है, वहां के सिखों की बहुसंख्या किसी सूरत में पंजाब को फिर से उथल-पुथल का शिकार बनते नहीं देखना चाहेगी। इस पूरे प्रकरण में कनाडा सरकार, बल्कि पूरे पश्चिम का दोमुंहापन एक बार फिर सामने आया है। एक तरफ, तो वह आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक लड़ाई का दम भरता है और दूसरी ओर, निज्जर व गुरपतवंत सिंह पन्नू जैसों की हिमायत में खड़ा हो जाता है। दुनिया गवाह है, अपने देश के खिलाफ साजिश रचने वालों को मिटाने के लिए उसे राष्ट्रों की संप्रभुता का कोई ख्याल नहीं रहता, बल्कि अपने मित्र देशों की लक्षित हत्याओं का भी वह खुलकर बचाव करता है। दूसरी तरफ, किसी देश को अपने वांछित अपराधियों को हासिल करने के लिए इन देशों में वर्षों तक अदालतों के चक्कर लगाने पड़ते हैं, तब भी सफलता मिल जाए, इसकी ठोस आश्वस्ति नहीं होती। मानवाधिकार की आड़ में इस तरह का रवैया आतंकवाद के खिलाफ पश्चिम की लड़ाई को भेदभावपूर्ण बनाता है। साफ है, भारत जैसे सक्षम देश पर दबाव बनाने की ऐसी कुचालें सीधे-सीधे आतंकियों का हौसला बढ़ाती हैं। मगर 26/11 के मुंबई हमले के बाद आतंकवाद से निपटने का नई दिल्ली का नजरिया बदल चुका है। बालाकोट की सर्जिकल स्ट्राइक इसकी सबसे बड़ी नजीर है। अपने घरेलू राजनीतिक भंवर से उबरने के लिए जस्टिन ट्रूडो उसी विषैली रणनीति का सहारा ले रहे हैं, जिसे पाकिस्तानी रहनुमा कभी खूब गले लगाते थे। इस्लामाबाद का हश्र ओटावा के लिए आंख खोलने वाला होना चाहिए।

## साइबर ठगी का बढ़ता दायरा, सज्जनों पर संकट

(लेखक - विजय कुमार जैन)

आधुनिक संचार क्रांति के युग में मोबाइल एवं इंटरनेट जितने लाभदायक हैं उससे ज्यादा हानिकारक भी हैं। मोबाइल एवं इंटरनेट के माध्यम से भारत ही नहीं दुनिया में आए दिन साइबर ठगी की घटनाएं सुनने में आ रही है साइबर अपराध करने वालों की गैंग जानबूझकर ऐसे समय संबंधित को निशाना बनाते हैं जब वह विचार ही नहीं कर पाता और उनके द्वारा जितनी राशि की मांग की जाती है तत्काल उनके खाते में डाल देते हैं। इसके बाद पछतावा ही हाथ रहता है। मैं साइबर ठगी की कुछ घटनाओं का यहां पर उल्लेख करना चाहूंगा गुना जिले में श्री द्वारका प्रसाद शर्मा महिला बाल विकास विभाग में लिपिक हैं, इनको अपरिचित मोबाइल से फोन आया और मोबाइल नंबर का केवाईसी करने की बात कही ओटीपी पूछा और बैंक खाते से ₹16000 निकल लिये ।श्री बलवीर सिंह गुर्जर निवासी साडा कॉलोनी राघौगढ़ सेवानिवृत्त गुना तहसीलदार रीडर इनके पंजाब नेशनल बैंक शाखा साडा कॉलोनी राघौगढ़ के खाते में किसी ने ₹1 जमा किया उन्होंने जैसे ही मोबाइल खोलकर बैंक अकाउंट देखा उनके बैंक खाते से पहली बार रुपए 9970, दूसरे बार 9999 कट गए।

उन्होंने तत्काल बैंक शाखा में जाकर अपना खाता ब्लॉक कराया। रुठियाई तहसील राघौगढ़ निवासी रविंद्र सिंह परिहार के पास फोन आया और बताया कि आपका बेटा पुलिस थाने में बैठा है उन्होंने कहा कि मेरा बेटा तो नौकरी पर है उधर से कहा आपका बेटा एक लड़की के साथ होटल में अनैतिक कार्य करते हुए पकड़ा गया है। अपने बेटे को बचाना है तो तत्काल तीन लाख रुपए खाते में डालो। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा बेटे को फोन लगाओ। उन्होंने बेटे से पूछा कहां हो बेटे कहा कि मैं तो ऑफिस में हूं फिर उन्होंने जिनका फोन आया था बेटा का फोन कनेक्ट कर बात करवायी।बेटे ने उनसे भला बुरा कहा तब फोन काट दिया।एक सेवानिवृत अधिकारी जिनकी लड़की इंदौर में पढ़ती है घटना चार माह पुरानी है उनके पास फोन आया आपकी बेटी थाने में बैठी है अनैतिक स्थिति में होटल में पकड़ी है उन्होंने दूसरे नंबर से बेटी को फोन लगाया बेटी कॉलेज में थी फोन बंद था इस कारण बात नहीं हो सकी। जिनका फोन आया था उन्होंने कहा अपनी बेटी को बचाना चाहते हो तो तत्काल ₹6 लाख रुपए खाते में डालो घबराहट में उन्होंने तीन लाख रुपये खाते में भेज दिये ।फिर लड़की का फोन आया कि पापा जी फोन क्यों किया। तब उन्होंने सारी घटना बतायी। उनके साथ साइबर ठगी हो गई ।मैं स्वयं भी साइबर ठगी से होते-होते बचा फोन आया मेरे से कहा कि आपके मोबाइल नंबर की केवाईसी होना है मैंने उनसे कहा मेरा नंबर तो एयरटेल का है अब बी एस एन एल में केवाईसी क्यों हो रही है तो उधर से जवाब आया आपकी सिम पुरानी है पहले बी एस एन एल की थी ।इसलिए आपको 24 घंटे के अंदर केवाईसी करना आवश्यक है अन्यथा सिम बंद हो जाएगी ।मैंने उनसे पूछा कि मुझे क्या करना है उन्होंने कहा कि हम आपको एक प्रोफार्मा भेज रहे हैं उसमें हम जो जानकारी पूछे उनका आप मोबाइल चालू रखकर हमें जवाब देते जाएं। मैंने उनके कुछ प्रश्नों के उत्तर दिए थोड़ी देर बाद मेरी पौत्री 14 वर्षीय तन्वी जैन मेरे पास आई और बोली दादाजी मुझे ऐसा लग रहा है आप साइबर ठगी के शिकार होने वाले हैं। आप तत्काल इस नंबर को काट दें और इस नंबर को ब्लॉक कर दें। इस प्रकार में साइबर ठगी से बच पाया । साइबर ठगी की ही यह घटना मेरे मित्र श्री राघवेंद्र सिंह परिहार सेवानिवृत्ति कृषि अधिकारी राघौगढ़ ने मुझे बताया मैं ऑनलाइन दवाइयां मंगाता था। उनके लिए अपरिचित नंबर से फोन आया और कहा कि आप जिस कंपनी से दवाइयां ऑनलाइन मांगते हैं उस कंपनी ने ड्रा निकाला है ड्रा में आपके नाम कार निकली है आपको बधाईयां ।परिहार जी ने उनसे पूछा मुझे क्या करना है उन्होंने कहा कार तो हम आपके लिए कोलकाता में डिलीवरी दे देंगे या फिर आप कहेंगे तो आपके निवास पर पहुंचा देंगे। आपको मात्र इतना करना है आप रजिस्ट्रेशन के पैसे

हमारे खाते में डाल दो ।उन्होंने कहा मेरा भतीजा कोलकाता में ही सर्विस में है वह आपसे मिलेगा कहां मिलना है पता आप मुझे भेजिए दूसरी ओर से पता नहीं आया और वह साइबर ठगी से बच गये। पिछले माह एसिया के बड़े उद्योग पति ओसवाल ग्रुप लुधियाना के मालिक की भारत की संभवतः अभी तक की सबसे बड़ी सायवर ठगी हुई। यह ठगी साढ़े सात करोड़ रुपये की थी। इस सायवर ठगी का समाचार देश के अनेक समाचार पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित हुआ। वर्तमान में साइबर ठगी की घटनाओं में निरंतर वृद्धि हो रही है आम भोले भाले नागरिक उनके जाल में फंसकर अपना नुकसान कर रहे हैं। मोबाइल एवं इंटरनेट का उपयोग करते समय हर व्यक्ति की जागरूकता आवश्यक है के वाई सी के झांसे में ना आए ओटीपी ना भेजें।

(लेखक वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार एवं भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं)

(चिंतन-मनन)

## भक्त के भीतर रहते हैं कृष्ण

जब भगवान चैतन्य बनारस में हरे कृष्ण महामंत्र के कीर्तन का प्रवर्तन कर रहे थे, तो हजारों लोग उनका अनुसरण कर रहे थे।

तत्कालीन बनारस के अत्यंत प्रभावशाली और विद्वान प्रकाशानंद सरस्वती उनको भावुक कहकर उनका उपहास करते थे। कभी-कभी भक्तों की आलोचना दार्शनिक यह सोचकर करते हैं कि भक्तगण अंधकार में हैं और दार्शनिक दृष्टि से भोले-भाले भावुक हैं, किंतु यह तथ्य नहीं है। ऐसे अनेक बड़े-बड़े विद्वान पुरुष हैं, जिन्होंने भक्ति का दर्शन प्रस्तुत किया है। किंतु यदि कोई भक्त उनके इस साहित्य का या अपने गुरु का लाभ न भी उठाए और यदि वह अपनी भक्ति में एकनिष्ठ रहे, तो उसके अंतर से कृष्ण स्वयं उसकी सहायता करते हैं।अतः कृष्णभावनामृत में रत एकनिष्ठ भक्त ज्ञानरहित नहीं हो सकता। इसके लिए इतनी ही योग्यता चाहिए कि वह पूर्ण कृष्णभावनामृत में रहकर भक्ति संपन्न करता रहे। आधुनिक दार्शनिकों का विचार है कि बिना विवेक के शुद्ध ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। उनके लिए भगवान का उत्तर है- जो लोग शुद्धभक्ति में रत हैं, भले ही वे पर्याप्त शिक्षित न हों तथा वैदिक नियमों से पूर्णतया अवगत न हों, किंतु भगवान उनकी सहायता करते ही हैं। भगवान अजरुन को बताते हैं कि मात्र चिंतन से परम सत्य भगवान को समझ पाना असंभव है, क्योंकि भगवान इतने महान हैं कि कोरे मानसिक प्रयास से उन्हें न तो जाना जा सकता है, न ही प्राप्त किया जा सकता है। भले ही कोई लाखों वर्षो तक चिंतन करता रहे, किंतु यदि भक्ति नहीं करता, यदि वह परम सत्य का प्रेमी नहीं है, तो उसे कभी भी कृष्ण या परम सत्य समझ में नहीं आएंगे।परम सत्य, कृष्ण, केवल भक्ति से प्रसन्न होते हैं और अपनी अचिंत्य शक्ति से वे शुद्ध भक्त के हृदय में स्वयं प्रकट हो सकते हैं।शुद्धभक्त के हृदय में तो कृष्ण निरंतर रहते हैं और कृष्ण की उपस्थिति सूर्य के समान है, जिसके द्वारा अज्ञान का अंधकार तुरंत दूर हो जाता है।

विचार मंथन

## मणिपुर में जागी आशा की किरण

(लेखक - सनत जैन)

17 महीने के बाद मणिपुर में एक आशा की किरण देखने को मिल रही है। मणिपुर के मैत्री कुकी और नगा समुदाय के नेताओं ने एक मंच पर आकर मणिपुर की हिंसा और मणिपुर में विभिन्न समुदायों के बीच में जो विवाद है उसको लेकर बातचीत की है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इस बार सही तरीके से पहल की है। मेतई कुकी और नगा समुदाय के 20 विधायकों को दिल्ली बुलाया गया और समस्या का समाधान निकालने की कोशिश की गई। इस बैठक में गृहमंत्री और मणिपुर के मुख्यमंत्री प्रत्यक्ष तौर पर शामिल नहीं हुए। विधायकों के साथ खान मार्केट स्थित इंटेलिजेंस ब्यूरो के कार्यालय में यह बैठक आयोजित हुई। इस अहम बैठक में पूर्वोत्तर के संयुक्त निदेशक राजेश कांबले, भाजपा समन्वयक संबित पात्रा, केंद्र सरकार के सुरक्षा सलाहकार एके मिश्रा और मणिपुर के 20 विधायक इस बैठक में शामिल हुए थे। बैठक के दौरान सभी समुदाय के विधायकों ने अपनी-अपनी राय रखी। उनकी जो मांगें थीं और जो सुझाव दिए गए थे वो भी उन्होंने सभी के सामने रखे। इस तरह से पिछले डेढ़ साल में पहली बार मणिपुर में विभिन्न समुदाय के लोगों को अपनी बात सही मंच में रखने का अवसर मिला है। पिछले 17 महीनों से जो तनाव बना हुआ था, आपस में बातचीत तक नहीं हो रही थी, मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह को लेकर विधायकों को जो शिकायतें थीं वह भी खुलकर उन्होंने सामने रखीं। लगभग डेढ़ घंटे तक चली इस अहम बैठक के दौरान कुकी समुदाय के विधायकों ने अपनी तीन मांगें रखीं हैं। इनमें पहली मांग थी कि भारत सरकार मणिपुर की लीडरशिप को बदले और मुख्यमंत्री पद से तुरंत बीरेन सिंह को हटाया जाए। सूत्र बताते हैं कि इस मांग को कुकी समुदाय ने जरुर उठाई लेकिन उसका समर्थन बैठक में शामिल अन्य विधायकों ने भी किया। कुकी समुदाय की दूसरी मांग थी कि कुकी इलाकों में निष्पक्ष प्रशासनिक अमले की तैनाती की जाए और तीसरी मांग हथियारबंद समूह को गैर कानूनी संगठन घोषित कर उन पर तत्काल कार्रवाई की जाए।

मणिपुर विधानसभा में कुल 60 विधायक हैं। इनमें आदिवासी समुदाय के 10 नगा और 10 कुकी समुदाय के विधायक हैं। मंगलवार को दिल्ली में हुई बैठक में 9 आदिवासी विधायक शामिल हुए थे। केंद्रीय गृह मंत्रालय और राज भवन ने इस बैठक के लिए प्रयास किया था जो सफल होते दिखे हैं। मणिपुर में 28 मैतई विधायक हैं। इनमें से 17 विधायकों ने विधानसभा अध्यक्ष से मिलकर मणिपुर में शांति स्थापित करने के लिए पहल की थी। कुकीज समुदाय के सभी संगठनों ने मिलकर कुकी काउंसलिंग बनाई। इसका मकसद था कि सभी समुदाय के लोगों की बात को आम राय के साथ काउंसिल में रखी जा सके। केंद्र सरकार भी काउंसिल से बात करने के लिए सहमत हुई। काउंसिल में नगा समुदाय को भी प्रतिनिधित्व दिया गया। 17 माह बाद सही तरीके से मणिपुर में हिंसा को रोकने और समस्या के समाधान में सही दिशा में प्रयास शुरू किया गया है। इस बैठक से मणिपुर के मुख्यमंत्री बीरेन सिंह को दूर रखा गया है। इसके पीछे जो लॉजिक बताया गया वह यह था कि मुख्यमंत्री बैठक से दूर रहे तब जाकर इस बैठक के लिए उपयुक्त माहौल बन पाया। यदि यह सच है तो फिर अब देखना यह होगा कि केंद्र सरकार इस मामले को किस तरह से सुलझाती है। मणिपुर के सभी समुदायों के बीच में लगातार हिंसा के बाद अब एक आशा की किरण दिखाई दी है और कहा जा सकता है कि अब आपसी बातचीत के जरिए तीनों समुदायों के बीच के विवाद को सुलझाया जा सकेगा। केंद्र सरकार को अब इस मामले में पहल करनी है। इसके लिए मणिपुर के मुख्यमंत्री बीरेन सिंह को बदला भी जा सकता है। समस्या के समाधान निकालने के लिए केंद्र सरकार इससे पहले एक मौका खो चुकी है। मणिपुर में राज्यपाल के रूप में अनसुईया उइके ने अपने स्तर पर सभी समुदाय के साथ बातचीत करके विवाद को सुलझाने की चेष्टा की थी, लेकिन केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा उनका उपयोग उस समय नहीं किया गया। केंद्रीय गृह मंत्रालय मुख्यमंत्री के कहने पर आंख मूंदकर कार्रवाई करता रहा, जिसके कारण बार-बार हिंसा फैलती रही।

# कोणार्क सूर्य मंदिर के शिखर पर लगे पत्थर के बारे में जो बताया जाता है वह कितना सच है

**ओडिशा** के कोणार्क शहर में प्रतिष्ठित सूर्य मंदिर यूनेस्को की विश्व धरोहरों में शामिल हैं। वैसे तो इस मंदिर का निर्माण हजारों वर्षों पूर्व हुआ माना जाता है लेकिन कई इतिहासकार मानते हैं कोणार्क सूर्य मंदिर का निर्माण 1253 से 1260 ई. के बीच हुआ था। भारत के सुप्रसिद्ध मंदिरों में शुमार कोणार्क सूर्य मंदिर में सूर्य देव को रथ के रूप में विराजमान किया गया है तथा पत्थरों को उत्कृष्ट नक्काशी के साथ उकेरा गया है। स्थानीय लोग यहां सूर्य-भगवान को बिरंचि-नारायण भी कहते थे।

## कोणार्क सूर्य मंदिर की खासियत

केसरी वंश के राजा द्वारा निर्मित इस मंदिर की शिल्पकला दर्शनीय है। मंदिर का निर्माण सूर्य के काल्पनिक रथ का रूप देकर किया गया है। सूर्य मंदिर चौकोर परकोटे से घिरा है। इसके तीन तरफ ऊंचे-ऊंचे प्रवेशद्वार हैं। पूरब दिशा में मुख्य द्वार है जिसके सामने समुद्र से सूर्य उदय होता दिखाई पड़ता है। इसमें सूर्य भगवान को अपने विशाल चौबीस पहियों तथा सात घोड़ों के रथ पर सवार होकर दिनभर की यात्रा के लिए निकलते हुए दिखाया गया है। रथ के सात घोड़ों को सूर्य के प्रकाश के सात रंगों तथा चौबीस पहियों की परिक्रमा के प्रतीक रूप में दिखाया गया है। कोणार्क सूर्य मंदिर ओडिशा के स्वर्णकाल तथा कलिंग शैली की शिल्पकला का प्रतीक है। इस मंदिर की दीवारों पर पत्थर की नक्काशी की हुई अनेक आकर्षक प्रतिमाएं हैं। सूर्य भगवान के रथ की अलंकृत नक्काशी वाला यह बेजोड़ मंदिर भव्यता में अद्भुत है।

## कोणार्क मंदिर से जुड़ी अजब कथा

कई कथाओं में इस प्रकार का उल्लेख मिलता है कि कोणार्क सूर्य मंदिर के शिखर पर एक चुम्बकीय पत्थर लगा है जिसके प्रभाव से, कोणार्क के समुद्र से गुजरने वाले सागरपोत इस ओर खिंचे चले आते हैं, जिससे उन्हें भारी क्षति हो जाती है। एक अन्य कथा में उल्लेख मिलता है कि शिखर पर लगे इस पत्थर के कारण पोतों के चुम्बकीय दिशा निरूपण यंत्र सही दिशा नहीं बता पाते थे इसलिए कुछ आक्रांता इस पत्थर को निकाल कर ले गये जिससे मंदिर को नुकसान हुआ था। हालांकि यह सब कही-सुनी बातें हैं इसका कोई ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।

## कोणार्क मंदिर देखने कैसे आएं

यदि आप भी कोणार्क सूर्य मंदिर आना चाहते हैं तो भुवनेश्वर और पुरी से यहां आसानी से आ सकते हैं। ओडिशा पर्यटन विकास निगम की ओर से यहां भ्रमण की भी व्यवस्था कराई जाती है। वैसे कोणार्क में रहने की भी पर्याप्त व्यवस्था है। पर्यटक चाहें तो भुवनेश्वर से यहां आकर भ्रमण कर के उसी दिन वापस लौट सकते हैं। कोणार्क में रहने के लिए पर्यटन विभाग के लाज, टूरिस्ट बंगला और निरीक्षण भवन भी हैं।

## कोणार्क का समुद्र तट भी अवश्य देखें

कोणार्क का समुद्र तट विश्व के सुंदरतम तटों में से एक माना गया है। यहां समुद्र के रेतीले गुट का आनंद उठाया जा सकता है। समुद्र की खूबसूरती निहारते हुए उठती-गिरती लहरों को देखना मंत्रमुग्ध कर देता है। यह एक सुंदर पिकनिक स्थल भी है। समुद्र तट सूर्य मंदिर से तीन किलोमीटर दूर है। इसके अलावा कोणार्क की दुर्लभ कलाकृतियों का संग्रह देखने के लिए मंदिर के पास ही स्थित संग्रहालय भी जा सकते हैं।

# गुजरात का यह मंदिर दिन में दो बार हो जाता है गायब, जानिए क्या है रहस्य

**भारत** में कई हिस्सों में भगवान शिव के कई प्राचीन मंदिर हैं जहाँ दूर-दूर से लोग दर्शन करने के लिए आते हैं। लेकिन आज हम आपको भगवान शिव के एक ऐसे अनोखे मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं जो दिन में दो बार गायब हो जाता है। जी हाँ, गुजरात में स्थित स्तंभेश्वर मंदिर को 'गायब मंदिर' भी कहा जाता है। देश-विदेश से शिव भक्त अपनी मनोकमना पूर्ण होने की कामना के साथ इस मंदिर में आते हैं। आइए जानते हैं भगवान भोलेनाथ के इस अद्भुत मंदिर के बारे में -

## वडोदरा के पास स्थित है स्तंभेश्वर मंदिर

स्तंभेश्वर मंदिर गुजरात के जम्बूसार तहसील में कवि कंबोई गांव में स्थित है। यह मंदिर वडोदरा से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित होने के कारण वडोदरा के पास सबसे लोकप्रिय दार्शनिक स्थलों में से एक है। यह मंदिर लगभग 150 साल पुराना है और इसे %गायब मंदिर% भी कहा जाता है। सालभर मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहता है। खासतौर पर सावन के महीने में इस मंदिर में हजारों की संख्या में श्रद्धालु दूर-दूर से महादेव के दर्शन करने के लिए यहां आते हैं।

## स्कंद पुराण में मिलता है उल्लेख

स्कन्द पुराण में दिए गए उल्लेख के अनुसार स्तम्भेश्वर मंदिर को भगवान कार्तिकेय के ताड़कासुर नाम के राक्षस को नष्ट करने के बाद स्थापित किया था।

कहा जाता है कि राक्षस ताड़कासुर भगवान शिव का बहुत बड़ा भक्त था। उसने भगवान को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या कीऔर भोलेनाथ ने उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसे एक वरदान मांगने को कहा। तब ताड़कासुर ने आशीर्वाद माँगा कि भगवान शिव के छह दिन के पुत्र के अलावा कोई भी उसे मार न सके। उसकी इच्छा पूरी होने के बाद, ताड़कासुर ने तीनों लोकों में हाहाकार मचा दिया। तब ताड़कासुर के अत्याचार को समाप्त करने के लिए भगवान शिव ने अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से भगवान कार्तिकेय की रचना की। ताड़कासुर को मारने वाले भगवान कार्तिकेय भी उसकी शिव भक्ति से प्रसन्न थे। इसलिए, प्रशंसा के संकेत के रूप में, उन्होंने उस स्थान पर एक शिवलिंग स्थापित किया जहां ताड़कासुर का वध किया गया था।

एक अन्य संस्करण के अनुसार, ताड़कासुर को मारने के बाद भगवान कार्तिकेय खुद को दोषी महसूस कर रहे थे क्योंकि ताड़कासुर राक्षस होने के बाद भी भगवान शिव का भक्त था। तब भगवान विष्णु ने कार्तिकेय को यह कहते हुए सांत्वना दी कि आम लोगों को परेशान करके रहने वाले राक्षस को मारना गलत नहीं है। हालाँकि, भगवान कार्तिकेय शिव के एक महान भक्त को मारने के अपने पाप से मुक्त होना चाहते थे। इसलिए, भगवान विष्णु ने उन्हें शिव लिंग स्थापित करने और क्षमा के लिए प्रार्थना करने की सलाह दी।

## मंदिर के गायब होने के पीछे है यह वजह

स्तंभेश्वर मंदिर के गायब होने के पीछे की वजह प्राकृतिक है। दरअसल, यह मंदिर समुद्र के किनारे से कुछ मीटर की दूरी पर स्थित है। इसलिए दिन में समुद्र का स्तर इतना बढ़ जाता है कि मंदिर जलमग्न हो जाता है। फिर कुछ जो देर में जल का स्तर घट जाता है जिससे मंदिर फिर से दिखाई देने लगता है से प्रकट होता है। चूंकि समुद्र का स्तर दिन में दो बार बढ़ जाता है इसलिए मंदिर हमेशा सुबह और शाम के समय कुछ देर के लिए गायब हो जाता है। इस नज़ारे को देखने के लिए श्रद्धालु दूर-दूर से इस मंदिर में आते हैं।

# बिना तेल और घी के जलता है दीया, तिरुपति बालाजी मंदिर से जुड़े चमत्कारी रहस्यों के बारे में कितना जानते हैं आप?

**भारत** में एक ऐसा मंदिर मौजूद है जहाँ भगवान स्वयं विराजमान है। यह मंदिर है भगवान तिरुपति बालाजी का जिन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। तिरुपति वेंकटेश्वर बालाजी मन्दिर भारत के सबसे प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में से एक है। तिरुमला की पहाड़ियों पर बना श्री वैंकटेश?वर बालाजी मंदिर आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के तिरुपति में स्थित है। यह मंदिर समुद्र तल से 3200 फीट ऊंचाई पर स्थित है और तिरुपति के सबसे बड़े आकर्षण का केंद्र है। कहा जाता है जो भी व्यक्ति एक बार यहाँ दर्शन कर ले उसके भाग खुल जाते हैं। इस मंदिर की लोकप्रियता से हर कोई वाकिफ है पर क्या आप मंदिर के चमत्कारी रहस्यों के बारे में जानते हैं। आज हम आपको इन्हीं रहस्यों के बारे में बताने वाले हैं-

मान्यता है कि जब भगवान की पूजा की जाती है तो उनकी मूर्ति मुस्कुराने लगती है। भगवान तिरुपति वेंकटेश्वर बालाजी की मूर्ति में माता लक्ष्मी भी समाहित है। मान्यता है कि भगवान तिरुपति वेंकटेश्वर की मूर्ति इस मंदिर में स्वयं प्रकट हुई थी।

कहा जाता है भगवान तिरुपति वेंकटेश्वर बालाजी की मूर्ति पर लगे हैं बाल असली हैं। यह बाल कभी भी उलझते नहीं हैं और हमेशा मुलायम रहते हैं।

जब आप मंदिर के गर्भ गृह के अंदर जायेंगे तो ऐसा लगेगा कि भगवान श्री वेंकेटेश्वर की मूर्ति गर्भ गृह के मध्य में स्थित है, पर जब आप गर्भ गृह से बाहर आकर मूर्ति को देखेंगे तो प्रतीत होगा कि भगवान की प्रतिमा दाहिनी तरफ स्थित है।

तिरुपति वेंकटेश्वर बालाजी मंदिर समुद्र तल से 3200 फीट ऊंचाई पर स्थित है लेकिन फिर भी भगवान की मूर्ति से समुद्र की आवाजें सुनाई देती हैं। यहाँ के लोगों का मानना है कि भगवान की यह मूर्ति समुद्र से प्रकट हुई थी इसलिए इससे समुद्र की आवाज सुनाई देती है।

तिरुपति वेंकटेश्वर बालाजी मंदिर के द्वार पर एक छड़ी रखी हुई है। इस छड़ी को लेकर अनेक पौराणिक कथाएं प्रचलित है। एक कथा के अनुसार जब भगवान विष्णु धरती पर माता लक्ष्मी को ढूंढ़ने आये थे तो यह छड़ी उन्हें उनका पता बता रही थी।

ऐसी मान्यता है कि यह वहीं छड़ी है जिससे बचपन में भगवान वेंकटेश्वर जी को चोट लगी थी। चोट का निशान आज भी उनकी मूर्ति के चेहरे पर है। इसलिए हर शुक्रवार उनके चेहरे पर चन्दन का लेप लगाया जाता है।

श्री तिरुपति वेंकटेश्वर बालाजी मंदिर में श्रृंगार, प्रसाद के चढ़ाये जाने वाली सामग्री तिरुपति बालाजी के गांव से आती है। यह गांव मंदिर से 23 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और यहाँ बाहरी व्यक्ति के प्रवेश पर प्रतिबंध है।

श्री वेंकेटेश्वर बालाजी मंदिर में एक ऐसा दीया रखा हुआ है जो हमेशा जलता रहता है और चौंकाने वाली बात यह है कि इस दीपक में कभी भी तेल या घी नहीं डाला जाता। दीपक को सबसे पहले किसने और कब प्रज्वलित किया था यह बात अब तक रहस्य बनी हुई है।

# सर्दियों में लेना है स्नोफॉल का मजा तो जरूर जाएं भारत की इन 5 खूबसूरत जगहों पर

**भारत** में कई ऐसी जगहे हैं जो अपनी खूबसूरत वादियों और सर्दियों में बर्फबारी के लिए दुनियाभर में मशहूर हैं। अगर आप अपना विंटर वेकेशन प्लान कर रहे हैं और इस बार परिवार के साथ बर्फबारी का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो आज हम आपको ऐसी जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं आप स्नोफॉल का मजा ले सकते हैं-

शिमला: स्नोफॉल का जिक्र होते ही हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला का नाम सबसे पहले जहन में आता है। यह स्नोफॉल के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। यहां के हरे भरे पहाड़, ऊंची चोटियां ठंड के दिनों में बर्फ से पूरी तरह ढंककर और भी खूबसूरत दिखते हैं। शिमला को लॉन्ग मून नाइट्स यानी लंबी चांदनी रातों का मौसम भी कहा जाता है। दिसंबर से फरवरी के बीच यहां बर्फबारी का आनंद लिया जा सकता है। इस मौसम में आप यहां स्कींग का भी मज़ा ले सकते हैं। शिमला में आइस स्केटिंग दिसंबर से फरवरी तक होती है।

गुलमर्ग: धरती के स्वर्ग जम्मू-कश्मीर में स्थित गुलमर्ग बेहद खूबसूरत जगह है और यहां बर्फबारी का आनंद लेने का अनुभव बहुत खास होता है। सर्दियों के मौसम में गुलमर्ग में चारों तरफ बस बर्फ ही बर्फ दिखती है और इसकी खूबसूरती में चार चांद लग जाते हैं। सर्दियों के मौसम में गुलमर्ग में स्कीइंग करने वालों की भी भीड़ जुटती है। यहां की कुदरती खूबसूरती आपका मन मोह लेगी।

औली: उत्तराखंड का सबसे पुराना शहर औली बेहद सुंदर है। बर्फबारी के समय यह किसी स्वपनलोक सा दिखता है। औली भी अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ स्कीइंग के लिए मशहूर है। यहां देवदार पेड़ों की लंबी कतार है। बर्फ से ढके जंगलों के बीच सैर करके आप अपनी यात्रा को यादगार बना सकते हैं।

कुफरी: शिमला के अलावा हिमाचल प्रदेश में स्थित कुफरी भी स्नोफॉल के दौरान बहुत सुंदर दिखता है और लोग यहां स्कींग के लिए आते हैं। सर्दियों के मौसम में यहां सैलानियों की काफी भीड़ जुटती है। यहां लोग पहाड़ों के बीच रोमांच का मज़ा लेते हैं। हाइकिंग, स्कीइंग, खूबसूरत नजारे, देवदार के लंबे-लंबे पेड़ और सुहानी सर्द हवा का मज़ा लेना है तो कुफरी ज़रूर जाएं।

कुल्लू-मनाली: पॉप्युलर हनीमून डेस्टिनेशन कुल्लू मनाली में भी बर्फबारी का मज़ा लिया जा सकता है। हिमाचल प्रदेश का यह हिल स्टेशन भी लोगों के बीच काफी लोकप्रिय है। रोमांच के शौकीनों की तो यह पहली पसंद है। दिसंबर जनवरी में आकर यहां आप भी स्नोफॉल का आनंद ले सकते हैं।

## अदाणी ग्रीन एनर्जी ने डॉलर बॉन्ड से धन जुटाने की योजना रोकी

**मुंबई ।** रिन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में काम करने वाली अदाणी ग्रुप की कंपनी, अदाणी ग्रीन एनर्जी ने डॉलर बॉन्ड के माध्यम से धन जुटाने की योजना को रोक दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक, निवेशकों ने कंपनी की अपेक्षा से अधिक यील्ड पर बोली लगाई, जो कंपनी के लिए स्वीकार्य नहीं थी। इस कारण कंपनी ने धन जुटाने की योजना को रद्द कर दिया। एक बैंकर के मुताबिक, प्रारंभिक मार्गदर्शन के तहत 20 साल की परिपक्वता अवधि के लिए 7 प्रतिशत यील्ड की पेशकश की गई थी। मामले से जुड़े बैंकर ने कहा, कुछ निवेशक उच्च यील्ड की मांग कर रहे थे, जो अडानी समूह के हिसाब से सही नहीं थी, इसलिए उन्होंने सौदे को रद्द करने का निर्णय लिया।' दूसरे बैंकर ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों से संबंधित व्यापक बाजार अनिश्चितता और घरेलू राजनीतिक जोखिमों के कारण निवेशक अधिक यील्ड की मांग कर रहे थे, जो बॉन्ड जारीकर्ताओं की पुनर्भुगतान क्षमता को प्रभावित कर सकता है। मार्च में, अदाणी ग्रीन एनर्जी ने करीब 3 अरब डॉलर की बोलियां प्राप्त करने के बाद 18-वर्षीय बॉन्ड के माध्यम से 40.9 करोड़ डॉलर जुटाए। ताजा बॉन्ड इश्यू का नेतृत्व अदाणी ग्रीन की यूनिट्स - अदाणी हाइब्रिड एनर्जी जैसलमेर वन, अदाणी हाइब्रिड एनर्जी जैसलमेर टू, अदाणी हाइब्रिड एनर्जी जैसलमेर फोर और अदाणी सोलर एनर्जी जैसलमेर वन ने एक संरचित बॉन्ड डील के माध्यम से किया था।

## क्यूआईपी से अडाणी ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनी ने कमाए 4,200 करोड़ रुपए

**नई दिल्ली।** अडाणी ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनी, अडाणी एंटरप्राइजेज लिमिटेड ने अपने संस्थागत शेयर बिक्री या क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल प्लेसमेंट (क्यूआईपी) के समापन का ऐलान किया है। क्यूआईपी से अडाणी ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनी ने 4,200 करोड़ कमाए हैं। अडाणी एंटरप्राइजेज ने 9 अक्टूबर को संस्थागत शेयर बिक्री की शुरुआत की थी। अडाणी एंटरप्राइजेज ने क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स को 1 रुपए के फेस वैल्यू वाले 1.41 करोड़ इक्विटी शेयरों के निर्गम और आवंटन को मंजूरी दे दी। कंपनी ने एक एक्सचेंज फाइलिंग में कहा कि क्यूआईपी के लिए इश्यू प्राइस 2,962 रुपए प्रति शेयर तय किया है, जो कि 3,117.47 रुपए प्रति शेयर के फ्लोर प्राइस से पांच फीसदी की छूट है। मंगलवार के क्लोजिंग प्राइस की तुलना में, इश्यू प्राइस पर दी गई छूट फ्लोर प्राइस की तुलना तकरीबन समान ही है। एक्सचेंज फाइलिंग में कंपनी ने बताया कि क्वांट म्यूचुअल फंड अडाणी एंटरप्राइजेज लिमिटेड के हाल ही में खत्म हुए क्यूआईपी में सबसे बड़े प्रतिभागी के रूप में उभरा है, जिसने कुल इश्यू शेयरों का करीब 47 फीसदी हिस्सा प्राप्त किया। क्वांट म्यूचुअल फंड की फ्लैगशिप स्कीम, क्वांट स्मॉल कैप फंड ने क्यूआईपी का 17.41 फीसदी का बड़ा आवंटन हासिल किया है। अन्य क्वांट योजनाएं जैसे क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड, क्वांट एक्टिव फंड, और क्वांट फ्लेक्सी कैप फंड ने भी क्यूआईपी में 7 फीसदी से ज्यादा की अहम हिस्सेदारी ली है। क्यूआईपी के अन्य प्रमुख प्रतिभागियों में विनरो कमर्शियल (इंडिया) लिमिटेड शामिल है, जिसने अनुमानित 525 करोड़ रुपए की राशि के लिए 12.5 फीसदी हिस्सेदारी ली और ट्री लाइन एशिया मास्टर फंड (सिंगापुर) प्राइवेट लिमिटेड, जिसे कुल आवंटन का 5.95 फीसदी हासिल हुआ। इसके अतिरिक्त, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड को 5.06 फीसदी का आवंटन मिला, जिसके लिए अनुमानित निवेश 212 करोड़ रुपए से ज्यादा का है।

## सोने ने लगाई छलांग, 76700 रुपए प्रति 10 ग्राम पार, चांदी भी चमकी

**नई दिल्ली।**

सोने ने बुधवार को ऑल टाइम हाई का रेकॉर्ड बना दिया। एमसीएक्स पर सोने की कीमत 76700 रुपए प्रति 10 ग्राम पार कर गई। मंगलवार के मुकाबले बुधवार को इसमें 363 रुपए की तेजी आई। इसके साथ 10 ग्राम सोने की कीमत 76723 रुपए हो गई। यह पहली बार है जब सोने ने रिकॉर्ड बना लिया है। बुधवार को चांदी में भी उछाल आया। सोने की कीमत में पिछले दो दिनों से गिरावट देखी जा रही थी लेकिन बुधवार को तेजी आई। मंगलवार को सोना 76360 रुपए पर बंद हुआ था। बुधवार को यह फ्लैट कीमत पर खुला लेकिन इसके बाद इसमें पंख लग गए। एक समय यह 76750 रुपए प्रति 10 ग्राम पर आ गई थी। हालांकि बाद में इसमें उतार-चढ़ाव जारी रहा। बुधवार को चांदी भी चमकी। एमसीएक्स पर दोपहर तक यह 544 रुपए बढ़कर 92194 रुपए प्रति किलो पहुंच गई। मंगलवार को यह 91623 रुपए प्रति किलो पर बंद हुई थी। इससे पहले दो दिन तक इसमें भी मंदी थी। बुधवार दोपहर तक इसमें आधे फीसदी से ज्यादा उछाल आ गया। हालांकि यह अभी अपनी उच्चतम कीमत से कम है। इस महीने की शुरुआत में चांदी की कीमत प्रति किलो 93 हजार रुपए प्रति किलो पार कर गई थी। सोने की कीमत पिछले 15 दिनों में डेढ़ फीसदी से ज्यादा बढ़ गई है। त्योहारी और शादियों के सीजन को देखते हुए सोना महंगा हो सकता है। जानकार बताते हैं कि अगले साल की शुरुआत में सोना 80 हजार रुपए प्रति 10 ग्राम हो सकता है। वहीं मिडिल ईस्ट में तनाव और अमेरिकी केंद्रीय बैंक की ओर से ब्याज दर कम होने की संभावना को

देखते हुए इसमें और तेजी आ सकती है। एक तरफ भारत में सोने की कीमत में तेजी आई तो वहीं वैश्विक स्तर पर इसमें गिरावट आई है। बाजार विश्लेषकों ने कहा कि कारोबारियों द्वारा ताजा सौदों की लिवाली करने के कारण सोने की कीमत में तेजी आई है। वहीं अमेरिका में सोने में गिरावट आई है। यहां सोना 0.53 फीसदी की गिरावट के साथ 2,676.57 डॉलर प्रति औंस हो गया।

## रुपया बढ़त के साथ बंद

**मुंबई ।** अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बुधवार को भारतीय रुपया तीन पैसे की बढ़त के साथ ही 84.03 पर बंद हुआ । आज सुबह रुपय 84.01 पर खुला । वहीं गत दिवस रुपया एक पैसे की बढ़त के साथ ही 84.04 रुपये पर बंद हुआ था । शेयर बाजार के कमजोर कारोबार से भी आज रुपये की बढ़त पर अंकुश रहा। सकारात्मक घरेलू बाजारों से मिलने वाला समर्थन विदेशी पूंजी की निकासी से खत्म हो रहा था। इसके अलावा कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी से भी रुपये पर दबाव आया । इससे भारत का पहले से ही चिंताजनक व्यापार घाटा और बढ़ गया है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया शुरुआती कारोबार में 84.06 प्रति डॉलर पर खुला और फिर शुरुआती सौदों के बाद 84.07 प्रति डॉलर पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव के मुकाबले दो पैसे की गिरावट दिखाता है। रुपया सोमवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 84.05 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दिखापने वाला डॉलर सूचकांक 0.05 फीसदी की गिरावट के साथ 103.25 पर रहा।

## बीईएमएल को मिला ठेका.....दो हाई-स्पीड ट्रेन सेट्स का डिज़ाइन बनने का

**मुंबई ।** सरकारी कंपनी बीईएमएल को 867 करोड़ का कॉन्ट्रैक्ट मिला है, इसके तहत दो हाई-स्पीड ट्रेन सेट्स का डिज़ाइन, निर्माण और कमीशनिंग होगा। यह पहली बार है जब इस तरह का काम देश में ही किया जाएगा। यह ठेका चेन्नई स्थित इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईसीएफ) द्वारा दिया गया है। बीईएमएल ने एक्सचेंजों को जानकारी दी, ÷प्रत्येक कार की कीमत 7.86 करोड़ है और टोटल कॉन्ट्रैक्ट वैल्यू 866.87 करोड़ है। इसमें डिजाइन खर्च, एक बार की विकास लागत, गैर-आवर्ती शुल्क, और जिग्स, टूलिंग, फिक्स्चर, और टेस्टिंग सुविधाओं की लागत शामिल है, जो भारत की भविष्य की सभी हाई-स्पीड रेल परियोजनाओं में उपयोग की जाएगी। यह प्रोजेक्ट भारत की हाई-स्पीड रेल यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है और इसमें 280 किमी प्रति घंटा की टेस्ट स्पीड के साथ पहली स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित ट्रेन सेट्स देखने को मिलेंगी। बीईएमएल के बेंगलुरु रेल कोच कॉम्प्लेक्स में यह सेट्स तैयार होने है और इनकी डिलीवरी 2026 के अंत तक निर्धारित है। जापानी बुलेट ट्रेन हासिल करने के लिए हुई वार्ताओं में असफलता के बाद, रेलवे ने अपनी खुद की ट्रेनें बनाने का फैसला किया है। हालांकि, बीईएमएल द्वारा तैयार ट्रेनें मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के लिए होंगी या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है। बीईएमएल के अनुसार, पूरी तरह एयर-कंडीशंड इन ट्रेनों में रेक्लाइनिंग और रोटेटेबल सीटें होंगी, विशेष प्रावधान विकलांग यात्रियों के लिए होंगे, और ऑनबोर्ड इंफोटेनमेंट सिस्टम की सुविधा भी मिलेगी। पिछले एक साल में रेलवे ने राजस्थान में स्टैंडर्ड गेज ट्रेनों के परीक्षण के लिए एक ट्रैक तैयार किया है, ताकि हाई-स्पीड ट्रेनों के निर्माण में अपनी क्षमता को साबित किया जा सके। रेलवे का उद्देश्य वंदे भारत ट्रेनों को ब्रॉड गेज से बदलकर स्टैंडर्ड गेज में तब्दील करना है, जो वैश्विक स्तर पर सबसे ज्यादा उपयोग में आने वाला गेज है, और इन्हें निर्यात भी किया जा सके।

# शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

**मुम्बई ।**

घरेलू शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर बंद हुआ । बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों और बिकवाली से आई है । वहीं गत दिवस भी बाजार गिरावट पर बंद हुआ था। । आज प्रमुख कंपनियों के दूसरी तिमाही के परिणाम निराशाजनक और विदेशी निवेशकों के घरेलू बाजार से पैसा निकालने से भी ये नीचे आया है।

इसी कारण दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर अधारित बीएसई सेंसेक्स अंत में 0.39 फीसदी करीब 318.76 अंक टूटकर 81,501.36 पर बंद हुआ । वहीं इसी प्रकार 50 शेयरों पर आधारित नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 भी 0.34 फीसदी तकरीबन 86.05 अंक फिसलकर 24,971.30 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स की कंपनियों में महिंद्रा एंड महिंद्रा (एमएंडएम) का शेयर सबसे अधिक 2.87 फीसदी गिरा । इसके अलावा अदाणी पोर्ट्स, इन्फोसिस, जेएसडब्ल्यू स्टील, टाटा मोटर्स, कोटक बैंक, आईटीसी, टाइटन, इंडसइंड बैंक, अल्ट्रा सीमेंट, नेस्ले इंडिया, आईसीआईसीआई बैंक के शेयर भी नीचे आये ।

वहीं दूसरी ओर एचडीएफसी बैंक का शेयर सबसे ज्यादा 0.92 फीसदी उछला । इसके अलावा भारती एयरटेल, रिलायंस, एशियन पेंट्स, स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया के शेयर भी उछले हैं।

बाजार जानकारों के अनुसार वैश्विक बाजारों से मिले कमजोर रुझान, आईटी स्टॉक्स और ऑटो कंपनियों के शेयरों में गिरावट और विदेशी निवेशकों की निकाषी हावी हाने से घरेलू बाजार में गिरावट आई।

दूसरी ओर विदेशी निवेशकों की बिकवाली जारी रही। विदेशी संस्थागत निवेशकों ने गत दिवस 1,748.71 करोड़ रुपये की इक्विटी बेची।

इससे पहले आल सुबह घरेलू शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर खुला। सप्ताह के तीसरे कारोबारी दिन एशियाई बाजारों से मिले कमजोर रुख से बाजार में ये गिरावट दर्ज की गयी। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 198 अंक करीब 0.24 फीसदी नीचे आकर 81,621 पर खुला। वहीं दूसरी ओर निफ्टी-48 अंक तकरीबन 0.19 फीसदी फिसलकर 25,009 पर खुला। वहीं गिफ्ट निफ्टी से बाजार की कमजोर शुरुआत दिख रही है। सुबह गिफ्ट निफ्टी फ्यूचर्स करीब 49 अंक फिसलकर 25,069 पर कारोबार कर रहा था।

इससे पहले गत दिवस अमेरिकी शेयर बाजार रिकॉर्ड ऊंचाई से नीचे आया। इस दौरान वॉल स्ट्रीट के तीनों प्रमुख इंडेक्स नुकसान में रहे। नैस्डैक कंपोजिट में सबसे ज्यादा गिरावट दर्ज की गई। यह इंडेक्स 1.01 नीचे आया। एसएंडपी 500 0.76 फिसला, डॉव जोन्स भी नुकसान में रहा।

आज शुरुआती कारोबार में एशियाई बाजारों में भी गिरावट आई है। यह इंडेक्स 1.85 फीसदी गिरा, टॉपिक्स 1.13 फीसदी नीचे आया, ऑस्ट्रेलिया का एसएंडपी /एएसएक्स 200 0.4 फीसदी की गिरावट के साथ खुला, जबकि कोरिया का कोस्पी 1.22 फीसदी और कोस्डाक 0.93 फीसदी गिरा। पिछले कारोबारी सत्र में बाजार में गिरावट दर्ज की गयी थी।

## 21 को खुलेगा वारी एनर्जीज़ का आईपीओ, जीएमपी 85 फीसदी के ऊपर होगा

### - हुंडई के आईपीओ से निवेशक खुश नहीं, प्रीमियम हर दिन हो रहे कम

**नई दिल्ली।**

हुंडई का आईपीओ खुल गया, लेकिन निवेशक खुश नहीं हैं, क्योंकि इस स्टॉक के लिए ग्रे मार्केट में प्रीमियम हर दिन कम हो रहे हैं, लेकिन चिंता करने की जरुरत नहीं। वारी एनर्जीज़ का आईपीओ सोमवार को खुलने वाला है। इसका प्राइस बैंड तय हो गया है और सबसे अच्छी बात ये है कि ग्रे मार्केट में इसका प्रीमियम जीएमपी 85 फीसदी तक उछल गया है। वारी एनर्जीज़ ने अपने आईपीओ के लिए 1,427 से 1,503 रुपए प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया है। यह आईपीओ 21 अक्टूबर सोमवार को खुलेगा और 23 अक्टूबर तक निवेशक इसमें बोली लगा सकेंगे। निवेशक न्यूनतम 9 शेयरों की एक लॉट में बोली लगा सकते हैं और इसके बाद 9 के मल्टीप्लाई (18, 27, 36ज) की संख्या में शेयरों की बोली लगा सकते हैं। आईपीओ वॉच के मुताबिक हुंडई का ग्रे-मार्केट प्रीमियम बुधवार को कुछ उछला है मंगलवार को यह 45 रुपए था, बुधवार को यह 65 रुपए पर पहुंच गया। हुंडई में बोली लगाने के केवल दो दिन बचे हैं। हालांकि सुबह हुंडई का आईपीओ केवल 22 फीसदी ही सबस्क्राइब हुआ था। मंगलवार को पूरे दिन में यह 18 फीसदी ही बोलियां हासिल कर सका था। इस आईपीओ में कंपनी की फ्रेश इक्विटी शेयरों की बिक्री के जरिए से 3,600 करोड़ रुपए जुटाए जाएंगे। ऑफर फॉर सेल के जरिए 48 लाख शेयर बिक्री के लिए रखे जाएंगे, जिनमें से वारी सस्टेनेबल फाइनेंस और चंदुरकर इन्वेस्टमेंट्स अपने हिस्सेदारी बेचेंगे। प्राइस बैंड के ऊपरी बैंड पर ऑफर फॉर सेल का कुल मूल्य 721.44 करोड़ रुपए हो सकता है, जिससे कुल आईपीओ आकार 4,321.44 करोड़ रुपए का होगा।वारी एनर्जीज़ के शेयर अनलिस्टेड मार्केट में 1,280 रुपए के

प्रीमियम पर ट्रेड हो रहे हैं, जोकि 1,503 रुपए के ऊपरी प्राइस बैंड के हिसाब से 85 फीसदी है। इसका मतलब है कि इस आईपीओ के प्रति निवेशकों का अच्छा उत्साह है और इसे बाज़ार में बड़ी संभावनाएं दिख रही हैं। इस आईपीओ में 50फीसदी हिस्सा क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स के लिए आरक्षित है, जबकि 15फीसदी नॉन-इंस्टीट्यूशनल निवेशकों के लिए और 35 फीसदी रिटेल निवेशकों के लिए रिजर्व है। कंपनी के शेयर बीएसई और एनएसई दोनों स्टॉक एक्सचेंजों पर लिस्ट होंगे।

## विकसित भारत के लिए जीडीपी में विनिर्माण का योगदान बढ़ाने की जरुरत बाली

**नई दिल्ली।**

वोल्वो ग्रुप इंडिया के प्रबंध निदेशक और अध्यक्ष कमल बाली ने विनिर्माण क्षेत्र को विकसित भारत के लिए 'कमजोर कड़ी' बताते हुए कहा कि इस लक्ष्य को पाने जीडीपी में विनिर्माण का योगदान बढ़ाकर 25 फीसदी करने की आवश्यकता है। बाली ने एक संगोष्ठी में कहा कि देश को गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करके अपने पड़ोसी से अन्य भौगोलिक क्षेत्रों में तीन लाख करोड़ डॉलर के विनिर्माण अवसर को भुनाने की जरुरत है। उन्होंने कहा कि हमें विकसित भारत बनाना है तो विनिर्माण को पूरी क्षमता से काम करना होगा। विनिर्माण क्षेत्र हमारी कमजोर कड़ी है। उन्होंने कहा कि पिछले 20-25 सालों से विनिर्माण क्षेत्र भारत के जीडीपी के 15-16 फीसदी स्तर पर बना हुआ है। उन्होंने कहा कि एक के बाद एक सरकारों और कई नेताओं ने कोशिश भी की है लेकिन यह आगे नहीं बढ़ पाई है। इसलिए, इसमें बदलाव की जरुरत है। बाली ने जर्मनी, दक्षिण कोरिया और चीन जैसे देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि इनमें से ज्यादातर देश 40 से 50 सालों से विनिर्माण के जरिए से आगे बढ़ रहे हैं। भारत भी इससे अलग नहीं होगा। इसलिए विनिर्माण क्षेत्र को जीडीपी के 25 फीसदी तक बढ़ाना होगा। उन्होंने स्वीकार किया कि यह एक बड़ा कदम होगा और एक तरह से चुनौती भरा है।

# टाटा समूह सेमीकंडक्टर, असेंबली, इलेक्ट्रिक वाहन क्षेत्र में नौकरियों पैदा करेगा

### टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने दिया बयान

**नई दिल्ली ।** टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की राह में नई नौकरियों को लाने की बात कहीं है। चेयरमैन चंद्रशेखरन ने कहा है कि भारत विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है और देश को बढ़ते कार्यबल की रोजगार जरूरतों को पूरा करने के लिए 10 करोड़ नौकरियों का सृजन करने की जरूरत है। टाटा समूह देश में अधिक से अधिक विनिर्माण नौकरियां बनाने पर भी ध्यान दे रहा है, क्योंकि पूरा इकोसिस्टम भारतीय कंपनियों, विशेषकर 500,000 छोटे और मध्यम उद्यमों (एसएमई) के लिए कई अवसरों से भरा हुआ है।

चंद्रशेखरन के अनुसार, टाटा समूह सेमीकंडक्टर, प्रिसिशन मैन्युफैक्चरिंग, असेंबली, इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी और संबंधित उद्योगों में निवेश कर रहा है, इसलिए वह अगले पांच वर्षों में पांच लाख विनिर्माण नौकरियां पैदा करेगा। सेमीकंडक्टर विनिर्माण जैसे क्षेत्र कई अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा कर सकते हैं। उन्होंने कहा, हमें विकसित राष्ट्र बनने के लिए 100 मिलियन नौकरियां पैदा करने की जरूरत है। देश में हर माह करीब दस लाख लोग कार्यबल में शामिल होते हैं, जिससे देश के भविष्य के विकास के लिए विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन आवश्यक होता है। पिछले महीने, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टाटा संस और पावरचिप सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कारपोरेशन (पीएसएमसी) की नेतृत्व टीम से मुलाकात की, जो गुजरात के धोलेरा में 91,000 करोड़ रुपये की लागत से मेगा सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन फैसिलिटी तैयार कर रही हैं।

मार्च में, प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात में टाटा-पीएसएमसी चिप प्लांट की आधारशिला रखी थी। फैब निर्माण से क्षेत्र में 20,000 से अधिक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कुशल नौकरियां पैदा होंगी। इतना ही नहीं असम में टाटा समूह का सेमीकंडक्टर प्लांट प्रतिदिन 4.83 करोड़ सेमीकंडक्टर चिप्स का उत्पादन करेगा, साथ ही चालू होने पर 15,000 प्रत्यक्ष और 13,000 तक अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा करेगा।

## टाटा संस हुई कर्ज मुक्त, नए उद्यमों में निवेश बढ़ाने में मदद मिलेगी

**नई दिल्ली।**

18 साल में पहली बार टाटा संस शुद्ध आधार पर कर्ज मुक्त कंपनी बनी है। टाटा समूह की मुख्य होल्डिंग कंपनी टाटा संस पर वित्त वर्ष 2023 के आखिर में 22,176 करोड़ रुपए का कर्ज था जो मार्च 2024 में घटकर 363.2 करोड़ रुपए रह गया था। वित्त वर्ष 2024 के आखिर में टाटा संस के पास 3,042 करोड़ रुपए की नकदी और समतुल्य राशि थी, जो इससे एक साल पहले 1,534 करोड़ रुपए थी। कंपनी पर कर्ज खत्म होने के बाद 2,679.2 करोड़ रुपए की नकदी बचेगी। मार्च 2020 के आखिर में टाटा संस पर सबसे ज्यादा 31,603 करोड़ रुपए का कर्ज था और उसका शुद्ध कर्ज एवं इक्विटी का अनुपात 0.56 गुना था।

कर्ज-मुक्त बैलेंस शीट और समूह की सूचीबद्ध कंपनियों जैसे टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, टाटा मोटर्स, टाइटन और टाटा कंज्यूमर से ज्यादा लाभांश मिलने से टाटा संस को नए उद्यमों में निवेश बढ़ाने में मदद मिलेगी। इससे पहले वित्त 2006 में टाटा संस शुद्ध आधार पर कर्ज मुक्त हुई थी। उसके बाद विदेशी में कई बड़े अधिग्रहण किए गए थे, जिसने समूह को पूरी तरह से बदल दिया। टाटा संस की बैलेंस शीट और विभिन्न उद्यमों में इसके पूंजी निवेश की रफ्तार में संबंध दिखता है। वित्त वर्ष 2005-06 से 2014-15 के दौरान जब टाटा संस की बैलेंस शीट मजबूत थी तब उसने कई सूचीबद्ध और गैर-सूचीबद्ध उद्यमों में निवेश किया था। दिलचस्प बात यह है कि टाटा स्टील ने अक्टूबर 2006 में कोरस समूह के लिए 8.1 अरब डॉलर की बोली लगाई थी और 12.1 अरब डॉलर की प्रतिस्पर्धी बोली लगाकर ब्रिटेन की इस कंपनी का अधिग्रहण किया था। टाटा मोटर्स ने जनवरी 2008 में ब्रिटेन की लक्जरी कार विनिर्माता जगुवार लैंड रोवर को 2.3 अरब डॉलर में अधिग्रहण किया था। 2006 के बाद की अवधि में टाटा केमिकल्स, इंडियन होटल्स और टाटा ग्लोबल बेवरिजेज ने भी विदेश में कई बड़े सौदे किए थे। टाटा समूह की कंपनियों ने अपने संसाधनों और कर्ज के जरिये इन अधिग्रहण सौदों को पूरा किया था। टाटा संस इन सौदों में परोक्ष रूप से शामिल थी और संबंधित कंपनियों को अतिरिक्त इक्विटी पूंजी मुहैया कराई थी जिससे वे बड़ा कर्ज जुटा सके।

## 37 दिन बाद काम पर लौटे सैमसंग इंडिया के कर्मचारी, खत्म की हड़ताल

### कर्मचारियों ने प्रबंधन के खिलाफ काम नहीं करने पर जताई सहमति

**नई दिल्ली।**

सैमसंग इंडिया इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की फैक्टरी में कर्मचारियों की अनिश्चितकालीन हड़ताल मंगलवार को खत्म हो गई। तमिलनाडु सरकार ने बताया कि सभी कर्मचारी काम पर लौट आए हैं। सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स की श्रीपेरंबुदूर इकाई के कर्मचारियों ने राज्य सरकार और प्रबंधन के साथ हुई बातचीत के बाद 37 दिन लंबी हड़ताल वापस ले ली।

सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियंस (सीआईटीयू) के नेतृत्व में हड़ताल कर रहे कर्मचारियों की वेतन वृद्धि समेत ज्यादातर मांगों को सैमसंग प्रबंधन ने पहले ही मान लिया था। इसके बावजूद सीटू ने अपनी यूनियन की मान्यता की मांग को लेकर हड़ताल जारी रखी है, जिसका मामला अदालत में चल रहा है। इस मामले पर कर्मचारियों और प्रबंधन के बीच कानूनी नतीजे का इंतजार करने पर सहमति बनी है। साथ ही सरकार ने भी यूनियन के पंजीकरण की मांग का समर्थन किया, जिसके बाद यूनियन हड़ताल वापस लेने पर सहमत हो गई। बातचीत के दौरान प्रबंधन और हड़ताली कर्मचारी दोनों के प्रतिनिधि इस बात पर सहमत हुए कि सभी कर्मचारी तुरंत हड़ताल खत्म कर देंगे और काम पर लौट आएंगे। प्रबंधन ने कहा कि हड़ताल में शामिल कर्मियों को प्रताड़ित नहीं किया जाएगा। दूसरी ओर कर्मचारियों ने पूरा सहयोग करने और काम पर लौटने के साथ प्रबंधन के हितों के खिलाफ किसी भी तरह का काम नहीं करने पर भी सहमति जताई है। सरकारी बयान में कहा गया है कि दोनों पक्षों ने इस सलाह को मान लिया है। कर्मचारियों ने बताया है कि वे तुरंत हड़ताल खत्म कर काम पर लौट आएंगे। इसके साथ सैमसंग फैक्टरी में हड़ताल खत्म हो गई है और सभी कर्मचारियों ने काम फिर से शुरू कर दिया है। माना जा रहा है कि कर्मचारी बुधवार को सैमसंग इंडिया वर्कर्स यूनियन की आमसभा के बाद आधिकारिक तौर पर हड़ताल वापस ले लेगी। हालांकि, नेताओं ने कहा कि उनकी सभी मांगे सरकार और कंपनी दोनों ने मान ली हैं।

## भारत में तेजी से फलता-फूलता जा रहा ऑनलाइन गेमिंग बाजार

**मुंबई ।** भारत का ऑनलाइन गेमिंग बाजार का वर्तमान मूल्य 3.1 बिलियन डॉलर है। रेगुलेशन और टैक्सेशन से जुड़ी चुनौतियों के बावजूद इसके 2034 तक 60 बिलियन डॉलर तक बढ़ने की उम्मीद है। एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। भारत के गेमिंग सेक्टर में अमेरिकी योगदान महत्वपूर्ण है। रिपोर्ट के अनुसार, कुल 2.5 बिलियन डॉलर के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में से 1.7 बिलियन डॉलर सिर्फ अमेरिका से आया है। गेमिंग कारोबार के जानकार के अनुसार, यह भारत के तेजी से बढ़ते गेमिंग बाजार में वैश्विक निवेशकों के विश्वास को दिखाता है, जिसके 2034 तक 60 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। इस एफडीआई का 90 प्रतिशत हिस्सा पे-टू-प्ले सेगमेंट में है, जो कि इस सेक्टर के समग्र मूल्यांकन का 85 प्रतिशत है।

रिपोर्ट के अनुसार, भारत अपने हाई टैक्स रेट के लिए जाना जाता है। ऑनलाइन गेमिंग के लिए प्लेयर्स को अपनी कुल जमा पर सभी फॉर्मेट के लिए 28 प्रतिशत की दर से जीएसटी चुकाना होता है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्र केंद्रीय उत्पाद वर्गीकरण (यूएन सीपीसी) गेमिंग को ऑनलाइन जुए से अलग परिभाषित करता है। 600 मिलियन से ज्यादा गेमर्स के साथ इस सेक्टर का तेजी से मुद्रीकरण किया जा रहा है। यह निर्यात के लिए अवसर पेश करता है। हालांकि, भारतीय कंपनियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए, हमें प्रगतिशील टैक्स और रेगुलेटरी नीतियों के साथ समान अवसर की आवश्यकता है, जो अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो। रिपोर्ट में 12 प्रमुख गेमिंग बाजारों में रेगुलेटरी फ्रेमवर्क और टैक्सेशन पॉलिसी पर नजर डाली गई। इसमें पता चला कि सभी 12 देशों में गेम्स ऑफ चांस को लेकर अलग कानूनी परिभाषा है। इस परिभाषा के साथ स्किल गेमिंग फॉर्मेट को लेकर अंतर स्पष्ट होता है।

# भारत /न्यूजीलैंड : बारिश की भेंट चढ़ा पहले दिन का खेल, बेंगलुरु में टॉस तक भी नहीं हो सका

**बेंगलुरू (एजेंसी)।** भारत और न्यूजीलैंड के बीच बुधवार 16 अक्टूबर से तीन मैचों की टेस्ट सीरीज का आगाज हो गया है। लेकिन बारिश के कारण बेंगलुरु के एम ए चिन्नास्वामी स्टेडियम में होने वाले टेस्ट का पहला दिन बाधित हो गया। यहां टॉस तक भी नहीं हो पाया। भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैचों की टेस्ट सीरीज वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2023-25 चक्र का हिस्सा है।

मौसम विभाग ने पूरे दिन बारिश की भविष्यवाणी की है, जिसके कारण भारतीय खिलाड़ी खुद को एक्टिव रहने के लिए इनडोर नेट्स में प्रैक्टिस कर रहे हैं। भारतीय टीम के खिलाड़ी विराट कोहली यशस्वी जायसवाल मैदान पर नजर आए थे। हालांकि, रिपोर्ट के मुताबिक वह अपने किट के साथ इंडोर नेट्स में गए और कुछ समय बिताया। लंच के बाद भी बारिश होने के कारण पहले दिन का खेल रद्द करनापड़ा। इससे पहले बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज के दौरान दूसरे टेस्ट मैच में भी बारिश के कारण मैच तय नहीं हो सका। हालांकि, पहले दिन टॉस हुआ था और कुछ ओवर का मैच हुआ था लेकिन फिर दो दिन तक बारिश की वजह से खेल नहीं हो सकता था। लेकिन अंतिम दो दिन में भारत ने दमदार प्रदर्शन करते हुए मैच अपने नाम किया था।

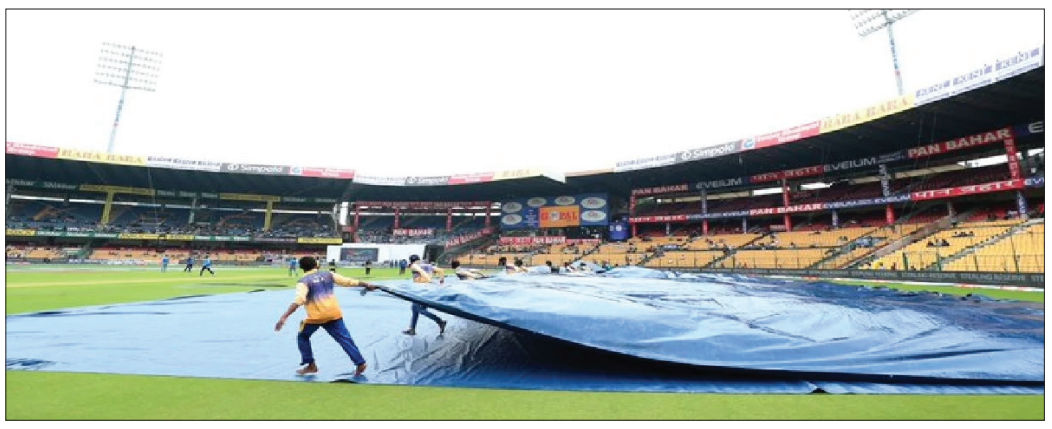

## 'भारत के बारे में बात करने पर प्रतिबंध है', पाकिस्तान ए क्रिकेट टीम के कप्तान का खुलासा

**लाहौर (एजेंसी)।** पाकिस्तान ए टीम के कप्तान मोहम्मद हारिस ने सनसनीखेज खुलासा किया है कि पुरुष टी20 इमर्जिंग टीम एशिया कप के लिए उनकी टीम को ड्रेसिंग रूम में भारत के बारे में बात करने पर प्रतिबंध है। पाकिस्तान शाहीन 19 अक्टूबर को अपने टूर्नामेंट के पहले मैच में भारत ए से भिड़ेगी। उनके ग्रुप में यूएई और ओमान दो अन्य टीमें हैं।

हारिस ने सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो में कहा, 'आपको एक बात बताऊं। पहली दफा होगा के इस ड्रेसिंग रूम में भारत पर बात करने पर पाबंदी है।' 23 वर्षीय हारिस ने सीनियर पाकिस्तान टीम के लिए अब तक 6 वनडे और 9 टी20 मैच खेले हैं, ने कहा कि अगर खिलाड़ी केवल भारत के खिलाफमैच के बारे में बात करते हैं तो इससे उन पर अतिरिक्त दबाव बनता है।

उन्होंने कहा, 'हमें (सिर्फ) भारत के बारे में नहीं सोचना है, हमें दूसरी टीमों के बारे में भी सोचना है। मैं (सीनियर) पाकिस्तान टीम में रहा हूं, पिछला विश्व कप भी खेला है। इससे इतना दबाव बनता है कि मानसिक रूप से आप भारत, भारत के बारे में सोचते रहते हैं। हमें दूसरी टीमों का भी सामना करना है। इसलिए इस टीम पर फ्लिहाल (भारत के बारे में बात करने पर) प्रतिबंध है। हमने अभी तक ड्रेसिंग रूम में भारत के बारे में बात नहीं की है। सिर्फभारत ही नहीं, हमें दूसरी टीमों का भी सम्मान करना है।'

टूर्नामेंट में भारत की अगुआई मध्यक्रम के बल्लेबाज तिलक वर्मा करेंगे जो सीनियर टीम के लिए पहले ही चार वनडे और 16 टी20 मैच खेल चुके हैं। सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा को वर्मा की जगह उप-कप्तान नियुक्त किया गया है।

## आईसीसी रैंकिंग: रैंकिंग में जो रूट को हुआ फायदा, 'स्पेशल-20' क्लब में हुई एंट्री

**दुबई (एजेंसी)।** आईसीसी ने खिलाड़ियों की ताजा रैंकिंग जारी की है। इंग्लैंड के दिग्गज बल्लेबाज जो रूट ने अब आईसीसी टेस्ट रैंकिंग के एक स्पेशल 20 क्लब में एंट्री की है। भारत के स्टार क्रिकेटर विराट कोहली पहले से ही लिस्ट में विराजमान हैं। दरअसल, रूट ने क्रिकेट इतिहास में 20 पुरुष बैटर्स द्वारा हासिल की गई करियर की सर्वश्रेष्ठ टेस्ट रेटिंग हैं। कोहली 15वें नंबर पर हैं। वह 937 रेटिंग अंकों तक पहुंच चुके हैं। ऑस्ट्रेलिया के महान बल्लेबाज डॉन ब्रैडमैन 961 रेटिंग अंकों के साथ टॉप पर हैं।

आईसीसी टेस्ट बल्लेबाजों की लेटेस्ट रैंकिंग की बात करें तो जो रूट टॉप पर हैं। उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट में दोहरा शतक जड़ा था। उन्होंने मुल्तान में 375 गेंदों में 17 चौके जड़े और 262 रन की पारी खेली। ये रूट के टेस्ट करियर का सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर है। रूट ने दोहरा शतक जमाने के बाद रेटिंग अंकों में इजाफा किया है। इससे पहले उनके हाईएस्ट रेटिंग अंक 923 थे। रूट ने रैंकिंग में 100 से ज्यादा अंकों की बढ़त हासिल की।

वहीं न्यूजीलैंड के केन विलियमसन 829 अंक के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं। उनके साथ इंग्लैंड के हैरी ब्रूक 829 अंक भी हैं। ब्रूक ने मुल्तान में तिहरा शतक (317) जमाया था उन्होंने 11 स्थान की छलांग लगाई। कोहली सातवें नंबर पर हैं।

## महिला टी20 विश्व कप के पहले सेमीफाइनल में आज ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच होगा मुकाबला

**दुबई (एजेंसी)।** आईसीसी महिला टी20 विश्वकप क्रिकेट सेमीफाइनल के लिए चार टीमें तय हो गयी हैं। इसमें सेमीफाइनल मुकाबलों की शुरुआत गुरुवार 17 अक्टूबर से होगी। इसमें पहला सेमीफाइनल ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच होगा। इसमें ऑस्ट्रेलिया की टीम ग्रुप ए में थी जबकि दक्षिण अफ्रीका ने ग्रुप बी से सेमीफाइनल में प्रवेश किया है। ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच मुकाबला 17 अक्टूबर को खेला जाएगा। दोनों टीमें इस मैच के लिए दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में मैदान पर उतरेगी। ग्रुप ए में ऑस्ट्रेलिया की टीम लीग स्टेज में अपने चारों मैच जीतकर अंक तालिका में पहले स्थान पर रही थी। वहीं दक्षिण अफ्रीका ने चार में से अपने तीन मुकाबलों को जीता था और वह अंक तालिका में दूसरे स्थान पर रही थी। वहीं दूसरा सेमीफाइनल न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज के बीच खेला जाएगा। ये मैच 18 अक्टूबर को शारजाह

क्रिकेट मैदान पर खेला जाएगा। इसमें न्यूजीलैंड की टीम ने ग्रुप ए में चार में से अपने तीन मैच जीते थे। वह 6 अंक लेकर ऑस्ट्रेलिया के बाद वह अंक तालिका में दूसरे स्थान पर रही थी। वहीं वेस्टइंडीज की टीम ग्रुप बी की टॉप टीम है। वेस्टइंडीज ने भी अपने चार में से तीन मैच जीते थे, लेकिन बेहतर रन रेट के कारण अंक तालिका में वह दक्षिया अफ्रीका के बराबर अंक होते हुए वह पहले स्थान पर रही। सेमीफाइनल में जीतने वाली टीम रविवार, 20 अक्टूबर को खेले जाने वाले फाइनल में पहुंचेगी। फाइनल मैच दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में होगा।

## मयंक ओर नितीश को शीघ्र ही टेस्ट क्रिकेट में डेब्यू का अवसर मिलेगा : रोहित

बेंगलुरु। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने कहा है कि आने वाले समय में तेज गेंदबाज मयंक यादव और ऑलराउंडर नितीश कुमार रेड्डी को भी टेस्ट पदार्पण का अवसर मिलेगा। मयंक और नितीश दोनों ही बांग्लादेश के खिलाप हाल ही में संपन्न तीन मैचों की सीरीज में भारत की टी20 टीम में शामिल थे ओर इसमें इन दोनो का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा। दूसरे टी20 मैच में नितीश ने 34 गेंदों पर 74 रन बनाकर प्रभावित किया। इसमें 3 विकेट भी शामिल थे। वहीं मयंक ने भी अच्छी गेंदबाजी करते हुए तीन मैचों में सात से कम की इकॉनमी रेट से चार विकेट लिए। इन दोनों को प्रसिद्ध कृष्णा और हर्षित राणा के साथ तीन मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए रिजर्व खिलाड़ियों में शामिल किया गया है। रोहित ने कहा कि, मैं समझता हूं कि इन दोनो ने ही अब तक बहुत अधिक नहीं खेला है। हम बेंच स्ट्रेंथ बनाना चाहते हैं।

## डेब्यू टेस्ट में शतक लगाने वाले गुलाम को बाबर आजम ने बधाई दी

मुल्तान। पाकिस्तान के अनुभवी बल्लेबाज और पूर्व कप्तान बाबर आजम ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के पहले दिन शानदार शतक लगाने वाले बल्लेबाज कामरान गुलाम की जमकर प्रशंसा की है। गुलाम को बाबर आजम की जगह इस मेच में शामिल किया गया था। गुलाम ने इंग्लैंड के गेंदबाजों के सामने अच्छा खेल दिखाते हुए 224 गेंदों पर 11 चौकों और 1 छक्के की मदद से 118 रन बनाए। बाबर ने सोशल मीडिया पर गुलाम को उनकी उपलब्धि के लिए बधाई दी औरलिखा – अच्छा खेला कामरान। कामरान ने अपने डेब्यू पर शानदार शतक लगाकर पाक टीम को पांच विकेट पर 259 के स्कोर तक पहुंचाया। इस नये बल्लेबाज ने खराब फॉर्म में चल रहे बाबर की जगह चौथे नंबर पर बल्लेबाजी की और इंग्लैंड के गेंदबाजी आक्रमकण का अच्छे से सामना किया। वहीं दिन के अंत में मोहम्मद रिजवान और सलमान आगा क्रमश: 37 और पांच रन बनाकर नाबाद थे। जब मेजबान टीम टॉस जीतकर 19 पर दो विकेट खोकर दबाव में थी तब कामरान ने सैम अयूब के साथ तीसरे विकेट के लिए 149 रन जोड़े जिन्होंने करियर की सर्वश्रेष्ठ 77 रन की पारी खेली और रिजवान के साथ पांचवें विकेट के लिए 65 रन की साझेदारी की। उन्होंने स्पिनर जो रूट की गेंद पर चौका लगाकर शतक तक पहुंचने में 280 मिनट का समय लिया और अपने डेब्यू टेस्ट में शतक बनाने वाले पाकिस्तान के 12वें बल्लेबाज बन गए।

## लियोनेल मेसी ने तोड़ा क्रिस्टियानो रोनाल्डो का रिकॉर्ड, संन्यास को लेकर कही बड़ी बात

फुटबॉल जगत में पिछले दो दशकों से अर्जेंटीना के लियोनल मेसी और पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो के बीच प्रतिद्वंद्विता चल रही है। दोनों अंतर्राष्ट्रीय और प्रोफेशनल फुटबॉल में एक दूसरे के रिकॉर्ड तोड़ते आ रहे हैं। इस रिकॉर्ड तो तोड़ने के बाद मेसी ने अपने रिटायरमेंट को लेकर भी बड़ी बात कही। वर्ल्ड कप क्वालिफायर मैच में लियोनेल मेसी की अर्जेंटीना बोलिविया का सामना कर रही थी। इस मैच में उन्होंने 6-0 से जीत हासिल की जिसमें मेसी की हैट्रिक का अहम रोल था। 37 साल के मेसी ने 19वें, 84वें और 86वें मिनट में गोल किए। अर्जेंटीना के दो गोल मेसी के पास पर हुए। उन्होंने लोटारो मार्तिनेज और जूलियन अल्वारेज के लिए गए गोल में एसिस्टेंट की भूमिका निभाई थी। ये मेसी के करियर की 10वीं अंतर्राष्ट्रीय हैट्रिक थी। इस मामले में उन्होंने क्रिस्टियानो रोनाल्डो की बराबरी की। वह दूसरे ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने 10 हैट्रिक लगाई है। दोनों सबसे ज्यादा हैट्रिक लगाने वाली खिलाड़ी हैं। लियोनेल मेसी ने मैच को लेकर कहा, यहां आकर लोगों का प्यार महसूस करके बहुत अच्छा लगता है जिस तरह से वे मेरा नाम पुकारते हैं उससे मैं बहुत प्रभावित होता हूं। ये मुझे प्रेरित करता है। मैं जहां हूं वहां खुश रहना पसंद करता हूं। अपनी उम्र के बावजूद, जब मैं यहां आथा हूं तो मैं खुद को एक बच्चे की तरह महसूस करता हूं क्योंकि मैं इस टीम के साथ सहज हूं।

## नीतू, डिविलियर्स और कुक आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल

**दुबई (एजेंसी)।** टेस्ट क्रिकेट की एक पारी में सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी (53 रन पर आठ विकेट) करने वाली भारत की पूर्व स्पिनर नीतू डेविड बुधवार को आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) हॉफ ऑफ फेम में शामिल होने वाली देश की दूसरी महिला क्रिकेटर बनीं। दक्षिण अफ्रीका के महान बल्लेबाज एबी डिविलियर्स और इंग्लैंड के दिग्गज बल्लेबाज एलिस्टेयर कुक को भी हॉल ऑफ फेम में जगह मिली।

भारतीय महिला टीम की चयन समिति की मौजूदा अध्यक्ष नीतू को पूर्व कप्तान डाइना इडुल्जी को शामिल किए जाने के एक साल बाद आईसीसी हॉल ऑफ फेम में जगह मिली है। बाएं हाथ की स्पिनर नीतू ने भारत के लिए 100 से अधिक अंतरराष्ट्रीय मैच (10 टेस्ट और 97 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय) खेले। एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 47 साल की नीतू 141 विकेट के साथ भारत की दूसरी सबसे सफल गेंदबाज हैं। वह 50 ओवर के प्रारूप में 100 विकेट के आंकड़े को छूने वाली देश की पहली महिला गेंदबाज भी रहीं।

विश्व कप 2005 की सबसे सफल गेंदबाज नीतू ने भारत को पहली बार फाइनल में पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई थी। नीतू ने आईसीसी की विज्ञप्ति में कहा, 'आईसीसी

हॉल ऑफ फेम में शामिल होना बेहद सम्मान की बात है जिसे मैं राष्ट्रीय टीम की ओर से खेलने वाले किसी भी खिलाड़ी के लिए सर्वोच्च मान्यता मानती हूं।'' उन्होंने कहा, 'यह इस महान खेल के लिए जीवन भर के समर्पण के बाद आता है और यह मेरे लिए इस मुकाम तक पहुंचने की एक बहुत ही विशेष यात्रा है।''

नीतू ने कहा, 'अब तक के सबसे महान खिलाड़ियों के साथ हॉल ऑफ फेमर माना जाना शानदार है और मैं इस विशिष्ट क्लब का हिस्सा बनकर रोमांचित हूं।' नीतू ने 1995 में 17 साल की उम्र में नेल्सन में न्यूजीलैंड के खिलाफ अपना पहला अंतरराष्ट्रीय मुकाबला खेला। उन्होंने 1995 में ही जमशेदपुर में इंग्लैंड के खिलाफ भारत की दो रन की करीबी हार के दौरान 53 रन देकर आठ विकेट चटकाए जो आज भी महिला टेस्ट में एक पारी में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत गेंदबाजी प्रदर्शन है। नीतू ने 10 टेस्ट में 41 विकेट चटकाए जबकि 97 एकदिवसीय मुकाबलों में 16.34 के औसत से 141 विकेट हासिल किए। नीतू ने 2006 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लिया लेकिन दो साल बाद अपना फैसला बदलते हुए एकदिवसीय प्रारूप में एशिया कप और भारत के इंग्लैंड दौरे पर खेलीं।

दूसरी तरफ कुक ने 250 से अधिक अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में इंग्लैंड का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने 2018 में इंग्लैंड की ओर से सबसे अधिक टेस्ट रन और शतक बनाने वाले खिलाड़ी के रूप में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा। वह कप्तान के रूप में भी काफी सफल रहे। डिविलियर्स ने 14 साल के अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में तीनों प्रारूपों में 20 हजार से अधिक अंतरराष्ट्रीय रन बनाए। मैदान के चारों तरफ शॉट खेलने की क्षमता के लिए डिविलियर्स को 'मिस्टर 360' भी कहा जाता है।

उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की ओर से एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे तेज अर्धशतक, शतक और 150 रन का रिकॉर्ड बनाया और उन्हें खेल के इतिहास के सबसे आक्रामक बल्लेबाजों में शुमार किया जाता है। आईसीसी हॉल ऑफ फेम जनवरी 2009 में शुरू किया गया जो वैश्विक संचालन संस्था के शताब्दी समारोह का हिस्सा था। इन खिलाड़ियों को शामिल किए जाने का जश्न इस सप्ताह दुबई में विशेष कार्यक्रमों की श्रृंखला के जरिए मनाया जाएगा जो महिला टी20 विश्व कप के समापन के दौरान होगी।

## एमबाप्पे के खिलाफ चल रही बलात्कार मामले की जांच, मामले पर फुटबॉलर के प्रतिनिधियों ने दी प्रतिक्रिया

स्टॉकहोम। फ्रांस के फुटबॉल स्टार काइलियान एमबाप्पे के प्रतिनिधियों ने स्वीडन के मीडिया में छपी उस रिपोर्ट को 'झूठी और गैर जिम्मेदाराना' बताया है जिसमें कहा गया है कि उनके खिलाफ बलात्कार के एक मामले में जांच चल रही है। सूत्रों का हवाला दिए बिना स्वीडन के कई मीडिया ने रिपोर्ट दी है कि रीयाल मैड्रिड के स्टार स्ट्राइकर एमबाप्पे के खिलाफ बलात्कार के मामले की जांच चल रही है। रिपोर्ट के बाद स्वीडन के अभियोजकों ने मंगलवार को छोटा सा बयान जारी किया कि पुलिस के पास बलात्कार की एक शिकायत आई है लेकिन इसमें किसी का नाम नहीं लिया गया। बयान में कहा गया, 'रिपोर्ट के अनुसार यह घटना स्टाकहोम के एक होटल में 10 अक्टूबर 2024 की है।' एमबाप्पे की मीडिया टीम ने कहा, 'ये आरोप बिल्कुल झूठे और गैर जिम्मेदाराना है। काइलियान एमबाप्पे अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान पर किसी तरह की आंच आना बर्दाश्त नहीं करेंगे।' अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर भी एमबाप्पे ने लिखा, 'फेक न्यूज।'

## दिल्ली कैपिटल्स में पोंटिंग का उत्तराधिकारी कौन ? 40 वनडे खेला यह दिग्गज आगे आया

नई दिल्ली - भारत के बाएं हाथ के पूर्व खिलाड़ी हेमंग बदानी दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच बनने की दौड़ में सबसे आगे चल रहे हैं जबकि तेज गेंदबाज मुनाफ पटेल का नाम फ्रेंचाइजी के सहयोगी स्टाफ में भूमिका के लिए चर्चा में है। दिल्ली कैपिटल्स ने कुछ सप्ताह पहले ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग को उनकी उपलब्धता संबंधी समस्याओं के कारण मुख्य कोच के रूप में हटा दिया था। पोंटिंग 2018 से टीम के साथ थे। इंडियन प्रीमियर लीग के एक सूत्र ने नाम जाहिर नहीं करने की शर्त पर बताया कि दिल्ली कैपिटल्स का प्रबंधन स्तरीय घरेलू कोच ढूंढ रहा है और हेमंग तथा मुनाफ का नाम सामने आया है। अभी अंतिम फैसला नहीं किया गया है लेकिन मुनाफ गेंदबाजी कोच हो सकते हैं। अधिकांश अन्य फ्रेंचाइजी की तरह दिल्ली कैपिटल्स के भी आगामी भव्य नीलामी से पहले तीन खिलाड़ियों को रिटेन (अपने साथ बरकरार रखने) करने की उम्मीद है। टीम कप्तान ऋषभ पंत (18 करोड़ रुपये), ऑलराउंडर अक्षर पटेल (14 करोड) और बाएं हाथ के स्पिनर कुलदीप यादव (11 करोड़) को रिटेन कर सकती है। पांच खिलाड़ियों को रिटेन करने पर 75 करोड़ रुपए खर्च होंगे इसलिए यह माना जा रहा है कि पिछले साल के स्टार खिलाड़ी जेक-फ्रेजर मैकगर्क और दक्षिण अफ्रीका के ट्रिस्टन स्टब्स को टीम राइट टू मैच (आरटीएम) कार्ड के जरिए चुन सकती है, बशर्ते उनकी कीमत टीम के बजट के भीतर हो। बदानी का नाम मुख्य कोच के रूप में आने का कारण अगले दो वर्षों के लिए प्रबंधन में बदलाव का मामला हो सकता है। टीम के सह-मालिकों में से एक जीएमआर अब टीम का संचालन करेगा। दूसरा सह-मालिक जेएसडब्ल्यू है। माना जाता है कि दोनों सह-मालिकों के बीच दो-दो साल तक टीम का प्रबंधन करने पर सहमति है। बदानी इससे पहले सनराइजर्स हैदराबाद में ब्रायन लारा के साथ काम कर चुके हैं लेकिन अगर उन्हें यह काम मिलता है तो यह उनके लिए बहुत बड़ा मौका होगा। तमिलनाडु के पूर्व बल्लेबाज बदानी ने 2001-2004 के बीच भारत के लिए चार टेस्ट और 40 एकदिवसीय मैच खेले जिसमें 2001 की द्विपक्षीय श्रृंखला में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय शतक उनके करियर का मुख्य आकर्षण रहा।

## रोहित नीलामी में उतरे तो कई टीमें लगाएंगी बोली - हरभजन

मुम्बई। पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि अगर वह आईपीएल 2025 सत्र के लिए नीलामी में शामिल होते हैं तो नीलामी का आकर्षक और बढ़ जाएगा। रोहित को मुम्बई इंडियंस ने 2024 आईपीएल सत्र में कप्तानी से हटा दिया था। ऐसे में माना जा रहा है कि वह इस बार नीलामी में उतर सकते हैं। टीम को 5 बार खिताब जिताने के बाद भी जिस प्रकार उन्हें हटाया गया उससे रोहित नाराज माने जा रहे हैं। हरभजन ने कहा कि अगर रोहित नीलामी के लिए अपना नाम देते हैं तो फ्रेंचाइजी को उनके लिए बोली लगाते देखना एक अच्छा अनुभव होगा। यह देखना दिलचस्प होगा कि मुंबई इंडियंस उन्हें रिटेन करती है या नहीं। अगर वह नीलामी पूल में प्रवेश करते हैं, तो वह बोली को विशेष बना देंगे, क्योंकि बहुत सी टीमें उनके नाम पर बोली लगाएंगी। मुम्बई के साथ तीन आईपीएल खिताब जीतने वाले भज्जी ने रोहित की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि उनमें अभी काफी क्रिकेट बचा है। उन्होंने कहा कि रोहित एक नेता और खिलाड़ी के रूप में काफी अच्छे हैं। वह एक उच्च गुणवत्ता वाले क्रिकेटर और एक मैच विजेता हैं। ऐसे में अगर रोहित नीलामी में उतरते हैं तो उन्हें मोटी रकम मिलेगी। नीलामी देखना रोमांचक होगा। रोहित को एक दशक पहले साल 2013 सत्र के बीच में मुंबई ने कप्तान बनाया तब रिकी पोंटिंग ने अपना पद छोड़ दिया था। रोहित ने पूरी तरह से फ्रेंचाइजी की किस्मत बदल दी और टूर्नामेंट के इतिहास में सबसे सफल कप्तानों में से एक बन गए। इस बीच, उन्होंने आईसीसी टी20 विश्व कप 2024 में भारत की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम को सफलता दिलाई। अब देखना दिलचस्प होगा कि क्या मुंबई उन्हें 18वें सीजन से पहले रिलीज करता है या नहीं।

## आईओए हमारे सुझावों पर ध्यान नहीं देता, खिलाड़ी आयोग की प्रमुख मैरीकोम ने कहा

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) के खिलाड़ी आयोग की अध्यक्ष महान मुक्केबाज एमसी मैरीकोम ने कहा है कि उन्होंने राष्ट्रीय ओलंपिक समिति को सुझाव देना बंद कर दिया है क्योंकि उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता। मैरीकोम उन 10 शीर्ष खिलाड़ियों में शामिल थीं जिन्हें नवंबर 2022 में आईओए खिलाड़ी आयोग में चुना गया था। आईओए में इस समय खींचतान चल रही है जिसमें पदाधिकारियों का एक वर्ग अध्यक्ष पीटी उषा के कामकाज के तरीके पर सवाल उठा रहा है। उषा ने हालांकि अपने खिलाफ सभी आरोपों से इनकार किया है।

आईओए में चल रहे सत्ता संघर्ष के बारे में पूछे जाने पर मैरीकोम ने पीटीआई से कहा, ''मैं आईओए के कामकाज में शामिल नहीं हूं। हमने आईओए के साथ कई बातें साझा की, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। वे मेरे सुझावों को नहीं सुनते। मैं राजनीति नहीं जानती और मैं किसी को दोष नहीं देना चाहती।'' भारतीय मुक्केबाज पेरिस ओलंपिक से पदक के बिना लौटे और मैरीकोम इस नतीजे से बेहद निराश थीं।

41 वर्षीय मैरीकोम ने अफसोस जताया कि ओलंपिक से पहले भारतीय मुक्केबाजी महासंघ में किसी ने उनकी मदद नहीं मांगी। उन्होंने कहा, ''मैं यह नहीं बता सकती कि क्या गलत हुआ क्योंकि उन्होंने मुझे आमंत्रित ही नहीं किया। वे मेरे अनुभव का इस्तेमाल कर सकते थे। मैं मुक्केबाजों को उनकी कमजोरियां और मजबूत पक्ष बता सकती हूं।'' लंदन ओलंपिक 2012 की कांस्य पदक विजेता मैरीकोम को लगता है कि जब तक कोचिंग संरचना में सुधार नहीं किया जाता तब तक पदक नियमित रूप से नहीं आएंगे।

# "करवा चौथ विथ पंजाबी तड़का" का हुआ आयोजन

**सुरत भुमि, सूरत।** अग्रवाल महिला मैत्री संघ द्वारा दिवाली स्नेह मिलन कार्यक्रम इस बार अनूठे तरीके से मनाया गया। संघ की अध्यक्षा सविता सिंघानिया एवं सचिव वीणा बंसल ने बताया की इस बार स्नेह मिलन समारोह में तीन त्यौहार शरद पूर्णिमा, करवा चौथ एवं दिपावली एक साथ पंजाबी तड़का थीम पर मनाया गया।

बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में सभी महिलाएं पंजाबी टीम पर सजधज कर आई एवं सभी का स्वागत संघ द्वारा पंजाबी ढोल की थाप से किया गया। आयोजन में संघ के सदस्यों द्वारा छोटी-छोटी हास्य नाटिका प्रस्तुत की गई एवं अनेकों गेम खिलाए गए। सभी महिलाओं के घर करवा चौथ पर खाने वाली सरगी भेजी गई एवं सभी केआर लाड़-चाव किए गए। आयोजन के अंत में सभी महिलाओं द्वारा पंजाबी भांगड़ा पर डांस किया गया। इस मौके पर आयोजन की संयोजिका पदमा तुलस्यान, स्नेहलता कादमावाला, आशा पाटोदिया, अनुराधा गुप्ता, सोनल मित्तल सहित संघ की अनेकों सदस्या उपस्थित रहीं।

# मांडवी तालुका के वांकला गांव के आदिवासी किसान को मंडप सहायता से कृषि में नई राहत

**सूरत।**

राज्य सरकार आदिवासी भवनों के समग्र विकास के लिए लगातार प्रयासरत है. आदिवासी किसानों के कृषि उत्पादन को बढ़ाने और उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाएँ लागू की गई हैं। गुजरात आदिजाति विकास निगम आदिवासी किसानों को आधुनिक खेती के तरीके अपनाने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से सब्जियों के लिए मंडप बनाने में मदद कर रहा है। सूरत जिले के मांडवी तालुक के वांकला गांव के आदिवासी किसान अश्विनभाई चौधरी को इस सहायता योजना से लाभ हुआ है, जिससे उनकी खेती अब आसान हो गई है।

सब्जी मंडप सहायता के लाभार्थी अश्विनभाई चौधरी के पुत्र अनिकेतभाई चौधरी ने कहा, "हमारा परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी कृषि में शामिल रहा है और कृषि उपज आजीविका का मुख्य स्रोत है। अब हम गाय के गोबर को उर्वरक के रूप में उपयोग करके सब्जियों की जैविक खेती कर रहे हैं, जिससे अच्छी आय हो रही है।"

उन्होंने आगे बताया कि मांडवी परियोजना कार्यालय से बेल वाली सब्जियों के लिए मंडप बनाने हेतु उपकरण सहायता योजना की जानकारी प्राप्त हुई, जिससे फसल में वृद्धि करने के उद्देश्य से ऑनलाइन फॉर्म भरा गया। मंडप बनाने के लिए 8,736 रुपये मिले, जिसके आधार पर मंडप तैयार हो गया, इसके बाद कुछ ही समय में दूसरी किस्त 2912 रुपये और तीसरी किस्त 2912 रुपये, कुल 14,560 रुपये मिले.

अनिकेतभाई ने आगे कहा, "मंडप के बिना, हमारे लिए टिंडोला या कद्दू जैसी नरम सब्जियों की खेती करना मुश्किल था। जलवायु परिवर्तन और अत्यधिक तापमान फसलों को कम कर देते थे और कभी-कभी उन्हें नुकसान भी पहुंचाते थे, लेकिन अब मंडप फसलों की रक्षा करता है और उत्पादन प्रचुर मात्रा में बढ़ रहा है। सरकारी सहायता से मंडप बनने के बाद, टिंडोला की खेती से अधिक तिल पैदा हुए और बाजार में बेहतर कीमत मिली।"

ऐसी योजनाएं अपरिहार्य असफलताओं के बाद आदिवासी किसानों के जीवन में बड़ा बदलाव ला रही हैं। यह योजना अश्विनभाई के परिवार के लिए एक नई उम्मीद बन गई है, जिसने उनके खेती के व्यवसाय को और अधिक उपयोगी बना दिया है। उनके परिवार का कहना है, "अब हमारा लक्ष्य अधिक प्रकार की सब्जियों की खेती करके व्यवसाय का विस्तार करना है।"

इस प्रकार, सरकार की आदिजाति विकास योजना छोटे किसानों के लिए विकास और आत्मनिर्भरता की नींव रखने में सफल रही है। मंडप जैसी छोटी लेकिन उपयोगी सहायता ने कृषि क्षेत्र में एक नई क्रांति पैदा की है, किसानों को पर्याप्त बुनियादी ढांचा सहायता प्रदान की है और जीवन स्तर में सुधार किया है।

# रक्तदान शिविर के लिए श्री श्याम मंदिर, सूरतधाम को किया सम्मानित

**सुरत भुमि, सूरत। भारत सरकार द्वारा जयपुर में आयोजित "इंडिया ब्लड डोनेशन एनजीओ कॉनक्लेव-2024" में श्री श्याम सेवा ट्रस्ट, श्री श्याम मंदिर, सूरतधाम को रक्तदान शिविर का आयोजन करने एवं सर्वाधिक यूनिट संग्रहण करने के लिए सम्मानित किया गया। ट्रस्ट की तरफ़ से कार्यकारिणी सदस्य शेखर गौरीसरिया ने सम्मान ग्रहण किया। ट्रस्ट को सम्मान मिलने के बाद सभी सदस्य उत्साहित हैं एवं सभी ने एक दूसरे को बधाई दी। श्री श्याम मन्दिर, सूरतधाम के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में आगामी विशाल रक्तदान शिविर 26 जनवरी 2025 को आयोजित किया जाएगा।**

# राजनीति और समाज का एक गंभीर मुद्दा

अतुल मलिकराम ने नेपोटिज़्म यानी भाई-भतीजावाद पर गहन चर्चा की है, यह बताते हुए कि यह केवल राजनीति का मुद्दा नहीं, बल्कि हर क्षेत्र में विद्यमान है। वे सवाल उठाते हैं कि जब यह प्रथा समाज के सभी हिस्सों में मौजूद है, तो केवल राजनीति को क्यों बदनाम किया जाता है?

वे इतिहास की ओर इशारा करते हैं, जहां राजा का बेटा राजा बनता था, और व्यवसाय या चिकित्सा में भी परिवारिक विरासत महत्वपूर्ण होती थी। यह सामान्य मानव मनोविज्ञान है कि लोग अपनी मेहनत से अर्जित सफलताओं को अपने करीबी लोगों के हाथों में सौंपना चाहते हैं। हालांकि, यह बात तब गलत हो जाती है जब बिना योग्यता के किसी को ऊँचे पद पर बैठाया जाता है।

मलिकराम यह मानते हैं कि राजनीति में भाई-भतीजावाद के उदाहरण अधिक होने के कारण इसे अधिक आलोचना का सामना करना पड़ता है। लेकिन, जब हम मनोरंजन उद्योग, खेल या व्यापार की बात करते हैं, तो स्थिति बहुत भिन्न नहीं होती। इन क्षेत्रों में भी नेपोटिज्म व्याप्त है, लेकिन राजनीतिक क्षेत्र के खुलेपन के कारण यह अधिक उजागर होता है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि नेपोटिज्म के खिलाफ केवल राजनीति को ही निशाना बनाना समस्या का समाधान नहीं है। इसके लिए हमें हर क्षेत्र में पारदर्शिता और निष्पक्षता की आवश्यकता है। तभी हम एक समतावादी और योग्यता-आधारित समाज का निर्माण कर सकेंगे। अतुल का तर्क है कि सही सोच और उद्देश्य के साथ, भाई-भतीजावाद को एक सामान्य प्रक्रिया मानना गलत नहीं है।

# गुजरात सरकार ने एक महीने तक चलने वाले 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' का समापन किया

**सुरत भुमि, सूरत।**

गुजरात शहरी विकास और शहरी आवास विकास विभाग ने हाल ही में एक महीने तक चलने वाले च्स्वच्छता ही सेवा अभियानज् का सफलतापूर्वक समापन किया है। यह अभियान 17 सितंबर, 2024 से 16 अक्टूबर, 2024 तक आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य राज्य के नागरिकों के बीच कचरे को अलग करने और एकल-उपयोग प्लास्टिक के उपयोग को खत्म करने के लिए जागरूकता पैदा करना था।

स्वच्छ भारत मिशन - शहरी के अनुरूप, यह अभियान पारस्परिक संचार गतिविधियों के माध्यम से अहमदाबाद, वडोदरा, सूरत और गांधीनगर क्षेत्रों के विभिन्न शहरी क्षेत्रों में नुक्कड़ नाटकों के प्रदर्शन के माध्यम से 2 लाख नागरिकों तक पहुंचा। अभियान के दौरान प्रमुख शहरी क्षेत्रों में नुक्कड़ नाटक प्रदर्शन आयोजित किए गए, जिसमें स्थानीय समुदाय की महत्वपूर्ण भागीदारी रही।

नुक्कड़ नाटक के प्रत्येक प्रदर्शन ने पर्यावरण पर एकल-उपयोग प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया। इन प्रदर्शनों ने दर्शकों पर एक अमिट छाप छोड़ी और इस बारे में जागरूकता भी पैदा की कि कैसे एकल-उपयोग प्लास्टिक पर्यावरण को नष्ट कर रहा है और वे पारिस्थितिकी तंत्र के लिए गंभीर खतरे पैदा कर सकते हैं।

सूरत में सूरत नगर निगम के तहत 30 वार्डों में 150 शो और सूरत क्षेत्र में 19 नगर पालिकाओं में 95 शो के साथ कुल 245 नुक्कड़ नाटक आयोजित किए गए। ऐसे प्रत्येक शो ने लगभग 150-200 लोगों पर गहरी छाप छोड़ी और एकल-उपयोग प्लास्टिक से पर्यावरण को होने वाले खतरों के बारे में प्रभावी ढंग से जागरूकता प्रदान की। जिन नगर पालिकाओं में नुक्कड़ नाटक आयोजित किए गए वे थे भरूच, अंकलेश्वर, जंबूसर, आमोद, राजपीपला, नवसारी, बिलीमोरा, विजलपोर, गणदेवी, बारडोली, कनकपुर-कंसाद, सचिन, कडोदरा, तरसाडी, मांडवी, व्यारा, सोनगढ़, वलसाड, वापी, पारडी। इसमें धरमपुर और उमरगाम शामिल हैं।

इसी तरह, अहमदाबाद ज़ोन में कुल 325 नुक्कड़ नाटक आयोजित किए गए, जिनमें से 200 प्रदर्शन अहमदाबाद नगर निगम के तहत 48 वार्डों में और 125 शो अहमदाबाद ज़ोन में बावला, ढोलका, वीरगाम, धंधुका, साणंद और बरेजा सहित 25 नगर पालिकाओं में आयोजित किए गए। ऐसे प्रत्येक नाटक को स्थानीय समुदाय के 200-250 लोगों ने देखा, जिन्हें अपशिष्ट प्रबंधन और एकल-उपयोग प्लास्टिक के खतरों के बारे में एक महत्वपूर्ण संदेश दिया गया।

# क्लियर प्रीमियम वाटर और अहमदाबाद पुलिस ने नवरात्रि पर लोगों को हेलमेट वितरित कर ट्रैफिक नियमों और सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया

**अहमदाबाद।** बॉटल्स वाटर उद्योग के अग्रणी क्लियर प्रीमियम वाटर और अहमदाबाद पुलिस विभाग ने नवरात्रि उत्सव के दौरान शहर में 1,000 हेलमेट वितरित कर लोगों को सड़क सुरक्षा और ट्रैफिक नियमों के प्रति जागरूक करने के पायलट प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक शुरू किया। अहमदाबाद शहर पुलिस के सहयोग से चलाया गया यह अभियान दुर्घटनाओं के जोखिम को कम करने के उद्देश्य से नवरात्रि के दौरान आयोजित किया गया था।

कंपनी ने हाल ही में अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के तहत अहमदाबाद के प्रह्लादनगर, दक्षिण बोपल और मकरबा में पुनर्नवीनीकरण प्लास्टिक से बनी 100त्न पुनर्चक्रण योग्य बेंचें स्थापित की हैं। अहमदाबाद नगर निगम (एएमसी) के सहयोग से शुरू किए गए इस पायलट प्रोजेक्ट ने न केवल लोगों को बैठने की सुविधा प्रदान की है बल्कि प्लास्टिक कचरे और कार्बन उत्सर्जन को कम करने में भी मदद की है।

ये अभियान समाज की भलाई के लिए क्लियर प्रीमियम वाटर की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं। इससे पता चलता है कि कंपनी सरकार के साथ मिलकर शहर में सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

क्लियर प्रीमियम वाटर के संस्थापक और सीईओ नयन शाह ने कहा कि च्यह पहल सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल ड्राइवर बल्कि सड़क पर चल रहे लोगों की भी सुरक्षा करता है। हेलमेट वितरित करने के लिए अहमदाबाद पुलिस के साथ साझेदारी करके हम सामाजिक कल्याण और स्थिरता के प्रति अपनी मजबूत प्रतिबद्धता को आगे बढ़ा रहे हैं। हमारी साझेदारी सभी के लिए सुरक्षित भविष्य के निर्माण में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

अहमदाबाद शहर पुलिस आयुक्त जीएस मलिक ने कहा कि च्व्हेलमेट वितरण अभियान एक नेक और प्रशंसनीय कार्य है, जिसका उद्देश्य सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करना है। देखा गया है कि अधिकांश घातक दुर्घटनाएं दोपहिया वाहन चालकों के साथ होती हैं, इनमें से कई मौतों को केवल हेलमेट पहनने से रोका जा सकता है। क्लियर प्रीमियम वाटर की मदद से हम हेलमेट वितरित करके कई लोगों की जान बचाने में सहायक बनेंगे। इसके साथ ही हम ट्रैफिक नियमों और सड़क पर सुरक्षित यात्रा के बारे में जागरूकता फैलाने में भी सक्षम हैं। हम इस काम के लिए प्रीमियम क्लियर वाटर को धन्यवाद देते हैं।

अहमदाबाद शहर के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, सेक्टर-1, नीरज कुमार बडगुजर ने कहा कि च्अभियान को

इस तरह से लागू किया गया कि इसे जनता से बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली। हेलमेट पाकर बाइक व स्कूटर सवार काफी खुश दिखे। वे जीवन की सुरक्षा के लिए हेलमेट पहनने के महत्व के प्रति अधिक जागरूक हो गए। पूरे अभियान में हमारा ध्यान जुर्माना लगाने पर नहीं बल्कि सड़क सुरक्षा जागरूकता पर था। युवाओं से हेलमेट का प्रयोग करने की विशेष अपील है। यह न केवल उनकी अपनी सुरक्षा के लिए है बल्कि उनके प्रियजनों के भविष्य के लिए भी है। एक की सुरक्षा अनेकों की सुरक्षा को प्रभावित करती है। सबके सहयोग से हम सबके लिए सुरक्षित सड़कें बनाएंगे। हम इस अभियान को सफल बनाने के लिए क्लियर प्रीमियम वाटर द्वारा प्रदान किए गए समर्थन के लिए आभारी हैं।

क्लियर प्रीमियम वाटर शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने और विभिन्न जनहित पहलों के माध्यम से समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए समर्पित है। यह सड़क सुरक्षा अभियान लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के ब्रांड के निरंतर प्रयासों का एक छोटा सा हिस्सा है।

# ऑस्ट्रेलियाई कांसुलेट पॉल मर्फी का गजेरा ग्लोबल स्कूल के विधार्थियों से मुलाकात

**सुरत भुमि, सूरत।** गजेरा ग्लोबल स्कूल ने ऑस्ट्रेलियाई कांसुलेट जनरल श्री पॉल मर्फी का स्वागत किया, जो गजेरा ट्रस्ट द्वारा आयोजित एक समृद्ध दौरे का हिस्सा थे। आगमन पर, श्री मर्फी ने गजेरा ग्लोबल स्कूल के छात्रों के साथ एक गतिशील बातचीत की, जिसमें उन्होंने वैश्विक शिक्षा और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों पर चर्चा की। उनके द्वारा विद्यालय का दौरा किया गया, जिसमें स्कूल के नवोन्मेषी शिक्षण प्रथाओं और आधुनिक अवसंरचना का प्रदर्शन किया गया।

इस दौरे का मुख्य आकर्षण एक इंटरैक्टिव सत्र था, छात्रों ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और ऑस्ट्रेलिया की वैश्विक शिक्षा में भूमिका के बारे में मूल्यवान जानकारी प्राप्त की। इस अवसर का समापन एक जीवंत पारंपरिक गरबा प्रदर्शन के साथ हुआ, जिसमें श्री मर्फी ने उत्साह के साथ, छात्रों के साथ भाग लिया, जो ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच सांस्कृतिक संबंधों और उत्साह का प्रतीक था।

यह आयोजन गजेरा ग्लोबल स्कूल के वैश्विक रूप से जागरूक व्यक्तियों को बनाने के दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है, जो सांस्कृतिक प्रशंसा और वैश्विक संबंधों पर जोर देता है। श्री पॉल मर्फी की यात्रा का सिलसिला लक्ष्मी डायमंड के दौरे के साथ आगे बढ़ा, जहां उन्होंने हीरे के तराशने की कुशल शिल्पकला और नवीन तकनीकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ हासिल कीं।

श्री मर्फी ने वात्सल्यधाम के विधार्थियों से सुखद मुलाकात की और वहां उन्होंने बच्चों के साथ हंसी-मजाक, कहानियाँ साझा कीं और उनके साथ उत्साह से समय बिताया।

# प्रीमियम प्लास्ट लिमिटेड 26 करोड़ रुपये का एनएसई-एसएमई आईपीओ लाएगी

**अहमदाबाद।**

भारत में प्लास्टिक इंजेक्शन और ब्लो मोल्ड घटकों की अग्रणी निर्माता, प्रीमियम प्लास्ट लिमिटेड ने रु। 26.20 करोड़ का IPO ला रही है. कंपनी रु. 26.20 करोड़ (ऊपरी सीमा पर) रुपये जुटाने के लिए। 10 53,46,000 इक्विटी शेयरों का अपना पहला बुक बिल्डिंग रूट आईपीओ ला रहा है। इश्यू का आकार मूल्य बैंड के ऊपरी छोर पर आधारित है। आवंटन के बाद, शेयरों को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (च्एनएसईज्) के इमर्ज प्लेटफॉर्म पर सूचीबद्ध किया जाएगा। आईपीओ का प्रबंधन पूरी तरह से खंडवाला सिक्योरिटीज लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है और बिगशेयर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड इश्यू का रजिस्ट्रार है। आसन स्टॉकब्रोकर प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के लिए बाजार निर्माता है।

नवंबर 1995 में मुंबई में प्रीमियम प्लास्ट की स्थापना के बाद से, वे दो घटकों के निर्माण से लेकर दो रणनीतिक स्थानों पर 600 से अधिक घटकों के निर्माण तक विकसित हुए हैं। प्रीमियम प्लास्ट लिमिटेड में, वे ऑटोमोटिव, औद्योगिक, इलेक्ट्रिकल और विशेष पैकेजिंग सहित विभिन्न उद्योगों के लिए विभिन्न प्रकार के प्लास्टिक घटकों और हिस्सों के निर्माण में विशेषज्ञ हैं।

प्रीमियम प्लास्ट लिमिटेड की यात्रा श्री चेतन दवे के दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से निर्देशित हुई है, जो जटिल प्लास्टिक घटकों के सफल विकास और विनिर्माण में 35 वर्षों का अमूल्य अनुभव लेकर आए हैं। उनके मार्गदर्शन में, प्रीमियम प्लास्ट लिमिटेड सटीकता, विश्वसनीयता और नवीनता का पर्याय बन गया है। प्रीमियम प्लास्ट लिमिटेड (पीपीएल, कंपनी) ऑटोमोटिव घटकों के अग्रणी टियर-1 आपूर्तिकर्ताओं में से एक है, जो वाणिज्यिक वाहन ओईएम को उच्च गुणवत्ता वाले प्लास्टिक भागों के डिजाइन, निर्माण और आपूर्ति में विशेषज्ञता रखती है।

प्रीमियम प्लास्ट लिमिटेड की विशेषज्ञता में उन्नत इंजेक्शन और ब्लो मोल्डिंग तकनीक का उपयोग करके निर्मित बाहरी, आंतरिक और हुड के नीचे के घटक शामिल हैं। ऑटोमोटिव पार्ट्स के अलावा, कंपनी प्लास्टिक औद्योगिक घटकों और पैकेजिंग समाधानों का भी निर्माण करती है, जो उद्योगों और अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला को पूरा करती है। कंपनी के पास इस बिजनेस में 29 साल का अनुभव है। प्रीमियम प्लास्ट लि. भारत में रणनीतिक रूप से स्थित तीन सुविधाओं के साथ, कंपनी की स्थापित क्षमता 1,975 मीट्रिक टन प्रति वर्ष है, जो कंपनी द्वारा निर्मित 600 से अधिक घटकों में विविध है।

# स्कोडाऑटो इंडिया ने नए युग की शुरुआत की, पेश किया बिल्कुल नया 'काइलैक'

स्कोडा ऑटोने इस साल फरवरी में कॉम्पैक्ट एसयूवी की घोषणा के साथ अपनी महत्वाकांक्षाओं का स्पष्ट संकेत दिया था। देशभर में हुए नामकरण अभियान के बाद इस नई एसयूवी कोकाइलैकनाम मिला। इसका ग्लोबल प्रीमियर 6 नवंबर 2024 को किया जाएगा।काइलैकके साथ, स्कोडा ऑटो इंडियाअपने ग्राहकों को अलग-अलग रेंज की गाड़ियों का विकल्प देने जा रही है, जिसमें कोडियाक जैसी लक्ज़री एसयूवी औरकुशाकजैसी मिड-साइज एसयूवी शामिल हैं, जो इंडिया 2.0 परियोजना के तहत लॉन्च की गई थी।भारत के तेजी से बढ़ते कार बाजार में लगभग 30त्न हिस्सेदारी पर कब्जा कर चुकी स्कोडा ऑटो, काइलैकको 4 मीटर से कम श्रेणी में लाएगी, जो कॉम्पैक्ट एसयूवी की श्रेणी में आती है। यह श्रेणी भारत में बेहद लोकप्रिय हो रही है।काइलैकअपने आधुनिक, बोल्ड और मजबूत डिज़ाइन, बेहतरीन ड्राइविंग अनुभव और सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने वाले फीचर्स के साथ कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में एक नई पहचान बनाएगी। स्कोडा ऑटो के लिए यह लॉन्च भारत में एक च्नए युगज् की शुरुआत को दर्शाती है, क्योंकि भारत यूरोप के बाहर स्कोडा के लिए सबसे महत्वपूर्ण बाजारों में से एक है।

स्कोडा ऑटो फॉक्सवैगन इंडियाके प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारीपीयूष अरोड़ाने कहा, "मुझे बेहद गर्व है कि मैंस्कोडा ऑटोकी पहली कॉम्पैक्ट एसयूवीकाइलैककको पेश कर रहा हूँ।काइलैकपूरी तरह से भारत में ही बनाया गया है, जिसमें स्थानीयता के उच्ची स्तरों को शामिल किया गया है। इससे हम 'मेक इन इंडिया' के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और भी मजबूत कर रहे हैं। यह एसयूवीस्कोडा ग्रुपके डीएनए के अनुसार आरामदायक ड्राइविंग, सुरक्षा और आराम का सही संयोजन प्रदान करती है। इसे खासतौर पर भारतीय उपभोक्ताओं की जरूरतों को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह एसयूवी भारतीय ग्राहकों को बेहद पसंद आएगी।काइलैककको भारत में और भारत के लिए डिज़ाइन किया गया है, और यह एकगेमचेंजरसाबित होगी।"

मॉडर्न, बोल्ड और मस्कुलर : काइलैकनए ग्राहकों को आकर्षित करेगी

काइलैककको भारतीय उपभोक्ताओं की बदलती उम्मीदों को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया गया है। इसमेंस्कोडाके ग्लोबल डिज़ाइन का उपयोग किया गया है, जो साफ-सुथरी और सरल लाइनों के साथ कार की मजबूती और गुणवत्ता को दर्शाता है। कार के चारों ओर लगे मजबूत फेंडर इसे और आकर्षक बनाते हैं। गाड़ी खड़ी हो या सड़क पर दौड़ रही हो, इसका लुक हर किसी को प्रभावित करेगा।

इसमेंहाई ग्राउंड क्लियरेंसदिया गया है, जिससे ऊबड़-खाबड़ और ऊंची-नीची सड़कों पर भी यह आसानी से चल सकेगी और गाड़ी का संतुलन बरकरार रहेगा। गाड़ी के पहियों के चारों ओर पर्याप्त जगह होगी, जो इसे और भी सक्षम बनाती है।काइलैकमें एसयूवी की सभी विशेषताएं शामिल होंगी, जैसे कि इसके सामने वाले हिस्से मेंस्कोडा एसयूवीकी पारंपरिक डिजाइन औरडीआरएल लाइट्सहोंगी, जो गाड़ी की खूबसूरती को और बढ़ाएंगी। इसके साइड और पीछे के हिस्से मेंहेक्सागोन पैटर्नहोगा, जो कार को एक खास और अनोखा लुक देगा, जिससे यह गाड़ी और भी आकर्षक नजर आएगी।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक: संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोन: 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)